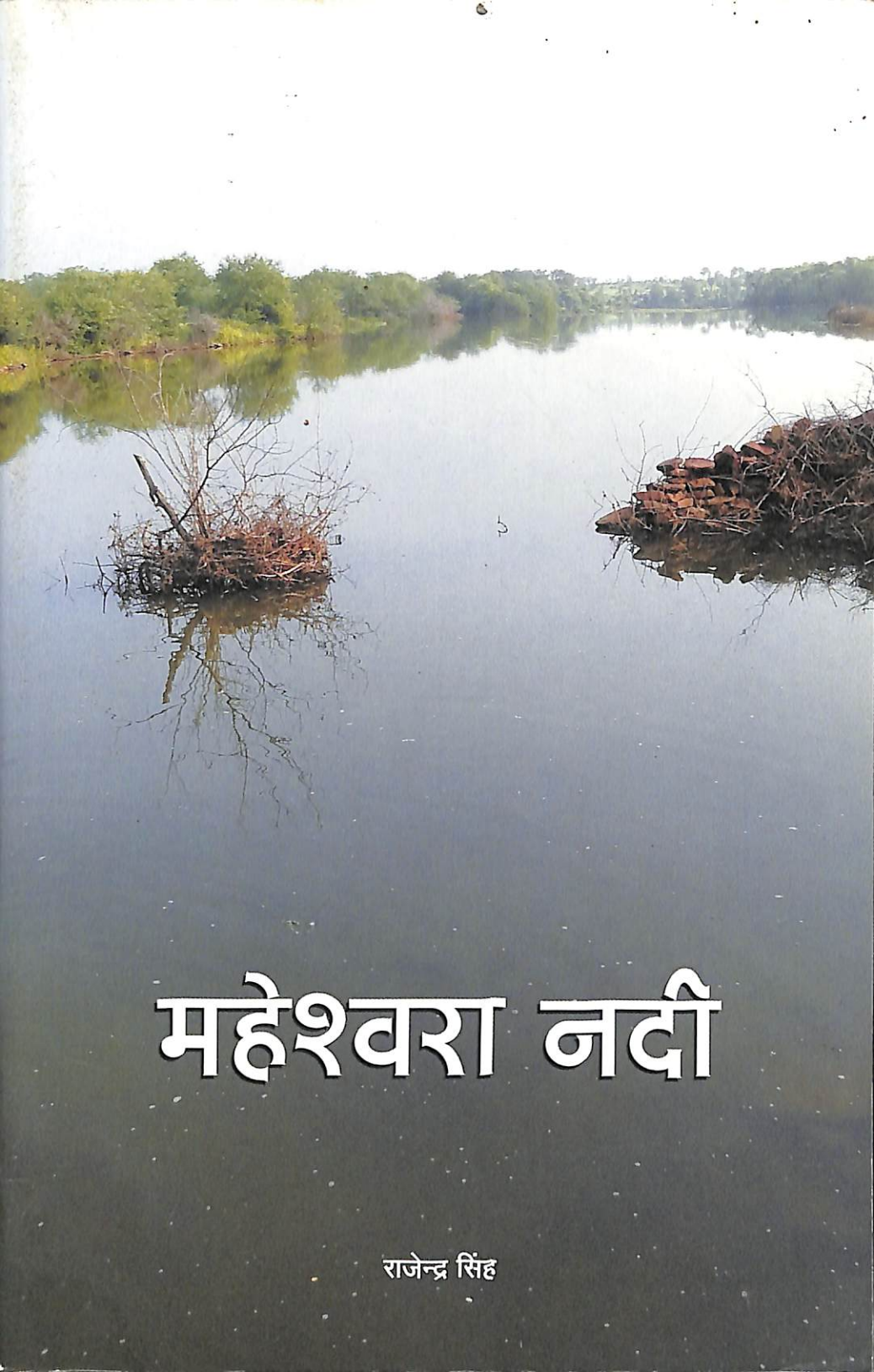

महेश्वरा नदी

राजेन्द्र सिंह

प्राकृतिक पञ्चशिवलिङ्ग (बाबा महेश्वरा)

छैण्ड वारा ताल (ग्राम-रायबेली)

महेश्वरा नदी

राजेन्द्र सिंह

तरुण भारत संघ
भीकमपुरा-किशोरी, थानागाजी, अलवर-301 022

प्रथम संस्करण : **मार्च, 2013**

लेखक : **राजेन्द्र सिंह**

सहयोग : **जगदीश गुर्जर, श्रवण शर्मा, चमन सिंह**
कर्ण सिंह, छोटे लाल मीणा, कन्हैया लाल गुर्जर
गोपाल सिंह

ग्राफिक्स : **राहुल शिशोदिया**

प्रकाशक : **तरुण भारत संघ,**
भीकमपुरा, किशोरी, थानागाजी
अलवर-301 022 (राजस्थान)
दूरभाष : 01465-225043

वितरक : **जल बिरादरी**
34/24, किरण पथ, मान सरोवर
जयपुर-302 020
दूरभाष : 0141-2393178

E-mail : watermantbs@yahoo.com
jalpurushtbs@gmail.com

मूल्य : **75.00 रुपये**

समर्पण

प्रमुख सर्वोदयी विचारक स्व. सिद्धराजजी ढड्ढा, जिनकी प्रेरणा से पानी के काम को बल मिला; डाँग क्षेत्र में जन-जागृति व जल-जागृति करने वाले जगदीश गुर्जर, श्रवण शर्मा, चमनसिंह व कर्ण सिंह तथा महेश्वरा नदी को सदा नीरा बनाने में अविस्मरणीय सहयोग देने वाले बाबा देवनारायण गुर्जर, राधेपुरीजी महाराज, कमल भगतजी, बिशन बाबा, कन्हैयालाल गुर्जर, बाबूली माई व विमला गुर्जर के साथ-साथ ऐसे अनाम हथियार-बन्दों को भी, जिन्होंने बन्दूक छोड़कर पानी के काम हेतु फावड़ा हाथ में ले लिया; उन सब जल-प्रेमियों को सादर समर्पित। ❑

आमुख

यह पुस्तक डाँग क्षेत्र में बसे हुए लोगों के साझा श्रम, परम्परागत ज्ञान व पानी के काम के प्रति उनकी निष्ठा के द्वारा पुनर्जीवित की गई 'महेश्वरा नदी' की कहानी है। इसको लिखने के पीछे मुख्य उद्देश्य यह है कि आज की नई पीढ़ी को यहाँ के समाज द्वारा पानी के लिए किये गये कार्यों से कुछ प्रेरणा मिल सके। इससे प्रेरणा लेकर नई पीढ़ी पानी के काम की इस प्रक्रिया को खुद भी समझे और अन्य लोगों को भी समझाए ।

यह पुस्तक एक तरफ तो यहाँ के उजड़े, बिखरे, लाचार, बेकार और बीमार समाज के दुःख को दर्शाती है; दूसरी तरफ इस दुःख का अहसास होने के बाद समाज को 'अपना हाथ जगन्नाथ' बनाने की प्रेरणा भी देती है। 'अपना हाथ जगन्नाथ' बन जाने पर समाज अपने ऊपर आये हर तरह के संकटों का समाधान स्वयं खोजने में सफलता हासिल कर लेता है।

ऐसी ही सफलताओं की कहानी को मैंने सीधी, सरल व संक्षिप्त भाषा में लिखकर इस पुस्तक के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। इसमें वैसे तो सम्पूर्ण भारत के समाज में जल संरक्षण हेतु संवेदना जगाने की सच्ची कहानी है; पर साथ ही इसमें उन लोगों के भी कुछ कड़ुवे-मीठे अनुभव हैं, जिन्होंने बेबसी में भूखों मरते हुए समाधान खोजने की उम्मीद में बन्दूकें तक उठा ली थीं। लेकिन जब उन्हें बन्दूकें उठाने के बाद भी भूख मिटाने का समुचित समाधान नहीं मिला तो उन्होंने पानी के काम के द्वारा अन्ततः समाधान खोज ही लिया। पानी के

काम के लिए उन्होंने स्वयं फावड़ा उठाया और फावड़े की मेहनत द्वारा, खुद अपनी भी भूख मिटाई और दूसरे लोगों की भी भूख मिटाई । इस पुस्तक में प्रकृति के क्रोध से त्रस्त समाज की संवेदना जगा कर उनको 'अपना हाथ जगन्नाथ' बनाने की दास्तान है ।

यह पुस्तक पानी के काम को प्यार करने वाले समाज के जागरूक लोगों को साथ लेकर पानी के काम हेतु इस क्षेत्र में तन–मन से अलख जगाने वाले पं. श्रवण शर्मा, जगदीश गुर्जर, व चमन सिंह को सस्नेह समर्पित है । इन तीन मूर्तियों ने डाँग क्षेत्र में अपने समर्पित साथियों कर्ण सिंह आदि एवं समाज के सक्रिय व निस्वार्थ ग्राम वासियों के सहयोग से बड़ा क्रान्तिकारी काम किया है । यह पुस्तक उन सभी जल योद्धाओं और जल प्रेमियों को सादर समर्पित है ।

राजेन्द्र सिंह
तरुण भारत संघ, भीकमपुरा
थानाग़ाज़ी, अलवर, (राजस्थान)

महेश्वरा नदी की कहानी

भौगोलिक परिचय

महेश्वरा नदी का उद्‌गम राजस्थान के करौली जिले की सपोटरा तहसील के गाँव खिजूरा तथा खिजूरा से लगभग 5 किलोमीटर दक्षिण में बसे गाँव बन्धन का पुरा से प्रारम्भ होता है। खिजूरा गाँव 'कैला देवी' से 18 किलोमीटर दक्षिण में कैला देवी से करणपुर जाने वाले रोड़ पर स्थित है।

उद्‌गम-स्थल बन्धन का पुरा से खिजूरा तक महेश्वरा नदी की प्रारम्भिक धारा को 'धोबी वाली सोत' के नाम से भी जाना जाता है। आगे खिजूरा गाँव से चार किलोमीटर पूर्व में 'मेहश्वरा बाबा' का एक प्राचीन पंच-शिवलिंग है। यहाँ पर नदी की धारा एकदम 25-30 हाथ नीचे गिरती है। 'महेश्वरा बाबा' का स्थान होने के कारण ही यहाँ से इस नदी का नाम 'महेश्वरा नदी' पड़ जाता है।

महेश्वरा बाबा से आधा-एक किलोमीटर उत्तर-पूर्व चलने पर इसमें एक धारा रायबेली की तरफ से आकर मिल जाती है। यहाँ से थोड़ा ही आगे जाने पर इस नदी में राहर गाँव के उत्तर-पश्चिम की पहाड़ियों का पानी भी आकर मिल जाता है। इस संगम से डेढ़-दो किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में एक और धारा इसमें आकर मिलती है; जो एक तरफ आमरेकी, गसिंहपुरा, बनीजरा, बरोदे का पुरा (बीच का पुरा) और राहर आदि गावों के पानी को लेकर आती है, दूसरी तरफ पाटोर घाटिया के पश्चिमोत्तर भाग के पानी को तथा दयारामपुर के पानी को लाती है। फिर इस संगम से ढाई किलोमीटर दक्षिण में चलने के बाद महेश्वरा नदी की मुख्य धारा में एक और उपधारा; जो डागरिया, आसा की गुवाड़ी व बीरम की गुवाड़ी की तरफ से आती है, आकर मिल जाती है। इससे थोड़ी ही दूरी पर 'मंदिर त्रिलोग सिंह' के उत्तरी भाग का पानी भी आकर मुख्य धारा में मिल जाता है। यहाँ से एक-डेढ़ किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में एक धारा मंदिर त्रिलोगसिंह के पूर्वी भाग से आकर मिलती है। इस जगह से दो किलोमीटर आगे एक

धारा उत्तर की तरफ से आकर मिलती है । यहाँ पर महेश्वरा नदी को 'मेरवाली सोत' के नाम से भी जानते है । गदरेठा और बमुर खेरा के पास इस धारा को 'धनिया सोत' भी कहते हैं । बमुर खेरा के दक्षिण में इस धारा में निभैरा की तरफ से आने वाली 'निभैरा-खो' नाम की धारा भी आकर मिल जाती है; लेकिन मुख्य रूप से ये सभी धाराएँ 'महेश्वरा नदी' के नाम से ही जानी जाती हैं । आगे टोडा के पास जाकर 'महेश्वरा नदी' 'चम्बल नदी' में जाकर मिल जाती है । चम्बल नदी यमुना में, यमुना गंगा में तथा गंगा नदी अन्त में गंगा-सागर में मिल कर सागर स्वरूप हो जाती है । 'चम्बल नदी' का नाम पुराणों में 'चर्मण्यवती' मिलता है। माना जाता है कि राजा रन्ति देव द्वारा इस नदी के किनारे पर, पशु-यज्ञ में दी गई पशु-बलि से प्राप्त चर्म का ढेर लग गया था, इसीलिए इसका नाम चर्मण्यवती पड़ा । कालान्तर में इसी का नाम चम्बल हो गया ।

विश्व-भू-मानचित्र में 'महेश्वरा नदी' क्षेत्र 26° 10' 34" उत्तरी अक्षांश से 26° 18' 34" उत्तरी अक्षांश तथा 76° 54' 05" पूर्वी देशान्तर से 77° 02' 00" पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है । 'महेश्वरा नदी' का जलागम क्षेत्र 102 वर्ग किलोमीटर है तथा उद्गम में राहर के पास इस की सर्वोच्च ऊँचाई समुद्र तल से 423 मीटर ऊपर तथा संगम-स्थल पर इसकी ऊँचाई समुद्र-तल से 157 मीटर ऊपर है । इसके जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा प्रारम्भ से मार्च 2013 तक जन-सहभागिता से कुल 107 जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण हुआ है । महेश्वरा नदी की घुमाव सहित कुल लम्बाई 27 किलोमीटर है ।

डाँग के पानी की कहानी

'महेश्वरा नदी' राजस्थान की उन सात नदियों में से एक है; जिन्हें समाज के साझे श्रम ने पुनर्जीवित कर सदानीरा बनाया। लेकिन अगर आप यहाँ के सिंचाई विभाग के किसी सरकारी अधिकारी, इंजीनियर अथवा जिला कलैक्टर तक से भी पूछेंगे तो वह आपको 'महेश्वरा नदी' के बारे में कुछ भी नहीं बता सकेगा; कारण कि इस इलाके के किसी भी सरकारी नक्शे में महेश्वरा नाम की कोई नदी दर्ज ही नहीं है । लेकिन सपोटरा की डाँग में बसने वाला हर बाशिन्दा आपको 'महेश्वरा नदी' के बारे में तथा इसके पुनः लौटे जीवन के बारे में सहर्ष विस्तृत जानकारी दे देगा । क्योंकि प्राकृतिक रूप से बने यहाँ के 'पञ्च-शिवलिंग' को, यहाँ के लोग सदियों से एक तीर्थ के रूप में पूजते आ रहे हैं । फिर आज जब उसी स्थान पर वे अपने ही साझे श्रम से पुनर्जीवित हुई निर्मल नदी को देखते हैं तो उसे कैसे भूल सकते हैं ?

महेश्वरा नदी की कहानी खिजूरा गाँव से शुरू होती है । पानी के काम से पूर्व यहाँ के लोग पानी के अभाव में गाँव छोड़-छोड़ कर बाहर जाने को मजबूर हो गये थे । गाँव बेपानी हो कर उजड़ता जा रहा था । गाँव में बचे हुए लोगों ने भी पानी के अभाव में खेती करना छोड़ दिया था । उन पर दोहरी मार थी- एक तरफ जहाँ उन्हें लाचारी, बेकारी और बीमारी से दो-चार होना पड़ रहा था; वहीं दूसरी तरफ जंगलात विभाग की मार तथा डण्डे भी उन्हें खाने पड़ते थे । रोटी के बदले डण्डे खाना उनकी नियति थी ।

उन्हीं दिनों मैं, जब पहली बार उस गाँव में गया तो रात को गाँव में ही रुका । वहाँ पर लोगों से बात करने पर तथा प्रत्यक्ष भी लोगों के रूखे चेहरे और सूखे खेत देख कर, एक दुःखद अहसास हुआ। अन्न व जल की अपर्याप्त

उपलब्धि में भी जैसे-तैसे वे अपने आप को ज़िन्दा रखे हुए थे । ज़िन्दा रह पाने का आधार शायद वहाँ पर दिखाई दे रही मरियल-सी गायें व कमजोर-सी बकरियाँ ही रही होंगी ।

डाँग में चारों तरफ नंगे पहाड़ व नंगी धरती देख कर ऐसा लगता था, जैसे धरती को बुखार चढ़ रहा हो । बुखार के कारण जब धरती माँ स्वयं बीमार हो जाय तो वहाँ वनस्पती व घास कैसे उग सकती है ? इसलिए हरियाली भी वहाँ नहीं बची थी । लोगों में हताशा व निराशा छा गई थी । उन्हें वहाँ कोई भी अपना हितैषी नहीं दिखाई दे रहा था । इंसान को जब कोई अपना दिखाई नहीं देता, तब वह दूसरों से जिस प्रकार का व्यवहार करता है, वैसा ही व्यवहार वे हमसे भी कर रहे थे । यह व्यवहार यहाँ के लोगों की सादगी, सरलता व सहजता के बीच दूरियाँ और द्वन्द्व पैदा करता था । ऐसी निराशा में भी इन्हें जीने की आशा तो थी; लेकिन यहाँ की वीरान व बेपानी ज़मीन किसी का भी पेट पालने में सक्षम नहीं थी । लोगों को अपना पेट पालने के लिए पलायन कर के बाहर जाना ही पड़ता था । कुछ लोग जो यहाँ बचे हुए थे, वे भी शरीर व मन से बीमार ही थे । नंगी धरती, नंगे पहाड़ व खुश्क पत्थरों से टक्कर लेने वाले ये बहादुर लोग कुपोषण का शिकार हो गये थे ।

पानी की बेहद कमी देखकर मैंने जब गाँव के लोगों को कहा कि आप और हम लोग मिलकर सामूहिक श्रम से गाँव में पीने व जीने के लिए पानी लाने का काम कर सकते हैं; तो किसी को भी मेरी बात पर भरोसा नहीं हुआ। पर जब मैंने कुरेद-कुरेद कर लोगों से उनके मन की पीड़ा जानने की कोशिश की, तो वहाँ के देवनारायण बाबा, रूप सिंह सरपंच व अन्य लोगों ने कहा- "साहब ! हमारे गाँव में पानी की बड़ी विकट समस्या है । यहाँ यदि एक अच्छा-सा बाँध बन जाय तो हमारा गाँव फिर से हरा-भरा व खुशहाल हो सकता है ।" उनकी बात सुन कर मुझे निराशा के बीच भी एक आशा की किरण दिखाई दी । मैंने उनसे कहा कि आप गाँव के सभी स्त्री-पुरुषों को बुला लाओ, तब हम गाँव में पानी की स्थायी व्यवस्था करने के बारे में विचार-विमर्श करेंगे । रूपसिंह ने कहा कि महिलाएँ तो यहाँ आ नहीं सकतीं, पर पुरुषों को मैं अभी बुला कर

लाता हूँ । यह कहते हुए वह बड़े ही उत्साह से उठा और घर-घर जा कर केवल सात मिनट में सब लोगों को बुला कर ले आया । लगभग 15 बुजुर्गों व दो-तीन नौजवानों की उस छोटी-सी बैठक में मैंने उन्हें लोगों की सहभागिता से अलवर जिले में किये गये जल-संरक्षण कार्यों का हवाला दिया । मैंने अपना भी परिचय देते हुए बताया कि हमारी संस्था (तरुण भारत संघ) ने अलवर जिले के सैकड़ों बेपानी गाँवों को पानीदार बनाया है । इस काम में एक तिहाई काम तो लोगों ने स्वयं अपने श्रमदान से पूरा किया है; बाक़ी दो-तिहाई काम के बदले संस्था ने केवल उनके खाने भर के अनाज का ही कुछ प्रबन्ध किया है । मैंने उन्हें बताया कि हम आपके गाँव में भी खाने-पीने का कुछ इन्तज़ाम कर सकते हैं, पर पानी के लिए काम, आपको ही करना पड़ेगा । सीधे-सादे और सरल स्वभाव के इन लोगों ने सहजता से कहा कि जब हमें खाने को ही मिल जायेगा तो हम पानी प्रबन्धन का काम क्यों नहीं करेंगे ?

मुझे यह लिखते हुए बड़ा ही सुखद अनुभव हो रहा है कि उस दिन की हमारी इस सीधी-सी बातचीत ने सचमुच इस गाँव की कायापलट ही कर दी । गाँव के सभी स्त्री-पुरुष व लड़के-लड़कियाँ बड़े उत्साह से पानी के काम में जुट गये । उन्हें काम पर लगा कर मैं आसपास के अन्य गाँवों में भी गया । वहाँ भी काम की पूरी जानकारी मिल जाने के बाद लोगों ने पानी के कई काम शुरू किये । पानी के काम पूरे होने के बाद जब पहली बार पोखरों व पगारों में पानी

भरा तो 'महेश्वरा नदी' अपने उद्गम स्थलों से लेकर नीचे की तरफ के क्षेत्र तक सदानीरा हो कर बहने लगी । काम से पूर्व मुझे सपने में भी यह आशा नहीं थी कि 'महेश्वरा नदी' फिर से बहने लग जायेगी, पर अब इसे बहते हुए देख कर मन खुशी से बाग़-बाग़ हो जाता है ।

यद्यपि 'महेश्वरा' नदी के जलागम क्षेत्र में हम ने पानी का काम 1999 में ही शुरू कर दिया था, फिर भी इस क्षेत्र में पानी के काम की काफ़ी साइटें छूट रही थीं । इन खाली जगहों व गैप्स को हमने 2011-12 के वर्ष में पूरा कर दिया । इस वर्ष लगभग 20-22 जल संरक्षण संरचनाएँ इस क्षेत्र में बनीं। इसका परिणाम यह हुआ कि 'महेश्वरा नदी' अब ऊपर के हिस्से में भी जलमय हो गई है ।

नदी में जब से पानी बहना शुरू हुआ, तभी से यहाँ के लोगों के तन, मन और आँखों में भी पानी आ गया है । यहाँ के बेपानी लोग अब पानीदार बन गये। अब इस इलाके में सदाचारीय सत्कर्म पुन: प्रतिष्ठित हो गया है; जो कि बीच के दौर में हताशा के कारण डगमगा गया था । अब यहाँ के पानी के कामों को देख-देख कर गाँव के सब लोग आनन्दित होते हैं ।

लोगों को लगता है कि वे अब सदैव पानीदार बने रहेंगे । इसी आशा व विश्वास के साथ इन्होंने अब अपने खेतों की मिट्टी का कटान रोक कर मिट्टी की नमी व वर्षा-जल को सहेजने का काम तथा उसमें सजीव खेती करने का अभिक्रम शुरू कर दिया है । 'महेश्वरा नदी' में जल आ जाने के साथ-साथ लोगों के लिए धन-धान्य; गाय-भैंसों के लिए चारा और महिलाओं के हाथ में पैसा; यह सब आने लगा है । पहले महिलाएँ पानी, ईंधन व चारा लाने में ही दिन-रात लगी रहती थीं; पर अब तो गाँव में ही पीने का पानी, अपने ही खेतों से ईंधन तथा गाँव के ही जंगल से चारे की पूर्ति होने लगी है । गाँव के लड़के और लड़कियाँ अब निश्चिन्त हो कर स्कूल जाने लगे हैं और पढ़ने में रुचि भी लेने लगे हैं । मरम्दा गाँव की स्कूल के बच्चे अपने स्कूल में व्यायाम करते हुए कितने खुश नज़र आ रहे हैं ।

एक ज़माना था जब डाँग के गाँवों में नीचे के गाँवों के लोग अपनी लड़की देना पसन्द नहीं करते थे; लेकिन आज इस गाँव का कोई भी बालिग़ लड़का कुँआरा नहीं है। महिलाओं को भी पहले अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में ही अपना पूरा समय लगाना पड़ता था; पर पानी हो जाने से अब उन महिलाओं का समय गाँव की साझी भलाई के कामों में भी लगने लगा है। वे अब गाँव के प्राकृतिक संसाधनों को बचाने की चर्चा के साथ-साथ सब की भलाई की बातचीत करने में भी समय देने लगी हैं। अब यहाँ की औरतें, पुरुषों से ज्यादा सशक्त और समझदार हो गई हैं। वे अब पुरुषों से अधिक, सत्कार व सम्मान भी पाने लगी हैं। अब इस क्षेत्र में 'नदी, नीर व नारी' का सम्बन्ध और अधिक प्रगाढ़ हुआ है। इनका पारस्परिक सम्बन्ध और सम्मान सब को एक अद्‌भुत आनन्द का अहसास कराता है। इस क्षेत्र का जल-बोध, जो बीच के दौर में धूमिल हो गया था, अब पुनः स्मृत हो जाने से, इस क्षेत्र को पानीदार बनाने में सफल हुआ है। अब यहाँ के श्रमनिष्ठ समाज ने खेती, पशु-पालन व जल-जंगल-जमीन के संरक्षण से अपने आपको सुखी और समृद्ध बना लिया है। इस काम से सभी को सीख लेनी चाहिये। आज जरूरत है कि भारत सरकार व राज्य सरकारों के इंजीनियर इस क्षेत्र में आ-आकर यहाँ के लोगों की श्रम-शक्ति से हुए कार्यों को देखें और देख कर 'मनरेगा' जैसे कानून के तहत दूसरी नदियों को भी इसी तरह से पुनर्जीवित करने में जी-जान से जुटें।

'महेश्वरा नदी' पर बनाये गये जोहड़, बाँध, ताल, पोखरे व पगारे पहले तो वर्षा-जल से धरती का पेट भरते हैं और फिर झरने के रूप में अनवरत बहते रहते हैं। फिर वे ही बहते हुए झरने खेतों में अच्छी फ़सल पैदा करने का सबब भी बनते हैं। वर्षा-जल को रोक कर धरती के पेट में डाल देने से सूरज उसकी चोरी नहीं कर पाता। महेश्वरा नदी जलागम क्षेत्र के लोगों को धरती के पेट का अच्छा ज्ञान है; इसीलिए तो वे धरती के पेट की अन्दरूनी धाराओं को समझ कर पानी-प्रबन्धन का कार्य अच्छा कर लेते हैं। यहाँ के काम की यही विशेषता है कि यहाँ के लोगों ने वर्षा-जल को उड़ने से बचा कर अधो भू-जल के पुनर्भरण का अच्छा काम किया है। वर्षा-जल से धरती का पेट भर जाने पर वही जल, अब स्वयमेव धरती के ऊपर आकर अनवरत बहने लगा है। इसीलिए तो यह नदी अब पुनः शुद्ध और सदानीरा बन कर बहने लगी है और कुओं का जल-स्तर भी ऊपर आ गया है।

'महेश्वरा नदी' को सदानीरा बनाने का काम यहाँ के समाज के सदाचार और श्रम से ही सम्भव हो सका है। यह एक अद्‌भुत काम है; जिसे यहाँ के लोगों ने सहजता, सरलता व श्रमनिष्ठा के भाव से निर्विघ्न सम्पन्न किया है। उम्मीद है कि 'महेश्वरा नदी' के इस सामाजिक साझे श्रम के अभिक्रम को देख कर अब दूसरे क्षेत्र के लोग भी इससे अच्छी सीख ले सकेंगे।

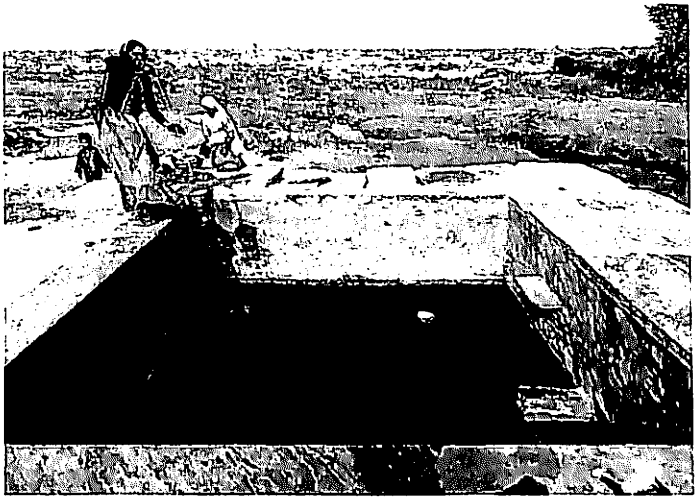

पानी से धानी तक का सफर

परम्परा से मिला रास्ता

डाँग में पानी कैसे आया ? 'महेश्वरा नदी' का पुनर्जन्म कैसे हुआ ? डाँग के लोगों के चेहरे पर रौनक कैसे आई ? यह सब जानने के लिए हमें थोड़ा इस काम की पृष्ठभूमि में जाना होगा। पानी के काम का प्रारम्भ तरुण भारत संघ ने सर्व प्रथम वर्ष 1985-86 ई. में अलवर जिले की तहसील थानाग़ाज़ी के गाँव गोपालपुरा से शुरू किया था। और सुखद आश्चर्य की

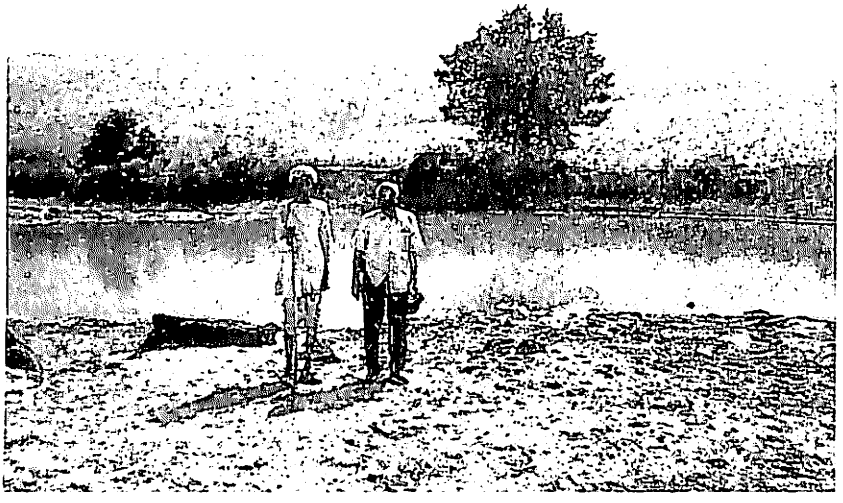

बात है कि पानी को संरक्षित करने की प्रेरणा भी हमें गोपालपुरा गाँव के ही एक अनुभवी बुजुर्ग माँगू पटेल से ही मिली थी। माँगू पटेल की प्रेरणा से, सबसे पहले इस गाँव में चबूतरे वाली जोहड़ी का काम शुरू हुआ था। इसके बाद तो तरुण भारत संघ व स्थानीय लोगों के सहयोग से इस गाँव में भी और आसपास के अन्य गाँवों में भी पानी का काम- जोहड़, बाँध, मेड़बन्दियों व टाँकों आदि के रूप में जगह-जगह फैलता ही चला गया।

इसी दौरान नब्बे के दशक के प्रारम्भ में सवाई माधोपुर जिले की बामनवास तहसील के कोचर (अमावरा) गाँव का सरपंच रामचन्द्र पोसवाल अपने जाति-भाई, बलुवास (अलवर) गाँव के मुरली गुर्जर को साथ लेकर, तरुण भारत संघ

कार्यालय में मेरे पास आया । उसने शायद कहीं से सुन लिया होगा कि तरुण भारत संघ पानी के काम में लोगों की मदद करता है । उसने मुझसे अपने क्षेत्र (कोचर की डाँग) में पानी के काम हेतु मदद करने के लिए आग्रह किया । मैंने कहा कि हम तो सहयोग में तुम्हारे साथ हैं, पर तुम अपनी तैयारी बताओ । उसने पलट कर नेताओं का-सा जवाब दिया कि काम तो मैं ही सारा करवा दूँगा, आप तो अपने हिस्से का पैसा हमें दे दो । मैंने उसे समझाया कि हम लोग पैसा देने वाले नहीं हैं; हम तो लोगों से सीधी बातचीत कर के उन से ही सारा काम करवाते हैं । संस्था की तरफ से तो हम जो कुछ थोड़ी बहुत मदद बन पाती है, वही करते हैं ।

पूरी बात समझ कर अन्त में उसने सहमत होते हुए कहा कि ठीक है, आप जैसे भी करेंगे, हम गाँव की तरफ से आवश्यक सहयोग करने के लिए तैयार हैं । मैंने तुरन्त संस्था के अनुभवी कार्यकर्ता पं. श्रवण शर्मा को उसके साथ वस्तुस्थिति की जानकारी लेने हेतु भेज दिया । 8-9 दिन के भ्रमण के बाद वापस आकर श्रवण शर्मा ने मुझे बताया कि पहाड़ी के ऊपर बसे कोचर गाँव तथा कोचर की डाँग के अन्य सभी गाँव; बरसात के कुछ दिनों बाद, जब जोहड़ों में पानी सूख जाता है, तब नीचे के गाँवों में शरण लेने के लिए चले जाते हैं । केवल वर्षा के दिनों में ही वे ऊपर के गाँवों में रहते हैं अथवा जीवट वाले कुछ लोग दो-तीन किलोमीटर नीचे के गाँवों से ऊपर पहाड़ पर पीने का पानी ले जा कर भी किसी तरह से जीवन यापन कर लेते हैं ।

कोचर की डाँग में पानी का काम

कुछ समय बाद पहली ही बरसात में मैं श्रवण शर्मा को साथ ले कर कोचर की डाँग के सातोलाई गाँव में पहुँच गया । 7-8 दिन के भ्रमण व लोगों के सम्पर्क के बाद मैंने वहाँ पर लोगों के सहयोग से पानी का काम करने का निश्चय कर लिया और श्रवण शर्मा को काम शुरू करवाने के लिए कह कर वापस आ गया । श्रवण शर्मा ने लोगों से सम्पर्क साध कर लोगों के सहयोग से कोचर की डाँग में तथा नीचे के गाँवों में काफ़ी-सारे काम करवा दिये । इन सब कामों में अमावरा गाँव के श्रवण गुर्जर और मूलचन्द गुर्जर का विशेष सहयोग रहा ।

मूलचन्द गुर्जर तो श्रवण शर्मा के साथ पैदल चल कर कोचर की डाँग में पहाड़ के ऊपर भी टाँके व जोहड़–बाँधों की तैयारी के लिए जाते थे। इन सब के संयुक्त प्रयास से ही इस क्षेत्र में पानी के इतने सारे अच्छे काम हो सके; जिनसे डाँग क्षेत्र में पीने का पानी उपलब्ध हुआ और नीचे के गाँवों में तो पीने के पानी के अलावा कुओं का जलस्तर भी ऊपर आया। फलस्वरूप फसल की पैदावार अच्छी होने लगी।

जिस काम को श्रवण शर्मा ने शुरू किया, उसे आगे बढ़ाने का काम किया चमन सिंह ने। चमन सिंह ने अमावरा के मूलचन्द गुर्जर के बेटे कर्ण सिंह गुर्जर के साथ लेकर पानी के काम को और अधिक विस्तार दिया। इस प्रकार सवाई माधोपुर जिले के एक विस्तृत क्षेत्र में पानी के काम की मुहिम फैलती ही चली गई।

सपोटरा की डाँग में काम की शुरूआत

उन दिनों वर्तमान करौली जिला भी सवाई माधोपुर जिले में ही आता था। बाद में 19 जुलाई 1997 को राजस्थान सरकार द्वारा करौली को एक स्वतन्त्र जिले का दर्जा दे दिया गया। करौली जिले में पूर्व रियासत करौली के साथ पूर्व रियासत जयपुर की गंगापुर निज़ामत के कुछ गाँव तथा हिण्डोन निज़ामत को भी मिला लिया गया। वर्तमान करौली जिले की सपोटरा तहसील का अधिकांश भाग डाँग क्षेत्र में आता है। डाँग क्षेत्र में वर्ष 1999 से पूर्व पानी के कामों की शुरूआत नहीं हुई थी। तब तक वहाँ पर संस्था के किसी कार्यकर्ता का आना-जाना भी ज्यादा नहीं हुआ था। इस क्षेत्र को 'हथियारबन्द' लोगों का क्षेत्र माना जाता था, इसलिए बाहर के लोग वहाँ जाने से प्रायः बचते ही थे।

संयोग से उन्हीं दिनों अलवर जिले के भाँवता गाँव का एक नौजवान छोटेलाल गुर्जर, रोजगार की तलाश में इस क्षेत्र में पहुँच गया था। उसने वहाँ पहले तो कुछ मेहनत-मजदूरी की, फिर सपोटरा के डाँग क्षेत्र में बच्चों को पढ़ाने का काम करने लगा। पर किसी कारणवश कुछ समय बाद ही वह अपने गाँव वापस लौट आया। उसने डाँग क्षेत्र में पानी की कमी के कारण हो रहे पलायन व लोगों की पीड़ा को अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखा था। अतः गाँव में लौट कर आने के बाद भी उसके ज़ेहन से डाँग का दर्द और तकलीफ़ पूरी तरह से निकले नहीं थे। वह एक संवेदनशील व विचारवान् व्यक्ति था। उसने अपने मन में डाँग वासियों की समस्याओं को सुलझाने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

छोटेलाल का सम्पर्क तरुण भारत संघ से पहले से ही था। उसने यहाँ आकर मुझे, डाँग का दर्द व वहाँ की परिस्थितियों का बयान किया। मैंने उसकी बात सुन कर उसके साथ गोवर्धन शर्मा व अमावरा के एक नौजवान कर्ण सिंह को पानी के काम हेतु सपोटरा की डाँग में भेज दिया। इनका शुरूआती ठिकाना 'कुर का मठ' 'मोरोची' और 'हटियाकी' गाँव बने। कुर का मठ के राधे पुरी जी

महाराज ने प्रारम्भ में कर्ण सिंह व अन्य साथियों को काफ़ी मदद की। कुर का मठ के पास रहने वाले प्रभु गुर्जर ने भी उनको शरण दी। लेकिन असलियत में काम की शुरूआत करवाने वाले तो हटियाकी गाँव के कमल 'भगत जी' थे। संयोग से एक बार कमल भगत जी को ये तीनों साथी कैला देवी से करणपुर जाने वाले रोड़ पर मिल गये। परिचय के पश्चात् भगत जी ने उनको अपने घर आने के लिए आमन्त्रित किया। बाद में वे तीनों साथी भगत जी के घर गये और उन्हें विस्तार से संस्था के उद्देश्य समझाए। बात समझ में आयी भगत जी ने अपने गाँव में पानी का काम शुरू कर दिया। 'भगत जी' ने अपने गाँव में पानी के भी काम किये और बच्चों के लिये संस्था की मदद से स्कूल का भवन भी बनवाया; जिससे बालक-बालिकाओं को अपने ही गाँव में शिक्षा मिलने लगी।

कुछ दिनों बाद श्रवण शर्मा और जगदीश गुर्जर भी इस क्षेत्र में जन-संगठन व जल-संरक्षण के काम हेतु चले गये। इनके बाद तो रामसिंह, छाजूराम, माँगीलाल, समय सिंह, हरभजन, राधाकिशन व जगदीश सिंह आदि कार्यकर्ता भी यहाँ पर आकर पानी के काम में जी-जान से जुट गये। गाँव के लोगों के सहयोग से इस क्षेत्र में पानी का काम होता रहा। पानी का काम अच्छा काम था, इसलिए लोग भी पानी के काम से खुश थे। लेकिन कुछ लोगों के दिमाग़ के किसी कोने में एक शंका भरा प्रश्न भी था, कि संस्था यह काम किसी स्वार्थ से तो नहीं कर रही है ? क्या आज के जमाने में निस्वार्थ भाव से काम करने वाला कोई है ? जवाब किसी के पास भी नहीं था। सामान्य किसान इन सब शंकाओं से परे पानी के काम में लगे रहे, लेकिन शंकालु लोगों की शंकाओं के कारण काम में शिथिलता आती जा रही थी। संयोग से इसी दौरान जयपुर जिले के नीमी गाँव के लोगों ने अपने गाँव में किये जा रहे एक विशाल जल-सम्मेलन में खिजूरा के लोगों को भी आमन्त्रित किया। इस सम्मेलन ने उनकी समस्त शंकाओं को दूर करते हुए, उन्हें प्रेरणा की एक नई दिशा प्रदान कर दी।

'नीमी' बना प्रेरणा-स्रोत

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2001 में डाँग क्षेत्र के 50-55 लोगों को तरुण भारत संघ द्वारा आयोजित 'नीमी' गाँव (जिला-जयपुर) के एक विशाल जल-सम्मेलन में जाने का मौक़ा मिल गया। नीमी जाने वालों में डाँग क्षेत्र के वीरमकी गाँव का अंगद गुर्जर व खिजूरा गाँव का कल्याण गुर्जर भी शामिल थे। सम्मेलन में हुई बातचीत से उन्हें विश्वास हो गया था कि संस्था का काम पूर्ण पारदर्शिता और ईमानदारी से होता है। इसलिए सम्मेलन में उन्होंने एक बात अपने पल्ले गाँठ बाँध ली कि अब हमें भी अपने गाँव में जाकर लोगों के मन में बैठी भ्रान्तियों को दूर करना चाहिये और संगठित हो कर मेहनत व ईमानदारी से पानी के काम में जुट जाना चाहिये। अपने गाँव खजूरा में जा कर कल्याण गुर्जर ने जब गाँव के लोगों को सम्मेलन में देखी-सुनी बातों की कहानी सुनाई तो एक बारगी लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ; पर उन्होंने जब नीमी जा कर आने वाले अन्य लोगों से भी वही बात सुनी, तो उन्हें विश्वास हो गया। फिर तो वे बारिश के पानी को बचाने के काम में मेहनत, लगन और ईमानदारी से पूरी तरह से जुट गये।

अगले दो वर्ष तरुण भारत संघ ने समुदाय के साथ मिल कर सपोटरा के डाँग क्षेत्र के लगभग 30-35 गाँवों में पानी का काम किया। इनमें से 10-11 गाँवों में तो बहुत ही सघन काम हुआ, जिनमें महेश्वरा क्षेत्र के खिजूरा, वीरमकी, बन्धन का पुरा, दयारामपुरा और रायबेली आदि गाँव तो बदलाव के प्रतीक ही बन गये। आरम्भ में लोगों की हिस्सेदारी कम से कम एक-चौथाई थी, जो आगे चलकर उनके उत्साह और लगन के कारण बढ़ कर बराबर के हिस्से तक हो गई।

'मोरेवाला ताल' बना सिरमौर

यद्यपि 'मोरे वाले ताल' का काम 2001 ई.में. नीमी जल-सम्मेलन से कुछ दिन पूर्व ही देव उठनी ग्यारस के अबूझ मुहूर्त के दिन रामसिंह, रमेश, गिरधारी, हरिचरण और प्रभु इन पाँच लोगों की निगरानी में शुरू हो गया था; पर बड़ा काम होने के कारण तथा लोगों के मन में शंका हो जाने के कारण इसमें शिथिलता आ गई थी। इसी दौरान संयोग से नीमी गाँव (जिला जयपुर) के जल-सम्मेलन से वापस लौट कर आये हुए लोगों के उत्साह ने इस काम में पुनः जान डाल दी ।

खजूरा गाँव का कल्याण गुर्जर जब नीमी गाँव में हुए जल-सम्मेलन को देखकर वापस आया, तो उसने सबसे पहले अपने गाँव में 'मोरे वाले ताल' के काम को पूरा करने की बात ही सोची । अपने इस विचार को उसने अपने समधी, हटियाकी गाँव के कमल गुर्जर के सामने भी रखा । कमल गुर्जर तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं के साथ 1998 से ही जुड़े हुए थे । यहाँ के लोग इन्हें 'भगत जी' के नाम से जानते हैं । 'भगत जी' और कल्याण गुर्जर के विचारों का आदान-प्रदान हुआ । खिजूरा गाँव की बैठक हुई, गाँव की ग्राम-सभा बनी और बैठक में 'मोरे वाला ताल' को बनाने में आ रही शिथिलता और रुकावट को दूर करने के बारे में चर्चा चली । 'मोरे वाले ताल' की जगह पहले एक छोटी सी मेड़बन्दी थी, जिसे 1963 में निभैरा ग्राम-पंचायत के तत्कालीन सरपंच शिवनारायण ने 2200 रुपये की एक छोटी-सी मदद से बनवाया था; जो बरसात के पानी को रोकने के लिए अपर्याप्त थी । फिर पिछले 37 वर्षों में वह धीरे-धीरे प्रायः अस्तित्वहीन ही हो गई थी । 'मोरे वाला ताल', खिजूरा गाँव के पास से गुजर रही 'धोबी वाली सोत' के एक सहायक नाले पर स्थित है ।

कुछ तो गाँव वालों की ललक और कुछ तरुण भारत संघ का प्रोत्साहन; बस! 2002 में 'मोरेवाला ताल' बन कर तैयार हो गया। इसमें गाँव के सभी 40 परिवारों ने प्रति बीघा जमीन के हिसाब से हिस्सा-राशि तय कर के, अपने-अपने हिस्से का श्रमदान किया था।

जब कोई व्यक्ति अथवा समुदाय समाज के भले के लिए काम करता है तो भगवान् भी उसकी मदद करता है। इसीलिए तो अगले ही वर्ष 'मोरे वाले ताल' ने अपने जलागम क्षेत्र से बहकर आई हुई बरसात की हरएक बूँद को अपने आगार में रोक लिया। एक साथ इतना सारा पानी देखकर लोग हर्षातिरेक से आनन्द-विभोर हो उठे। लेकिन दूसरे ही क्षण यह सोच कर चिन्तित भी हो गये कि इतना बड़ा ताल है, कहीं टूट गया तो...? सब ने मिल कर चिन्तन किया, और अन्ततः समाधान भी खोज लिया। बस! फिर क्या था ? सभी स्त्री-पुरुष व बच्चे अपना-अपना फावड़ा-परात ले कर पाल की सुरक्षा के लिए तैनात रहने लगे। ताल की पाल में जहाँ भी कुछ कमजोरी दिखाई देती वे वहीं पर मिट्टी डाल देते और अपने ही परम्परागत साधनों से कॉम्पैक्शन भी करते। अत्यन्त लगन,उत्साह और मेहनत से आख़िर उन्होंने अपने ताल को बचा भी लिया और मजबूत भी कर लिया।

आज इस ताल से पूरे गाँव की ज़मीन सिंचित होती है। उल्लेखनीय है कि इस ताल के नीचे की डेढ़-दो किलोमीटर तक की ज़मीन को पहले से ही 'बाजरे की घेर' के नाम से बोला जाता रहा है, क्योंकि पहले वहाँ सिर्फ़ बरसात के मौसम में, केवल बाजरा ही पैदा होता था। धान और गेहूँ आदि की फ़सल बिल्कुल नहीं होती थी। लेकिन 'मोरे वाले ताल' का काम हो जाने के बाद अब इस पूरी ज़मीन में बाजरे की जगह धान तथा रबी की फ़सल में गेहूँ भी पैदा होने लगा है। निश्चय ही यहाँ पर केवल एक ताल के बनने से ही अकल्पनीय समृद्धि आ गई।

नतीजा यह हुआ कि 'मोरे वाला ताल' गाँव के अपने ही साझे-श्रम व ज्ञान से ग्राम-स्वावलम्बन की एक मिसाल बन गया। इस ताल में जितनी भी मेहनत लगी थी, रामजी ने उससे भी ज्यादा फल एक ही साल में दे दिया। पहले ही साल में धान की फ़सल एक बीघा में दस मण तक हो गई थी। हम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि 140 बीघा जमीन में दस मण प्रति बीघा के हिसाब से कुल धान लगभग 1400 मण पैदा हुआ; जिससे, 400 रुपये प्रति मण के हिसाब से भी लगाएँ तो, 5 लाख 60 हजार रुपये की नक़द आमदनी हुई। खिजूरा गाँव के लोग अपने ही ज्ञान और अपने ही श्रम से एक बार तो खुद ही आश्चर्य चकित हो उठे और उनके काम के नतीजे को देख कर बाद में दूसरे गाँवों के लोग भी। पड़ौसी गाँवों के लोग भी हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठे रहे, वे भी अपने-अपने गाँवों में, अपने-अपने खेतों में अच्छी से अच्छी साइटें तलाश करके पानी का काम करने लगे।

एक दशक बाद वर्ष 2011-12 में खिजूरा व खिजूरा के आसपास के गाँवों ने एक बार फिर, उन्हें जहाँ भी अच्छी साइट मिली, वहीं पर गाँव के श्रमदान व तरुण भारत संघ के आंशिक सहयोग से पानी का काम शुरू कर दिया। बरसात से पहले-पहले उन्होंने लगभग 20-22 अच्छी जल-संरचनाएँ बना लीं। इस दौरान ख़ासकर के बन्धन का पुरा, वीरमकी, खिजूरा, रायबेली, पाटोर, मरम्दा व भोपारा आदि गाँवों में पानी के बहुत अच्छे-अच्छे काम हुए। इन कामों से आज इन गाँवों की तो कायापलट ही हो गई है।

खिजूरा का जल–कुम्भ

'नीमी' से सीख मिली

डाँग क्षेत्र के लोगों को जल–कुम्भ करने की प्रेरणा भी जयपुर जिले के नीमी गाँव में हुए जल–सम्मेलन को देख कर ही मिली थी। नीमी गाँव के लोगों ने अपने गाँव में तरुण भारत संघ के आंशिक सहयोग से पानी के कई अच्छे काम किये थे। पानी के कारण उनकी खेती की पैदावार में आशातीत वृद्धि हुई थी। अचानक आई इस समृद्धि की खुशी में तथा देशभर के अन्य लोगों को प्रेरणा देने के उद्देश्य से उन्होंने तरुण भारत संघ के सहयोग से एक विशाल जल–सम्मेलन का आयोजन रखा था। उल्लेखनीय है कि इसी सम्मेलन से जल–बिरादरी जैसे राष्ट्रीय स्तर के एक बड़े संगठन का भी जन्म हुआ था। डाँग क्षेत्र के खिजूरा गाँव के कल्याण बाबा को भी गाँव के लोगों द्वारा प्रबन्धित नीमी का विशाल जल–सम्मेलन देख कर मन में विचार आया था कि क्या हमारे गाँव में भी ऐसा जल–सम्मेलन हो सकता है ? यह सोच ले कर कल्याण बाबा जब अपने घर आये तो खिजूरा गाँव में कार्यरत कार्यकर्त्ता चमन सिंह से भी उन्होंने अपने मन की बात बताई। चमन सिंह ने कहा कि नीमी गाँव में तो वहाँ

के लोगों का बहुत बड़ा सहयोग था; सम्मेलन की पूरी व्यवस्था की जिम्मेदारी वहाँ के लोगों ने ही ली थी । क्या यहाँ ऐसा सहयोग होना सम्भव है ? कल्याण बाबा ने उत्साहित हो कर कहा कि गाँव के सब लोग मिलजुल कर प्रयास करेंगे तो सम्भव क्यों नहीं ? यह कह कर वह अपने स्तर पर प्रयास करता रहा । चमन सिंह ने गाँव में किसी से भी कुछ नहीं कहा, वह गाँव वालों को पक्का करना चाह रहा था । गाँव वालों का विचार दृढ़ होता गया ।

इसी दौरान एक बार जब मैं एक मीटिंग में शरीक होने श्योपुर (मध्य प्रदेश) जा रहा था, तब जाते वक्त खिजूरा गाँव में रुका था । गाँव के लोगों से बातचीत हुई । बातचीत के दौरान गाँव के लोगों ने, विशेष रूप से कल्याण बाबा ने, फिर वही जल-सम्मेलन करने की बात दोहराई । उसका आग्रह सुनकर मैंने उसे गाँव की तरफ से आवश्यक सहयोग तथा व्यवस्था सम्बन्धी पूरी जिम्मेदारी लेने को कहा । उसने तुरन्त ही गाँव की तरफ से पूरी जिम्मेदारी स्वयं ले ली । मैंने कहा कि अगर इतनी ही तैयारी है, तो सम्मेलन की कोई भी तारीख तय कर लो यह कह कर मैं श्योपुर चला गया । गाँव के लोगों ने मीटिंग कर के सब की सहमति ली और सम्मेलन की तारीख तय कर ली । सम्मेलन का नाम 'जल-कुम्भ' रखा गया ।

इस मीटिंग के बाद गाँव के मुखिया लोग रायबेली गाँव में गये; वहाँ भी लोगों से राय ली तो वे लोग भी तैयार हो गये । इसके बाद एक बड़ी मीटिंग खिजूरा गाँव में पुनः रखी गई, जिसमें आसपास के गाँवों के मुखिया लोगों को बुलाया गया था । उनसे भी जब 'जल-कुम्भ' की बात की गई तो वे लोग भी सहयोग करने के लिए तैयार हो गये । उसी मीटिंग में सबने सहयोग व व्यवस्था सम्बन्धी कामों को भी गाँवों के अनुसार अलग-अलग बाँट लिया ।

तय हुआ कि खिजूरा और रायबेली गाँवों के तो सभी लोग व्यवस्था में रहेंगे और अन्य गाँवों में से प्रत्येक गाँव में से कम से कम 10 जिम्मेदार लोग व्यवस्था को सम्भालने के लिए पूरे समय 'जल-कुम्भ' में तैनात रहेंगे । सहयोगी गाँवों में से अलग-अलग गाँवों ने अलग-अलग कामों की व्यवस्था की जिम्मेदारी ली । जैसे-एक गाँव ने केवल मैदान की सफ़ाई करने की पूरी जिम्मेदारी ले ली, एक गाँव ने भोजनार्थियों को पत्तल परोसने की, एक ने पूरी परोसने की, एक ने सब्जी परोसने

की, एक ने दाना (बूँदी) परोसने की, एक ने पानी परोसने की, एक ने झूठी पत्तलें उठाने की तथा एक गाँव ने आगन्तुक लोगों को सम्भालने की जिम्मेदारियाँ ले लीं। गाँवों के मुखिया व बुजुर्ग लोगों की जिम्मेदारी रसोई-स्थल व भण्डार-गृह में हो रहे कार्यो की देखरेख करने की थी। 'जल-कुम्भ' के दौरान सभी ने अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी तरह से निभाईं। कुल मिलाकर इस सम्मेलन(जल-कुम्भ)में भण्डारे की व्यवस्था बहुत अच्छी रही। भण्डारे में न तो कोई चीज कम पड़ी और न ही बहुत ज्यादा बची। जूठन भी बेकार नहीं गई। और सबसे बड़ी बात यह कि यहाँ पर आये सामान में से एक भी बर्तन गुम नहीं हुआ।

'जल-कुम्भ' में मीटिंग की व्यवस्था संस्थागत तौर पर हमने स्वयं सम्भाली थी। कुम्भ में देश भर के जाने माने लोग तथा स्थानीय लोग काफ़ी संख्या में आये थे। खिजूरा गाँव में आयोजित इस 'जल-कुम्भ' का मूल उद्देश्य यही था कि हमारे देश की सभी नदियों को समाज सदैव शुद्ध, सदानीरा, निर्मल व पवित्र बनाये रखे तथा गंगा, गोदावरी व शिप्रा जैसी पवित्र नदियों के किनारे सदियों से होते आ रहे बड़े कुम्भों में भी इससे कुछ सीख लेकर प्राचीन काल में होने वाले कुम्भों की तरह से विचार-मंथन व ज्ञान-मंथन शुरू किया जा सके। हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही तीर्थ स्थानों पर 'कुम्भ', 'अर्धकुम्भ' व 'महाकुम्भों' के मेलों की पावन परम्परा रही है। परम्परागत रूप से होने वाले इन कुम्भों से यह तो प्रामाणिक तौर पर सिद्ध होता है कि भारत का समाज प्रारम्भ से ही नदियों को मान्यता व सम्मान देता रहा है। इन नदियों के किनारे साधना करने वाले ऋषि-महर्षियों व महात्माओं को नदियों में ज़हर मिलाने वालों की तथा इसे अमृत की तरह शुद्ध, निर्मल व पवित्र बहाने वालों की सम्यक् पहचान थी। तभी तो ये लोग इन प्रमुख नदियों के किनारे करोड़ों की संख्या में विचार-मंथन के लिए एकत्र होते थे। इस ज्ञान-मंथन के कुम्भ में सम्पूर्ण सृष्टि रूपी कुम्भ में घुले हुए विष और अमृत को नीर-क्षीर की तरह अलग-अलग करने की प्रक्रिया पर तथा इसमें विष को न घोला जाय इस बात पर चिन्तन चलता था। अमृत रूपी निर्मल जल की खोज करने वालों को देवता और इसमें ज़हर घोलने वालों को राक्षस कहा जाता था। ये देवता और राक्षस पहले भी थे और आज भी हैं। फर्क

इतना है कि आज के देवता विष बन चुके अमृत को पुनः अमृत बनाने के लिए ज्ञान-मंथन के बजाय अज्ञानतावश विष को ही अमृत मानते हुए सिर्फ स्नान ही करते हैं और अनजाने में खुद भी उसमें विष (ज़हर) ही घोल देते हैं। और आज के राक्षस लोग तो राहू-केतु की तरह वेष बदल कर देवता का रूप धारण कर के स्वार्थवश जान बूझ कर नदी के विष बन चुके पानी को शुद्ध करने के बहाने उसमें और अधिक विष (ज़हर) ही घोल रहे हैं। हमारे देश के इन प्रमुख तीर्थों पर होने वाले इन कुम्भों की प्राचीन अवधारणा को ध्यान में रखते हुए ही चर्मण्यवती (चम्बल) नदी की सहायक 'महेश्वरा नदी' के उद्गम-स्थल पर खिजूरा गाँव में हमने 'जल-कुम्भ' का आयोजन रखा था।

इस जल-कुम्भ में बड़े-बड़े सन्तों के अलावा सर्व श्री पी.वी. राजगोपाल, डा. सुनन्दा पँवार, एल.आर. सविता वोरा, डी. आर. पाटिल, एस.एन. सुब्बाराव, के.जी. व्यास तथा भारत की पेयजल आपूर्ति की सचिव शान्ताशीला नायर व अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित थे। इन के अलावा तीन दिनों तक चलने वाले इस 'जल-कुम्भ' में डाँग क्षेत्र के व आसपास के कुल मिला कर लगभग ग्यारह हजार लोग भी शामिल हुए थे। सभी वक्ताओं ने जल-संरक्षण व जल-निर्मलीकरण पर अपने-अपने विचार रखे।

इन सभी लोगों ने बादल से निकली बूँदों को पकड़ कर धरती के पेट में बैठाने का तथा सूरज के द्वारा की जाने वाली चोरी को रोकने का संकल्प भी लिया। जिस काम को यहाँ के लोग कई सालों से कर रहे थे, उस पर भी

उन्होंने गहराई से अपने-अपने विचार रखे। इस काम को कैसे और अधिक विस्तार दें? इस विषय पर विस्तार से चर्चा की गई। इस 'जल-कुम्भ' में भारत के जल संकट के समाधान के लिए सामुदायिक जल-संरक्षण व विकेन्द्रित

जल-प्रबन्धन पर न केवल वैचारिक चिन्तन-मनन किया गया, बल्कि जल-संरक्षण व जल के अनुशासित उपयोग को व्यावहारिक रूप में लाने की योजना भी बनाई गई। जिसे यहाँ के 30 गाँवों के लोगों ने अपनाया। इसी का परिणाम है कि पाँच साल बाद आज 2013 में भी यहाँ की 'महेश्वरा नदी' शुद्ध सदानीरा बन कर बह रही है। पानी के काम से पूर्व यह नदी सूखी व मरी हुई थी। यह यहाँ पर हुए 'जल-कुम्भ' का ही प्रताप है कि डाँग क्षेत्र के लोग अपने-अपने गाँवों में पानी के काम के लिए जी-जान से जुट गये। परिणाम स्वरूप महेश्वरा नदी सदानीरा हो गई।

डाँग की धरती पर अब पर्याप्त धान, गेहूँ, चना व सरसों की पैदावार होने लगी है। यहाँ के 'जल-कुम्भ' ने लोगों की बिखरी हुई खुशियों को जोड़ने का काम किया है। जिन किसानों ने अपने गाँव में, अपने खेत में, पानी का अच्छा काम किया था, उन्होंने इस जल-कुम्भ में अपने अच्छे कामों का वर्णन आत्मगौरव व आत्मविश्वास के साथ किया। उन्होंने अपने श्रीमुख से बोल कर समझाया कि पानी के साझे काम में हमें तन की मेहनत करने की भी आदत बनानी चाहिये। एक तरह से इस 'जल-कुम्भ' ने राज, समाज, सन्त व सामाजिक कार्यकर्ताओं को 'जल-दर्शन' व 'जल-संस्कृति' का अहसास करा के इन्हें जल-संरक्षण के कार्यों में जोड़ने का आभास कराने में सफलता प्राप्त की है।

खिजूरा गाँव में आयोजित यह 'जल-कुम्भ' आज की प्रदूषण वर्धक परिपाटी से बिल्कुल अलग था। गाँव के लोगों के द्वारा पहले से ही यह तय किया हुआ था कि इस कुम्भ के दौरान किसी भी तरह की जो भी गंदगी फैलेगी, उसे हम तुरन्त साफ़ करेंगे। इस संकल्प को उन्होंने पूरी तरह से निभाया। 'जल-कुम्भ' के समापन के तुरन्त बाद, कुम्भ के शुरू होने से पूर्व जैसा साफ़-सुथरा स्थल था वैसा ही साफ़-सुथरा कुम्भ-स्थल को पुन: कर दिया गया। इस 'जल-कुम्भ' में प्लास्टिक का उपयोग बिल्कुल भी नहीं किया गया। भोजन के लिए दोने-पत्तल भी वहाँ के स्थानीय पेड़ों के पत्तों से ही बनाये हुए उपयोग में लिये गये थे।

कुम्भ-स्थल पर प्रतिदिन सात हजार लोगों के लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था तैयार रहती थी। इस कुम्भ की विशिष्टता यह थी कि आसपास के व बाहर से आये हुए लोग कुम्भ-स्थल पर केवल एक वक्त (दोपहर) का ही भोजन करते थे। शाम का भोजन वे इस गाँव में तथा आसपास के गाँवों के लोगों के साथ जा कर उनके घरों पर ही अलग-अलग घरों में करते थे। रात्रि विश्राम भी वे वहीं पर करते थे। प्रबन्धन व्यवस्था पूरी तरह से गाँव के लोगों के द्वारा संचालित थी। कुम्भ-स्थल पर भी गाँव के लोगों ने ही सबको भोजन परोसा था। कुम्भ के आयोजन से बालक, बूढ़े, जवान व महिलाएँ सब आनन्दित थे। कुम्भ की यादें आज भी लोगों के मन-मानस में बसी हुई हैं। जल-कुम्भ का संयोजन, संचालन व प्रबन्धन पूरी तरह से व्यवस्थित था। कुम्भ में किये गये अन्तिम निर्णय भी बहुत ही सार्थक थे। इन निर्णयों की पालना लोगों ने अपने-अपने गाँवो में जा कर पूरी तरह से निभाई।

यह पुस्तक इस जल-कुम्भ के पाँच साल बाद लिखी जा रही है, इन पाँच सालों में लोगों को यह समझ में आया है कि गंगा, गोदावरी व शिप्रा जैसी नदियों पर परम्परागत रूप से होने वाले कुम्भ, सिर्फ स्नान कर लेने मात्र से ही सफल नहीं माने जा सकते; बल्कि यह तो समाज को संगठित व संस्कारित रखने की एक सतत प्रक्रिया है। संस्कार-निर्माण की यह मंथन-प्रक्रिया हजारों सालों तक बखूबी चलती रही थी, पर बीच के एक लम्बे दौर में इस का मूल उद्देश्य ही पूर्णतः विस्मृत हो गया। लोग भूल ही गये कि ऐसा भी कभी होता था। इसी विचार-मंथन प्रक्रिया को पुनः याद कराने के लिए ही इस पुस्तक का लेखन किया गया है। इसी प्रक्रिया से समाज अपने सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है

खिजूरा में किया गया यह 'जल-कुम्भ' भारत के तीर्थ स्थलों पर होने वाले कुम्भों से गहरा रिश्ता रखता है,पर यह 'जल-कुम्भ' उन कुम्भों की अपेक्षा ज्यादा अच्छे परिणाम दिखाने वाला सिद्ध हुआ है। इसी जल-कुम्भ से प्रेरणा लेकर डाँग के लोगों ने 'अपना हाथ जगन्नाथ' कर दिखलाया है।

सभा के अन्त में एक बहुत अच्छी बात यह हुई कि समापन के समय जब मैंने एक कृत्रिम बरसात लाने का अभिनय (खेल) किया, तब संयोग से ही कुछ देर बाद–जब कि बारिश की कोई सम्भावना नहीं थी, अचानक ही बहुत तेज बरसात वास्तव में ही हो गई। टैण्ट की व्यवस्था होते हुए भी सब लोग भीग गये थे। पर इस भीगने में भी सबको खुशी ही हुई थी, क्यों कि उस समय फसल के लिए बरसात की सख्त जरूरत भी थी। दूसरी बात यह कि कृत्रिम बरसात के खेल के प्रदर्शन के तुरन्त बाद वास्तविक बरसात होने से लोगों में ईश्वर के प्रति, संस्था के प्रति तथा जल–कुम्भ के प्रति भी बेहद आस्था बढ़ी। और सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि उन्हें अपने आप पर और अपने ही श्रम पर भी अत्यधिक विश्वास बढ़ा।

क्या है कुम्भ ?

कुम्भ बेहतर जीवन हेतु मानव और प्रकृति के शुभाशुभ की संभावनाओं को खोजने की एक प्रक्रिया का नाम है, जिसमें भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के संघर्ष के शांतिमय समाधान को खोजा जाता है। इसमें जीवन समृद्धि हेतु शांति के रास्ते ढूँढ़ने वाली परिवर्तन की प्रक्रिया संचालित की जाती है। यही नहीं यह सर्व हित को दृष्टिगत रख शुभाशुभ करने वालों को याथोचित सम्मान देने के साथ ही सत्कर्मो को सबल बनाने के लिए शक्ति, श्रद्धाभाव, प्रेम व भक्ति की भावना का संचार करने का माध्यम भी है। शास्त्रों में उल्लेख है कि गंगा को मानव–कल्याणकारी व उसकी प्राण रक्षिका मानकर उसके प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करने हेतु, सम्पूर्ण मानव समाज उसके किनारे इस आशय से पहुँचा था कि गंगा की पवित्रता यथावत बनी रहे और इस सम्मेलन के माध्यम से समाज हेतु अनुशाषित व्यवहार और संस्कार सुनिश्चित किये जा सकें। साथ ही मानव और प्रकृति के बीच सह–अस्तित्व की भावना न केवल सुदृढ़ हो; बल्कि वह समृद्ध भी बने। यह सर्वविदित है कि मानवीय अक्षम विकास का मूल प्रकृति ही है। मानव भी प्रकृति के अंग यथा–प्राणी, वृक्ष आदि की तरह ही है; लेकिन मानवीय जीवन की जटिलताएँ व विषमताएँ वर्तमान में प्रकृति के अन्य अंगों यथा–जल, जंगल, जमीन और जीवों के लिए संकट बन गईं हैं। इसके निवारण हेतु जल, जंगल, जमीन व प्रकृति से मोह, निकटता व उसकी रक्षा हेतु संकल्प

को अनुभव किया जाता रहा है। उसमें आज भी कोई बदलाव नहीं आया है। लेकिन मानवीय लोभ ने उसका स्वरूप अवश्य बदल कर रख दिया है। क्योंकि उसने न तो महात्मा गांधी के कथन –'जितना तुम प्रकृति से लो,–उतना उसे वापस करना भी अपना दायित्व समझो'– को माना और न ही महावीर–बुद्ध–दादू–नानक–यीशु जैसे महापुरूषों व संतों के 'जियो और जीने दो' के संदेश को ही महत्त्व दिया। बल्कि उसने तो प्रकृति–प्रदत्त सभी वस्तुओं पर ही नहीं; अपितु सम्पूर्ण प्रकृति का ही नियन्ता बनने का भी पुरजोर प्रयास किया। कारण कि वह प्रकृति का रक्षक नहीं, अपितु नियन्ता बनने का प्रबल आकांक्षी है; जिसके चलते मानव जीवन पर गहरा दुष्प्रभाव पड़ेगा। इसका समाधान विज्ञान, तकनीक और प्रौद्योगिकी से नहीं, बल्कि समाज की आपसी समझ–बूझ से ही सम्भव है। यह समझ कुम्भ के वास्तविक सम्मेलन से ही बनना सम्भव है, जिसमें शासन नहीं, अनुशासन चलता है। वहीं से प्रकृति के संरक्षण के संस्कार और व्यवहार भी जन्मते हैं, जो व्यक्ति–निर्माण में भी अहम भूमिका का निर्वहन करते हैं।

गौरतलब है कि अपनी कुम्भ परम्परा के कारण ही भारत जगद्गुरु बना था, जिसके विचलन व विखंडन से देश के सांस्कृतिक, भौतिक व नैतिक मूल्यों की रक्षा हेतु अपनी प्राचीन ज्ञान–परम्परा की पुनर्प्रतिष्ठा आवश्यक है। पंच महाभूतों की रक्षा इसलिए जरूरी है, क्योंकि उनकी यौगिक क्रिया से प्राणों का संचार होता है। यदि उसी पर संकट हो तो प्राणों की रक्षा कैसे सम्भव है ? जल को जीवन का आधार माना गया है और जब जल पर ही संकट है तो प्राणी की सुरक्षा असम्भव है। जल से ही नदी बनती है या यूँ कहें कि नदी का मूल जल ही है और जल से ही नदी का जीवन सम्भव है। पानी का अपना जीवन होता है। जीवित पदार्थों के गुण–धर्म का योग उचित होता है, लेकिन सब एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। यदि उन्हें मिला दिया जाये तो वे आपस में लड़कर खत्म हो जाते है। जीवों का यह आपसी घमासान परिवेश और पर्यावरण के लिए अहितकर ही नहीं, घातक भी होता है। यह क्रांति है। इसे कौन प्रभावित करता है? इसकी गति व उसके प्रभाव के बढ़ने का माध्यम क्या है? इन सबके बारे में कुम्भ के माध्यम से ही जाना व समझा जा सकता

है । स्वक्रांति, स्वपरिवर्तन और स्वविकास उक्त कार्यों को करने की मात्र इकाई जरूर है । यह प्रक्रिया इकाई से दहाई और उससे सैकड़ा, हजार, दस हजार, लाख, दस लाख अथवा करोड़ों-अरबों की संख्या बनसे से दुनिया का चेहरा बदल सकती है, जो कुम्भ से ही सम्भव है। वह हमारे जीवन के हर क्षेत्र में है । सच तो यह है कि इसी रास्ते से सृष्टि का संरक्षण सम्भव है और यह भी कि सृष्टि की रक्षा-संवर्द्धन हेतु सुर-असुर संघर्ष को भी कुम्भ कहा गया है। यह सर्वविदित है कि हम सभी सृष्टि के मामूली अंग हैं। यदि हम बचेंगे, तो सृष्टि भी बचेगी । इसलिए हम जीवन को सृष्टि का अंग मानकर जीयें। उस दशा में दूसरे को जीने का रास्ता जहाँ स्वयं निकल आयेगा, वहीं सर्वसमभाव का बोध भी स्वमेव पनप जायेगा । यह जान लेना जरूरी है कि "प्रकृति से जितना लें, उतना उसको वापस भी लौटायें"- यह नीति भी कभी कुम्भ में ही बनी थी ।

देवासुर संग्राम के पीछे भी असुरों द्वारा प्रकृतिजन्य वस्तुओं पर आधिपत्य की भावना ही अहम थी, पर इसमें उसको समान रूप में वापस करने की भावना नहीं थी । इसे ही धर्म-अधर्म के बीच का संघर्ष भी कह सकते हैं ।

प्रकृति हमारी माँ है, जिसकी उत्पत्ति में प्रभावी व महत्त्वपूर्ण भूमिका है । इसे नकारा नहीं जा सकता है । हमारा शरीर जिन तत्त्वों से बना है, वही तत्त्व प्रकृति में भी विद्यमान हैं । प्रकृति के तत्त्वों में दूषण, रोग का कारण बनेगा । जिसके चलते अच्छे-बुरे की पहचान की क्षमता का अभाव रहेगा । प्रकृति के बिना हमारे जीवन की कल्पना ही बेमानी है । जीवन के लिए जल जरूरी है और इसकी प्राप्ति तभी संभव है जब मानव और प्रकृति के बीच सहअस्तित्व अक्षुण्ण रहे। इस हेतु जरूरी है कि नदियों को शुद्ध-सदानीरा बनाएँ; जहाँ बैठकर सर्वत्र हरियाली की आशा-आकांक्षा के साथ अपना वर्तमान व साझे भविष्य को सँवारने वाली सर्वहितकारी नीति-निर्माण की जा सके । नीति-निर्माण से पूर्व समूचे देश में नदियों के किनारे छोटे-छोटे कुम्भ आयोजित किए जायें, जहाँ प्रकृति संरक्षण से जुड़े सभी सवालों पर सार्थक बहस हो। यह सार्थक बहस राज और समाज के मानस को इस दिशा में बदलने में सफल हो, ताकि राज को इसमें अपने दायित्व निर्वहन में सुगमता रहे।

हमारी अनमोल धरोहर : आस्था, मान्यता एवं परम्पराएँ

जल मिला, जगदीश मिला

विज्ञान एक व्यापक शब्द है, लेकिन आजकल इसके भौतिक पक्ष पर ही अधिक ध्यान दिया जाता है। विज्ञान के मानसिक, भावनात्मक आध्यात्मिक, दैविक व धार्मिक पक्षों को प्राय: अनदेखा किया जाता है। इतना ही नहीं आज के कथित शिक्षित वर्ग द्वारा तो हमारे धार्मिक कर्म-काण्डों का प्राय: उपहास व विरोध भी किया जाता है; जबकि हमारी परम्पराओं, आस्थाओं, संस्कारों व कर्म-काण्डों में निश्चित रूप से कुछ न कुछ तथ्य छुपा हुआ होता है। यह बात दीगर है कि हजारों साल से चली आ रही इन परम्पराओं व कर्म-काण्डों में कहीं-कहीं पर विकृति भी आ गई है, लेकिन इससे इनका महत्त्व कम नहीं हो जाता; क्योंकि समय से साथ-साथ आई हुई विकृतियों को दूर करना तो मनुष्य का धर्म ही है। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि विकृतियों को दूर करने के नाम पर अथवा सुधार करने के नाम पर प्राचीन परम्पराओं का स्वरूप ही बदल दिया जाये।

आजकल के सुधारवादियों ने एक नवीन परम्परा पर ज़ोर देना शुरू किया है, जैसे- 'पेड़ में भगवान् है' अथवा 'जल ही जगदीश है' इस प्राचीन आस्था को आधुनिक सुधारवादी लोग केवल भौतिक लाभ के रूप में ही स्वीकार करते हैं, उसके आध्यात्मिक विश्वास का वे स्वयं ही खण्डन कर देते हैं। ऐसे सुधारवादी सामान्य लोगों को समझाते हुए कहते हैं- "पेड़ में भगवान है या नहीं, जल में जगदीश है या नहीं, यह तो पता नहीं, पर पेड़ हमें ऑक्सीजन, छाया, फल व लकड़ी देकर ज़िन्दा रखता है, यह सत्य सिद्ध है। यह बात हमारे प्राचीन ऋषि-महर्षि अच्छी तरह से जानते थे, इसीलिए उन्होंने सर्व साधारण को समझाने के लिए इनमें भगवान् के अस्तित्व की कल्पना की थी।" सुधारवादियों की यह बात ईश्वर के अस्तित्व को काल्पनिक व संशयात्मक बनाती है तथा लोगों के मन में दृढ़ता से बैठी हुई आस्था को तोड़ती है। जबकि आज भी बुजुर्गों व श्रद्धालुओं की दृढ़ मान्यता है कि पेड़ व जल आदि भौतिक पदार्थ न केवल हमें ज़िन्दा रखते हैं, बल्कि उनमें निश्चित रूप से 'ईश्वर' का अस्तित्व होता ही है।

तभी तो 85 साल के बुजुर्ग खिजूरा के बाबा देवनारायण गुर्जर, जिन्हें अब आँखों के बिल्कुल नहीं सूझता – प्रात:काल आचमन हेतु प्रथम बार जल–स्पर्श करने के समय बोले जाने वाले ग्राम्य–मन्त्र को श्रद्धा पूर्वक तन्मय होकर ऐसे गाने लगते हैं –

जल जागे, थल जागे, जागे जल के कीरा । जाग जाग मेरी गंगा माई, जागे हनुमत बलबीरा ।।
जल मिले जगदीश मिले, और मिले संसार । जल से ही जीवन मिले,जल की महिमा अपरम्पार ।।

कितनी अनूठी परम्परा थी, जल के सम्बन्ध में । एक तरफ आज, जहाँ पानी की बेहद कमी होने के बावजूद पानी को निरर्थक बहाया जाता है, वहीं दूसरी तरफ पहले, पानी की बहुतायत होते हुए भी पानी के प्रति कितना पवित्र श्रद्धा–भाव था । तब हर जगह के पवित्र जल को गंगा माता के रूप में ही माना जाता था । बाबा देवनारायण गंगा माता की स्तुति करते हुए बड़ी ही तल्लीनता से गा उठते हैं :–

लैबे को हरि का नाम मुकत को श्री गंगा माई । जय गंगे,जय अम्बे, तेरी कहा लग करुँ बड़ाई । ।
जय जग–तारणी, जय सन्तन को सुख दैनी । लैबे को हरि का नाम -----
चेत करै तो चेत बन्दे फिर चौरासी आई । पापी ध्यावैं, पाखण्डी ध्यावैं, कौढ़ी ध्यावैं, कलंकी ध्यावैं ।
ध्यावैं हड़फोरा और बकर कसाई । लैबे को हरि नाम -----
न्हाबो धोबो,जल पीबो याको पार अपार, पार कहिये न जाई ।
एक रात बसै गंगा की रेती में, सीरी सीरी पवन चलै ।
आवै गंगा की लहर, तेरी सहज मुकति हो जाई ।
लैबे को हरि का नाम -----

बाबा देवनारायण पानी से संबंधित एक पहेली भी सुनाते हैं–

मैं आई तोकूँ, तू घेर बैठ्यो मोकूँ, पर ले'र चलूँगी तोकूँ।

(यह घटना उस समय की है, जब पनिहारी कुँए पर पानी लेने जाती है और बरसात उसे घेर लेती है।)

खिजूरा की कहानी बाबा कल्याण की जबानी

खिजूरा के कल्याण बाबा कहते हैं – "खिजूरा गाँव पहले वर्तमान जगह से पूर्व में दतारी के नाले पर बसा हुआ था। वहाँ पर किसी जमाने में, सबसे पहले काँवर और छावड़ी गोत्र के गुर्जर आये थे। बाद में अब से करीब दो सौ वर्ष पूर्व आगरा के सोनीखेरा गाँव से चन्देला गोत्र के हमारे पूर्वज 'श्योलाल बाबा' यहाँ आये। सम्वत् 2010 विक्रमी में श्योलाल बाबा के वंशज मेरे पिताजी श्री दोजिया गुर्जर हम सब बच्चों को लेकर वर्तमान खिजूरा गाँव में आ कर बस गये। कल्याण बाबा कहते हैं गाँव की प्रथम बसावट का मुहूर्त मेरे ही नाम से निकला था, इसलिए पिताजी ने मेरे हाथों से ही यहाँ का मुहूर्त करवाया था। उस समय मैं लगभग 15 वर्ष का था। मेरा जन्म ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी सम्वत् 1996 वि. को हुआ था। गाँव में प्रवेश व प्रतिष्ठा के मुहूर्त के समय मैं, मेरे बड़े भाई देवनारायण व छोटे भाई परसादी तीनों, सबसे पहले दूध के बर्तन लेकर, यहाँ आये थे। प्रथम प्रवेश के समय दूध के बर्तन लेकर जाना शुभ माना जाता है। हमारे साथ ही रामचरण, मूला और उनके परिवार के लोग भी यहाँ आ कर बस गये। साथ में ही काँवर गोत्र के परसादी और मंगल भी आ गये। बाद में अब से 10–12 वर्ष पूर्व वीरमकी गाँव से उठकर रैंकवार गोत्र के रामजीलाल भी यहाँ आ गये। इन्हें यहाँ सात बीघा जमीन अलॉट हुई थी। गुर्जरों के अलावा यहाँ पर एक घर भोला जी के पुजारी राधे जोगी का भी है। भोला जी का स्थान यहाँ पर सं. 2020 वि. में बना था।

सपना सच हुआ

संस्था के कार्यकर्त्ता चमन सिंह बताते हैं –"खिजूरा गाँव के लोगों की रुचि खेती करने में नहीं थी, क्योंकि उनके पास न तो खेती योग्य जमीन थी और न ही सिंचाई के लिए पानी। 'मोरे वाले ताल' के नीचे से लेकर गाँव के पास तक की सारी खेती वाली जमीन 'बाजरे की घेर' के नाम से बोली जाती थी; क्योंकि इसमें बरसाती फ़सल के रूप में कभी–कभार कुछ मात्रा में केवल बाजरा ही होता था। गाँव के अधिकतर लोग पशु–पालन पर ही निर्भर थे। वे घी बेच कर ही अपना गुज़ारा करते थे। कुछ लोग पाड़े बेचने का काम भी करते थे। दूध बेचने

की परम्परा तब तक नहीं थी। खेती में यहाँ केवल बाजरा ही अल्प मात्रा में होता था, गेहूँ बिल्कुल भी नहीं होता था। घर में कभी-कभार विशेष मेहमान आने पर ही बाजार से खरीदे हुए गेहूँ की रोटी बनाई जाती थी। बच्चे लोग सोचते थे - काश! हमारे घर में कोई मेहमान आ जाये तो हमें भी गेहूँ की रोटी खाने को मिल जाये।

काम से पूर्व गाँव में पीने का पानी भी साल भर नहीं रहता था, गर्मी के दिनों में तो यहाँ के लोगों को चार-पाँच किलोमीटर दूर के गाँव मरम्दा से पानी भर कर लाना पड़ता था। पशुओं को तो पानी के अभाव में चम्बल नदी के किनारे कहीं दूर चराने के लिए ले जाना पड़ता था। इस प्रकार यहाँ पानी का संकट बेहद था।

नब्बे के दशक के उत्तरार्द्ध में खिजूरा के बाबा कल्याण ने अपने गाँव के सहयोग से 'मोरे वाले ताल' का काम शुरू करवाया था, पर लोगों में समझ की कमी के कारण काम में शिथिलता आ गई थी। तभी जयपुर जिले के नीमी गाँव में संस्था द्वारा आयोजित विशाल जल-सम्मेलन में जाने का मौका बाबा कल्याण को व अन्य लोगों को मिल गया। वहाँ जल-सम्मेलन की बातचीत सुन कर उनके मन में संस्था के प्रति जो संशय का भाव था, वह दूर हो गया। गाँव में वापस आकर बाबा कल्याण ने गाँव के लोगों को समझाया और लोगों की सक्रिय भागीदारी से रुके हुए काम को शीघ्र ही पूरा करवा लिया। बस! कल्याण बाबा का एक बड़ा सपना पूरा हो गया।''

कल्याण बाबा की भूली-बिसरी यादें

कल्याण बाबा अपने अतीत को याद करते हुए कहते हैं कि हमारे बचपन में जब जंगल ज्यादा सघन थे और बारिश अच्छी होती थी, तब का वातावरण बड़ा ही सुखद होता था। पर बीच के दौर में जंगल भी कम हुए और बारिश भी कम होने लगी तो फ़सल भी कम होने लगी। पानी का संकट पैदा हो गया। अब गाँव ने जब से तरुण भारत संघ के साथ मिलकर अपने गाँव का पानी रोकने का काम किया है, तब से पुनः वैसा ही वातावरण महसूस होने लगा है। देख कर मन को अब वही सुकून मिलता है, जो हमें बचपन के दिनों में कभी मिला करता था।

कल्याण बाबा आज की शिक्षा पद्धति से सन्तुष्ट नहीं हैं। वे कहते हैं, पुराने जमाने में गुरुकुल पद्धति से शिक्षा दी जाती थी; जिस में अनुशासन, विनम्रता व संस्कारों की शिक्षा प्रमुख होती थी। आज की तरह पैसा संग्रहीत कराने के गुर सिखाने की परम्परा तब नहीं थी। वे कहते हैं, मुझे बचपन में सबसे पहले मेरे पिताजी ने ही पुरानी पढ़ाई पढ़ाई थी, बाद में एक पण्डित जी (भगत जी) ने भी पढ़ाया। पुरानी पढ़ाई में गिनती, पहाड़े, बारहखड़ी व अक्षर-ज्ञान मुँहायनी द्वारा कंठस्त कराये जाते थे। 'क' से लेकर 'ह' तक के अक्षरों को कंठस्त याद कराने की मुँहायनी (ककहरा) इस प्रकार है-

ककहरा

कक्का रै केवरियो, खख्या को न चीरी। गग्गा गौरी गाय, घघ्घा घटुन्ना। नन्ना मन्ना दोमन्ना ॥
च्यार चणाँ की च्यामचो, छछ्या पिछ्या पोट्यारो। जज्जा जेर भानिये, झझ्झाऊ की हाँसोली। नन्ना खाँडो चाअण्डे ॥
टट्टा पोरी आधी, ठठ्ठा नै सँजोई। डड्डा डाबर गाँठरी, ढढ्ढा कै ऊपर पूँछैरी। रण तम्हारी रीमठी ॥
तात् तम्हारी तम्मो, थथ्था रै थावरियो दद्दा द्वारै देउठियो, धध्धा धनक चबोय्यो जाय। आगै नन्ना भाग्यो जाय ॥
पा पा पाटकरी, फफ्फा की दो फार करी। बब्बा वारी बैंगन्नो, भभ्भा मूँछ कटार को मम्मा मोई आगली ॥
या ई सारा पेट को ,रर्रा राब तरेठी को ,लल्ला राब सँवारे को।
वव्वा.....?

बारहखड़ी

बरकनेउ 'क', कन्नो 'का', पिछ्यो 'कि' अग्यो 'की' लघुतरम 'कु' बड़ेरम 'कू', इकलक् 'के', दो लक् 'कै', लज्या 'को', जलावर 'कौ' मस्ते 'कं', दुपास कक्का दो बैंदी।

सवाल : यदि थाली 15 रुपये की एक, गिलास 1 रुपय का एक और कटोरी 25 पैसे की एक आती हो तो सौ रुपय के 100 बर्तन खरीद कर लाओ। कितने-कितने के आयेंगे?

ग्राम खिजूरा का सर्वे

(2009 व 2013 का तुलनात्मक अध्ययन)

खिजूरा गाँव में विभिन्न अवधियों में विभिन्न विषयों पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया। जिसके अनुसार पानी के प्रारंभिक काम के कुछ वर्षों बाद वर्ष 2009 में तथा काम का अन्तिम चरण पूरा होने के बाद वर्ष 2013 में किये गये तुलनात्मक अध्ययन में जो परिणाम सामने आया, उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

क्र.	विवरण	वर्ष 2009	वर्ष 2013	चार वर्षों में हुई वृद्धि दर
1.	कुल परिवार	37	40	8.11%
2.	कुल जनसंख्या	206	236	14.56%
3.	पुरुषों की कुल संख्या	115	129	12.17%
4.	महिलाओं की कुल संख्या	91	107	17.58%
5.	साक्षर पुरुष	63	97	53.97%
6.	साक्षर महिलाएँ	29	47	62.07%
7.	गायों की कुल संख्या	209	229	9.57%
8.	भैंसों की संख्या	192	316	64.58%
9.	बकरियों की संख्या	325	641	97.23%
10.	दूध की मात्रा (कि.ग्रा. में)	156	320	105.13%
11.	कृषि भूमि (बीघा में)	201	240	19.40%
12.	धान की मात्रा (क्वि. में)	500	507	1.40%
13.	गेहूँ की मात्रा (क्वि. में)	470	804	71.06%
14.	गाँव की कुल वार्षिक आय (रु.)	11,23,900	42,15,000	275.03%

2009 में 100 पुरुषों पर महिलाएं 79 थीं, जबकि 2013 में 100 पर 83 हो गई है। वृद्धि दर = 5.06%

नोट : बाजरा वर्ष 1997 में (काम से पूर्व) केवल 302 क्वि. हुआ था, जबकि अब 2013 में बाजरे की जगह धान 507 क्वि. तथा रबी की फ़सल में गेहूँ 804 क्वि. हुआ। (विस्तृत जानकारी के लिए अग्रांकित सारणी देखें।)

ग्राम–खिजूरा, पोस्ट–निभैरा, तहसील –

(2009 व 2013 का

क्र. सं.	परिवार के मुखिया का नाम	जनसंख्या						साक्षरता					
		कुल		पुरुष		स्त्री		पुरुष		स्त्री		गाय	
		वर्ष 2009	वर्ष 2013	वर्ष 2009	वर्ष 2013	वर्ष 2009	वर्ष 2013	वर्ष 2009	वर्ष 2013	वर्ष 2009	वर्ष 2013	वर्ष 2009	वर्ष 2013
1	रामसिंह s/o देवनारायण	7	13	4	8	3	5	4	4	–	–	5	6
2	रूपसिंह s/o देवनारायण	8	4	5	3	3	1	4	3	2	1	2	4
3	रामदयाल s/o देवनारायण	5	5	3	3	2	2	1	2	1	1	3	9
4	विश्वम्भर s/o देवनारायण	6	7	3	4	3	3	2	4	3	3	2	3
5	भैंरूलाल s/o रूप सिंह	6	5	4	3	2	2	2	3	–	–	4	–
6	लक्ष्मण s/o रूप सिंह	–	4	–	3	–	1	–	2	–	1	–	–
7	रमेश s/o कल्याण	6	8	3	3	3	5	2	3	1	2	6	4
8	दिनेश s/o कल्याण	7	8	3	4	4	4	3	4	2	3	5	5
9	इमरती w/o द्वारका	4	4	3	3	1	1	1	2	–	–	1	–
10	रामगिलास s/o परसादी	6	7	3	3	3	4	3	3	2	2	6	9
11	पूरण s/o परसादी	5	5	3	3	2	2	2	3	1	1	8	5
12	नारायण s/o परसादी	3	5	1	1	2	4	1	1	1	1	4	7
13	गिर्राज s/o रामचरण	6	4	3	3	3	1	2	3	1	–	4	7
14	प्रभू s/o रामचरण	8	8	3	5	5	3	1	3	2	–	4	3
15	धर्मसिंह s/o रामचरण	4	7	3	4	1	3	1	3	1	1	3	–
16	होरीलाल s/o केदार	7	7	3	3	4	4	3	3	1	3	4	7
17	अशोक s/o केदार	5	7	2	4	3	3	1	3	1	2	8	6
18	कर्णसिह s/o मूला	9	10	5	6	4	4	4	5	–	2	4	4
19	हरी s/o मूला	7	8	4	5	3	3	1	4	1	1	–	–
20	हरेत s/o मूला	6	6	4	3	2	3	2	2	1	1	3	2
21	रामकेश s/o हरेत	–	3	–	1	–	2	–	1	–	1	–	1
22	गिरधारी s/o बद्री	6	7	2	3	4	4	1	2	1	3	5	7
23	हजारी s/o बद्री	6	6	2	2	4	4	1	2	1	3	19	8
24	जगदीश s/o बद्री	5	7	2	2	3	5	2	2	2	3	4	4
25	रघुवीर s/o बद्री	2	3	1	1	1	2	1	1	–	–	10	6
26	हरिचरण s/o परसादी 'कामर'	10	7	6	5	4	2	4	5	–	–	24	38
27	रामचरण s/o परसादी 'कामर'	4	5	4	4	–	1	3	3	–	–	6	7
28	मुरारी s/o रामस्वरूप	10	8	7	4	3	4	2	4	2	3	6	8
29	घनश्याम s/o हरिचरण	–	4	–	1	–	3	–	1	–	1	–	–
30	शिवचरण s/o मंगल	7	5	3	2	4	3	1	2	–	2	4	2
31	रामकरण s/o मंगल	6	6	5	5	1	1	4	5	–	–	3	3
32	गणपत s/o मंगल	6	8	2	2	4	6	1	1	–	3	–	2
33	चिम्मन s/o मंगल	5	6	2	3	3	3	–	1	–	1	2	1
34	चिरंजी s/o मंगल	3	4	2	3	1	1	–	2	–	–	4	2
35	हरिगिलास s/o मंगल	4	4	2	2	2	2	1	1	1	1	4	5
36	रामजीलाल s/o मदन	7	8	4	5	3	3	1	2	1	1	23	27
37	हरिकेश s/o रामकरण	1	1	1	1	–	0	1	0	–	–	–	–
38	रामदयाल s/o किशोरी 'मेहता'	1	1	1	1	–	0	–	0	–	–	14	19
39	महेन्द्र सिंह s/o शिवचरण	–	3	–	1	–	2	–	1	–	–	–	2
40	राधे s/o शंकरनाथ	8	8	7	7	1	1	–	1	–	–	5	6
	कुल योग →	208	236	115	129	91	107	83	97	29	47	209	229

सपोटरा, जिला–करौली (राजस्थान)

तुलनात्मक अध्ययन)

पशु–धन				दूध		कृषि भूमि		फसल की मात्रा (क्वि. में)							कुल वार्षिक आय (रु. में)	
भैंस		बकरी		(कि.ग्रा. में)		(बीघा में)		काम से पहले 1997 में		काम के दौरान 2009 में		काम के बाद 2013 में				
वर्ष 2009	वर्ष 2013	वर्ष 2009	वर्ष 2013	वर्ष 2009	वर्ष 2013	वर्ष 2009	वर्ष 2013	बाजरा	धान	धान	गेहूँ	बाजरा	धान	गेहूँ	वर्ष 2009	वर्ष 2013
10	9	50	85	4	13	6	8	12	–	19	25	–	12	30	100000	50000
8	9	2	–	3	9	6	10	12	–	20	23	–	15	50	18700	300000
7	11	–	–	5	26	6	7	7	–	17	15	–	9	35	36000	100000
8	10	–	–	8	12	6	7	7	–	14	15	–	10	33	36500	100000
3	7	–	–	2	5	3	2	–	–	15	8	–	4	8	18000	50000
–	7	–	–	–	5	–	2	–	–	–	–	–	5	8	–	20000
8	9	–	–	6	10	7	10	20	–	30	35	–	13	50	60000	300000
12	13	–	–	5	10	8	8	15	–	30	35	–	15	47	60000	150000
4	5	–	–	5	6	5	3	5	–	8	14	–	18	22	23000	30000
6	8	–	–	8	12	5	3	5	–	13	15	–	11	18	48000	100000
3	4	32	33	5	6	5	3	5	–	9	15	–	10	22	54000	80000
4	8	–	–	4	4	5	3	5	–	12	7	–	12	22	40000	60000
14	29	65	71	10	18	5	10	15	–	20	10	–	25	40	40000	275000
13	23	65	71	10	20	5	10	15	–	22	15	–	30	40	45000	300000
15	40	–	70	12	35	5	10	15	–	20	15	–	40	40	48000	550000
3	7	2	4	3	6	5	3.5	5	–	10	7	–	9	16	14500	90000
5	7	–	–	5	7	5	3.5	5	–	15	18	–	5	13	32000	50000
4	8	–	–	1	4	4	7	15	–	15	5	–	12	7	18000	80000
5	5	–	–	5	5	9	7	8	–	25	8	–	10	12	45000	50000
9	6	–	30	3	–	5	3.5	7	–	15	5	–	12	10	70000	60000
–	2	–	–	–	–	–	1	–	–	–	–	–	6	4	–	30000
5	6	12	32	3	5	7	3.5	5	–	12	10	–	9	10	28000	60000
2	6	–	–	5	5	7	3.5	5	–	10	12	–	8	10	23000	50000
3	2	–	–	5	6	7	3.5	5	–	10	13	–	10	12	27000	60000
3	5	–	–	7	7	7	3.5	5	–	11	14	–	6	15	25000	60000
12	24	2	40	10	37	14	19	30	–	14	65	–	20	50	11400	300000
1	3	–	–	–	8	1	18	5	–	5	4	–	40	40	6000	200000
2	6	–	–	4	6	7	18	21	–	21	3	–	30	30	30000	100000
–	2	–	36	–	5	–	2.5	–	–	–	–	–	20	15	–	110000
3	1	–	–	1	–	7	5	15	–	15	–	–	5	–	15000	15000
1	2	20	32	2	3	3.5	3	5	–	10	6	–	9	10	18500	60000
5	8	25	76	3	4	2	3	5	–	12	3	–	10	10	15300	60000
3	8	1	40	2	7	3	3	5	–	9	5	–	9	9	18000	50000
4	3	–	–	2	4	3	3	5	–	7	7	–	6	–	15000	60000
6	7	4	4	2	3.5	2.5	3	7	–	7	12	–	5	14	14000	35000
–	2	–	–	3	3	7	4	4	–	20	6	–	22	13	35000	60000
–	–	–	–	–	–	7	4	–	–	3	5	–	6	5	6000	20000
1	3	–	–	3	4	8	15	2	–	5	15	–	5	30	15000	20000
–	1	–	–	–	–	–	3	–	–	–	–	–	4	–	–	10000
–	–	45	17	–	–	3	1	–	–	–	–	–	–	4	15000	60000
192	316	325	641	156	320.5	201	240	302	–	500	470	–	507	804	11,23,900	42,15,000

रायबेली की कायापलट

अभी 17 जनवरी 2013 को मैं 'वैल्स फोर इण्ड़िया' के श्री ओम प्रकाश जी के साथ क्षेत्रीय भ्रमण के लिए सपोटरा की डाँग में गया था; वहाँ रायबेली के 'छैंडवारा ताल' के नीचे के खेतों में यहाँ के कन्हैया लाल गुर्जर से हमारी से भेंट हो गई। हमें देख कर वह बहुत खुश हुआ। उसने कहा– ''आप इन खेतों में जो फ़सल देख रहे हैं, वह इस 'छैंडवारा ताल' की ही देन है और 'छैंड वारा ताल' आप की देन। उस समय हमारे साथ करौली के कुछ पत्रकार साथी भी थे। उन्होंने जब कन्हैया लाल गुर्जर से पूछा कि आपके गाँव में पानी का काम कैसे शुरू हुआ ? तो उन्होंने भाव–विभोर होकर बड़े ही कृतज्ञता भाव से बताया– ''मेरी काफ़ी अर्से से तमन्ना थी कि हमारे गाँव के 'छैंडवारा ताल' को किसी

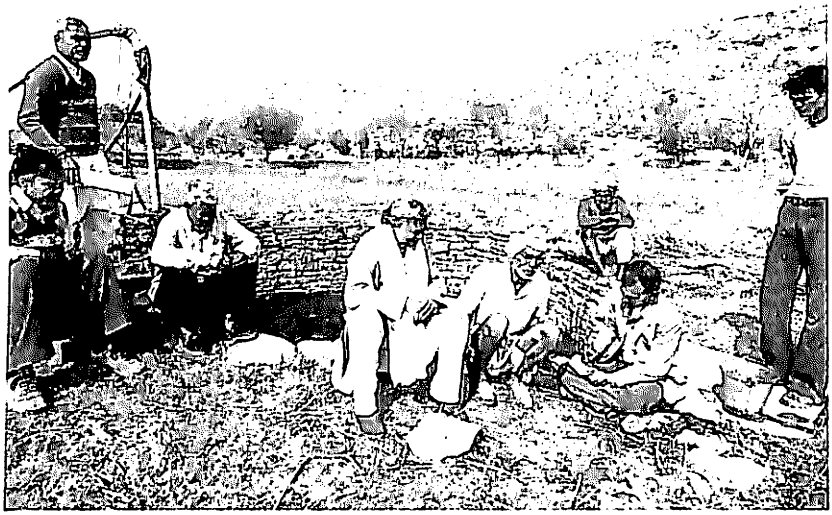

तरह से इतना बड़ा कर दिया जाय, जिससे पूरे गाँव की ज़मीन को हमेशा पानी मिलता रहे; तो बहुत अच्छा रहे। इसके लिए हमने सरकार के विभागों में भी काफ़ी दौड़–धूप की थी; पर किसी ने भी हमारी बात नहीं सुनी। फिर भी हम गाँव के सभी लोग जब–तब प्रयास करते रहे। इसी दरम्यान हटियाकी गाँव में 'तरुण भारत संघ' के कार्यकर्ता कर्ण सिंह और चमन सिंह का आगमन हो गया था। ये लोग 'वर्षा–जल संरक्षण' के लिए लोगों को प्रेरित करने का काम कर

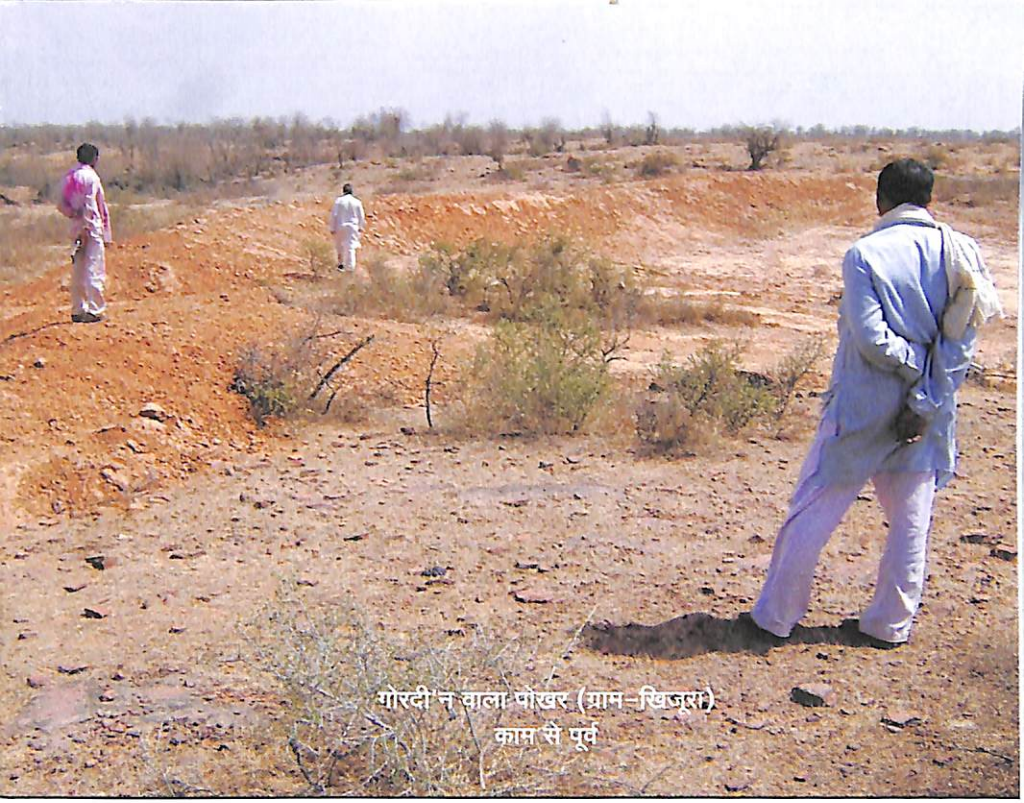

गोरदी'न वाला पोखर (ग्राम-खिजूरा)
काम के बाद

'महेश्वरा नदी' जलागम क्षेत्र में तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से निर्मित जल–संरक्षण–संरचनाएँ

(वर्ष 1985 से मार्च 2013 तक)

तहसील–सपोटरा, जिला–करौली (राजस्थान)

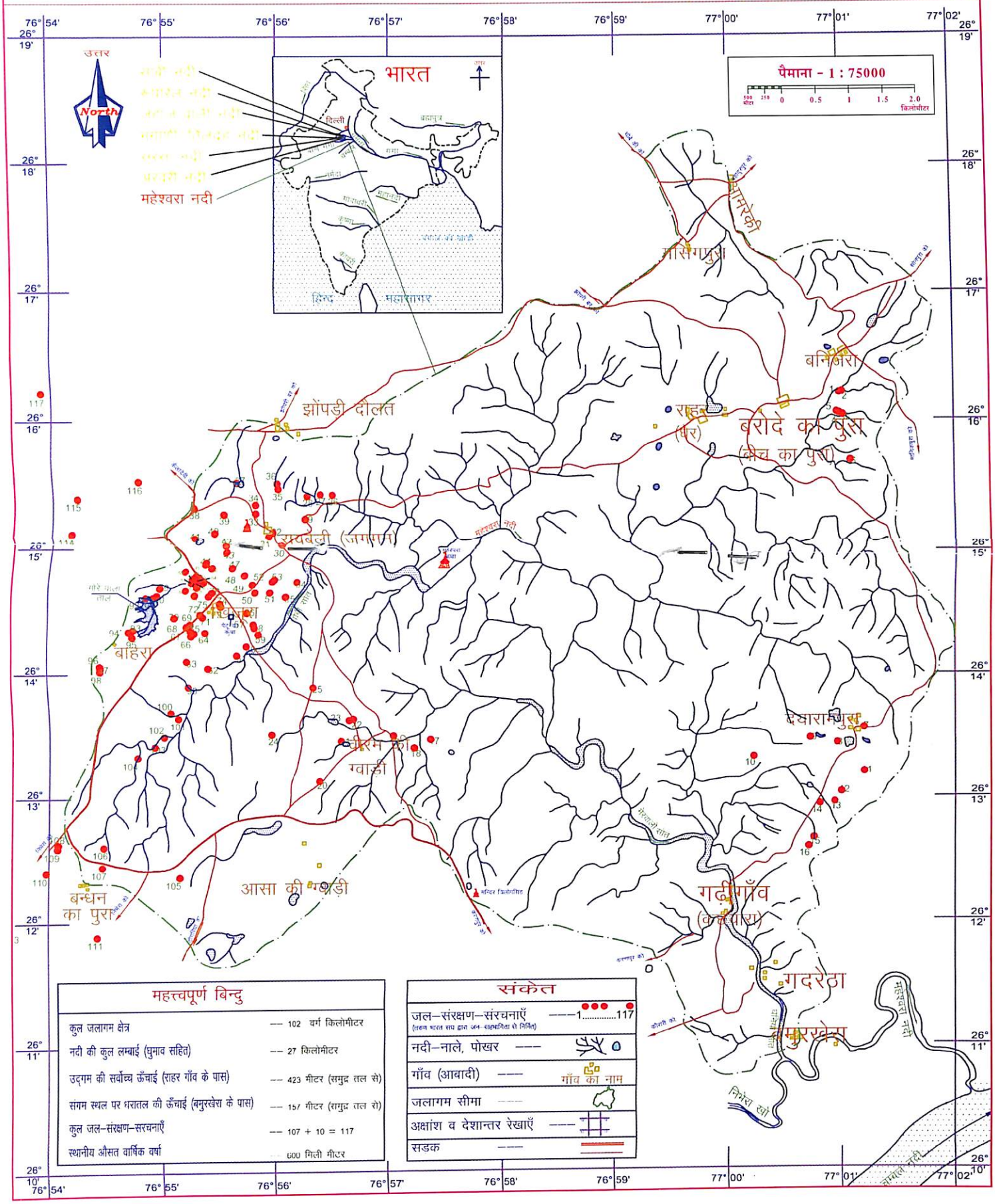

महत्त्वपूर्ण बिन्दु	
कुल जलागम क्षेत्र	— 102 वर्ग किलोमीटर
नदी की कुल लम्बाई (घुमाव सहित)	— 27 किलोमीटर
उद्गम की सर्वोच्च ऊँचाई (राहर गाँव के पास)	— 423 मीटर (समुद्र तल से)
संगम स्थल पर धरातल की ऊँचाई (बमुरखेरा के पास)	— 157 मीटर (समुद्र तल से)
कुल जल–संरक्षण–सरचनाएँ	— 107 + 10 = 117
स्थानीय औसत वार्षिक वर्षा	600 मिली मीटर

संकेत	
जल–संरक्षण–संरचनाएँ (तरुण भारत संघ द्वारा जन–सहभागिता से निर्मित)	——1.....117
नदी–नाले, पोखर	——
गाँव (आबादी)	—— गाँव का नाम
जलागम सीमा	——
अक्षांश व देशान्तर रेखाएँ	——
सड़क	——

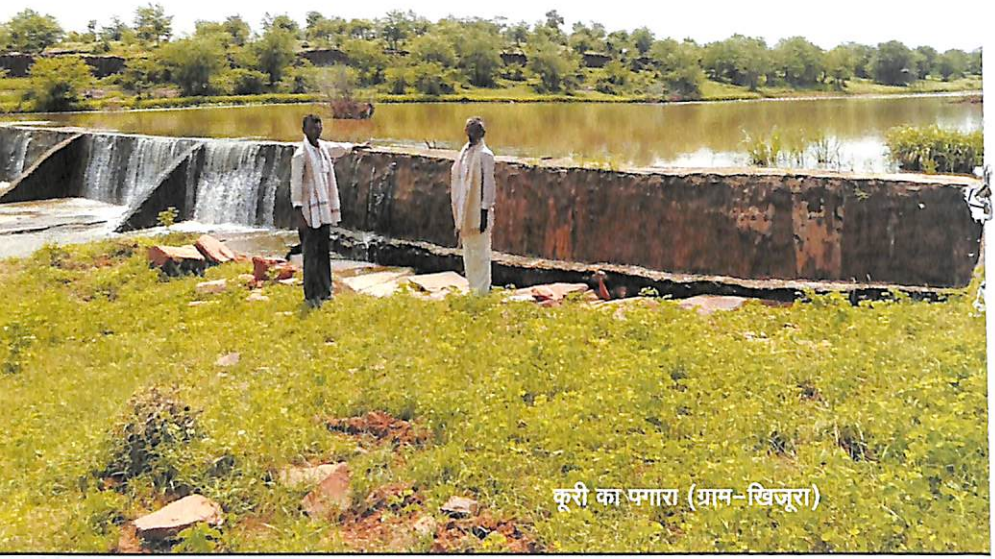

कूरी का फगारा (ग्राम-खिजूरा)

जोत वारा ताल (ग्राम-रायबेली)

रहे थे। जल-संरक्षण हेतु काम की बात सुन कर मैंने भी अपने गाँव में छैंडवारा ताल को तथा पानी के अन्य कार्यों को करवाने के लिए मन में विचार किया। कर्ण सिंह से मेरा पहला सम्पर्क हटियाकी गाँव में ही हुआ था। हटियाकी गाँव में उसका आना-जाना था और मेरा बड़ा बेटा मोहर सिंह भी हटियाकी गाँव में ही मुखे गुर्जर की बेटी मीरा को ब्याहा था। इसलिए हमारा भी वहाँ आना-जाना होता रहता था। संयोग से एक बार वहीं पर मेरी मुलाकात कर्ण सिंह से हो गई। बातचीत के दौरान हमें पता लगा कि वे लोग वर्षा-जल को रोकने के लिए डाँग क्षेत्र के गाँवों में जन-जागृति का काम कर रहे हैं। मैंने उनसे भी अपने गाँव में एक बड़ा ताल बनाने का आग्रह किया। कर्ण सिंह ने हमें आश्वासन दिया और कुछ दिन बाद मिलने को कहा। कुछ ही दिन बाद उनका स्टाफ खिजूरा गाँव में आ गया। खिजूरा में 'मोरे वाले ताल' का काम शुरू हो चुका था। उस काम के लिए वे कारीगर, बेलदार आदि की व्यवस्था हेतु हमारे गाँव रायबेली में भी आते-जाते थे। सम्पर्क बढ़ता गया। मैंने भी अपने गाँव में सर्वप्रथम निजी तौर पर एक पोखर (मूसेवारी पोखर) बनवाई।

इसी दौरान एक दिन कर्ण सिंह ने मुझे बताया कि दिल्ली में तरुण भारत संघ की तरफ से एक मीटिंग है। अगर बड़ा ताल बनाने के लिए, आपके गाँव के

लोगों की एक चौथाई श्रमदान करने की तैयारी हो तो आप भी दिल्ली चलो। वहाँ मीटिंग में कुछ अच्छी बातें भी सुनेंगे और भाई साहब से ताल के बारे में बात भी हो जायेगी। यह सुन कर मेरी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। 'अन्धा क्या चाहे दो आँख'। मैं तुरन्त तैयार हो कर कर्ण सिंह के साथ दिल्ली के लिए चल दिया। हमारे साथ खिजूरा गाँव के रूप सिंह सरपंच, रूपा, रमेश व रामसिंह वगैरह भी गये थे। हम दिल्ली में मीटिंग के समय पर पहुँच गये। मीटिंग शुरू हुई। मुख्य रूप से बरसात के पानी को रोकने व नदियों को प्रदूषण-मुक्त करने के बारे में बातचीत हुई। मीटिंग के दौरान ही समय मिलने पर हमने भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी से बातचीत की। उन से मैंने अपने गाँव में एक बड़ा ताल (छैंडवारा ताल) बनाने का आग्रह किया। भाई साहब ने छूटते ही कहा कि हम तो हमारे हिस्से का सहयोग करने को तैयार हैं। अगर तुम्हारे भी गाँव में श्रमदान की तैयारी हो, तो बताओ? मैंने चौथाई श्रमदान करने की तैयारी करने की बात कहने का मन में विचार किया, तभी मेरे अन्तर्मन में पता नहीं क्यों ? छैंडवारा ताल को जल्दी से जल्दी बना देने के लालच में झूठ बोल देने का विचार आ गया। मैंने तुरन्त ही सम्भलकर कहा कि हमारे गाँव की तरफ से तो हमने पहले ही सत्तर हजार रुपये इकट्ठा कर रखे हैं। जरूरत पड़ेगी तो और भी इकट्ठा कर लेंगे। यह सुनकर भाई साहब ने खुश हो कर हमें शीघ्र ही 'छैंडवारा ताल' का काम शुरू करने का आदेश दे दिया।

गाँव में वापस आकर हमने गाँव की मीटिंग की। दिल्ली में मैंने श्रमदान का पैसा इकट्ठा किये बिना ही, इकट्ठा कर के रखे होने की जो बात कह दी थी; उस झूठ को सही सिद्ध करना अब हमारे सामने एक बड़ी चुनौती थी। गाँव की मीटिंग में जब श्रमदान हेतु पैसा इकट्ठा करने की बात आई तो सब ने विचार-विमर्श करके तय किया कि इस ताल से जितनी भूमि सिंचित अथवा प्रभावित होगी; उतनी ही जमीन के पेटे प्रति बीघा एक हजार रुपये का श्रमदान सभी जमीन-मालिक करेंगे। हमने स्वयं ही फ़ीते से नाप-नाप कर ताल से सम्भावित सिंचित भूमि का रक़बा निकाला; जो लगभग 70-75 बीघा आया। इस पैमाइश में ऐसी भूमि को भी शामिल कर लिया गया

था, जो पूर्व में जोती जाने वाली ज़मीन के अलावा भविष्य में सिंचित होना सम्भावित थी ।

पहली उगाही में ज़मीन के आधार पर 75 हजार रुपये की उगाही हुई । कम पड़ने पर पुनः उगाही की गई, जो पहले वाली उगाही सहित कुल मिला कर एक लाख रुपये के लगभग हो गई थी । तीन चौथाई योगदान संस्था की तरफ से था ही; काम शीघ्रता से शुरू हो गया । काम दो चरणों में हुआ । पहले चरण में काम ट्रैक्टरों से शुरू हुआ; कुछ समय बाद दूसरे चरण में जे.सी.बी. व डम्फरों से काम हुआ । इस प्रकार संस्था और गाँव के सहयोग से 'छैंडवारा ताल' का काम बड़े ही उत्साहवर्धक तरीके से पूरा हो गया ।

पहली ही बरसात में जब ताल में पानी भरा तो इसके नीचे की पूरी ज़मीन चालू हो गई । इस ज़मीन में दो-दो फ़सलें पैदा होने लगीं । पहले, बरसात की फ़सल में केवल धानी की फ़सल ही करते थे, जो बरसात के बाद सिंचाई नहीं हो पाने के कारण प्रायः सूख जाती थी । अब भी बरसाती

फ़सल के रूप में धानी ही करते हैं, पर अब ताल के पानी से सिंचाई स्वतः होती रहती है। पहले 'लकरा' व 'राता' किस्म की धानी की फ़सल करते थे; जिसका भाव अपेक्षाकृत कम होता था। अब 'राता' के अलावा 'ग्यारह सौ इक्कीस', 'सुगन्धा' व 'रेशम बाँसा' किस्म की धानी भी करने लगे हैं। इनका भाव अपेक्षाकृत अधिक होता है। पहले गेहूँ बिल्कुल नहीं होता था; अब रबी की फ़सल में गेहूँ भी पैदा होने लगा है। इस की पैदावार एक बीघा में 10 क्विंटल तक हो जाती है। इस प्रकार 'छैंडवारा ताल' तथा अन्य ताल–पोखरे व पगारों के बन जाने से हमारे गाँव की तो कायापलट ही हो गई है।''

कन्हैया लाल गुर्जर जल की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि प्रातः काल आचमन हेतु जल–स्पर्श करते समय यह वाणी बोलनी चाहिये–

जल मिले शिव मिले, जल मिले हरि मिले, जल मिले जगदीश मिले।
जल मिले स्वामी मिले, जल मिले वैकुण्ठ मिले, जल मिले राम मिले॥
जल मिले आराम मिले, जल मिले विष्णु भगवान मिले।
जल की माया, जल की काया, जल का सकल पसारा।
जल से ही सब जीव जगत है, जल से सब संसारा॥

आज के जलवायु–परिवर्तन से क्षुब्ध होकर कन्हैया लाल गुर्जर कहते हैं कि अब तो औस की तरह से बरसात होने लगी है। इस सम्बन्ध में वे एक दोहा सुनाते हैं–

बरखा बरसी रैन में, भीजत सब बनराय।
घड़ो न बूड़े नीर में, पंछी प्यासो जाय॥

अब हम खुश हैं...

रायबेली के हरीसिंह व जगरूप ने बताया कि हमारे गाँव में पानी का काम करने में ग्राम वासियों का तन, मन और धन तीनों लगे हैं। संस्था की तरफ से यहाँ पर सबसे पहले कर्ण सिंह आया था। उसी ने यहाँ पानी के काम शुरू करवाये थे। गाँव में निजी पोखरों के काम ज्यादा हुए, पर 'छैंड़वारा ताल' का काम सार्वजनिक रूप से शुरू हुआ। इस काम में प्रति बीघा साढ़े बारह सौ रुपये की उगाही तय की

गई । यद्यपि काम से पूर्व गाँव में लगभग पचास बीघा ही ज़मीन चालू थी, पर ताल के बन जाने के बाद कुल 70-75 बीघा जमीन चालू होना सम्भावित थी। इस ताल के निर्माण में श्रमदान का लगभग एक लाख रुपया गाँव की तरफ से दिया गया ; बाक़ी संस्था ने लगाया।

पहले चालू जमीन कम थी और पानी भी कम था, इसलिए धानी की फ़सल भी कम होती थी। इसके अलावा धानी का भाव भी पहले कम था। इसके विपरीत अब चालू ज़मीन भी पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ गई है और पानी भी पर्याप्त हो गया है तथा धानी का भाव भी पहले से अधिक बढ़ गया है। गेहूँ की फ़सल, जो पहले बिल्कुल नहीं होती थी, अब अच्छी होने लगी है। अब इसकी पैदावार 10 से 12 क्विंटल प्रति बीघा हो जाती है। इस प्रकार 'तरुण भारत संघ' के सहयोग से ताल, तलाई, पोखर व पगारों के बन जाने से अब यहाँ दो-दो फ़सलें पैदा होने लगी हैं। अब हम खुश हैं।

रायबेली के ही रूपसिंह व रामसिंह बताते हैं कि पानी का काम हो जाने के बाद यहाँ पर धानी की फ़सल में बढ़ोतरी हुई है और गेहूँ, जो पहले ना के बराबर था, अब अच्छा पैदा होने लगा है। पशुधन में भी वृद्धि हुई है। पहले गाय-भैंस का दूध बेचने का चलन नहीं था ; पर अब दूध बेचने लगे हैं। वर्तमान में यहाँ लगभग 150 भैसें, 100 गायें, 500 बकरियाँ, 50 भेड़ें व चार ऊँट हैं। इनमें से 20 प्रतिशत पशु दूध देने वाले हैं। यहाँ दूध, दही, घी व छाछ होने लगा है। दही को बिलो कर छाछ बनाने व घी निकालने का काम आज भी यहाँ की महिलाएँ बड़े चाव से करती हैं।

धम्पूरी को मिला सुकून

रायबेली के गोठे की पत्नी धम्पूरी ने, अपने खेत में काम करते समय पूछने पर बताया कि हमारे पोखर में पानी होने के कारण हमारे खेत में धानी तो हुई ही थी, पिछले वर्ष हमारे खेत में पहली बार 15 क्विंटल गेहूँ भी हो गया था। भरपूर पानी होने के कारण अब की बार भी रामजी की कृपा रही तो अच्छी पैदावार होने की उम्मीद है। बस ! मौज़ हो गई है।

महेश्वरा में 'मोहन दास बाबा'

रायबेली के कन्हैया लाल गुर्जर बताते हैं– ''लगभग 30–32 वर्ष पूर्व 'मोहन दास बाबा' नाम के एक सन्त आगरा की तरफ से कैलादेवी के स्थान पर आये थे। वहाँ पर डाँग क्षेत्र के लखरूकी गाँव के अंगद से उनका सम्पर्क हो गया। अंगद से उन्होंने साधना के लिए एकांत स्थान बताने को कहा। अंगद ने कैलादेवी के दक्षिण में करणपुर जाने वाले रोड़ के पास स्थित 'केदार की गुफा' का स्थान बताया; पर बाबा ने कहा, वहाँ पर तो दर्शनार्थियों का आना–जाना ज्यादा रहता है, कोई निर्जन स्थान बताओ। तब अंगद ने खिजूरा व रायबेली के पूर्व में स्थित 'महेश्वरा बाबा' के स्थान के बारे में बताया। 'मोहन दास बाबा' ने वह स्थान दिखाने को कहा । अंगद उनको 'महेश्वरा बाबा' का स्थान दिखाने के लिए मेरे पिताजी (श्यामा गुर्जर) के पास रायबेली में छोड़ कर चला

गया । वह वैशाख का महीना था । पिताजी ने उन्हें महेश्वरा बाबा का स्थान दिखाया । मोहन दास बाबा को वह स्थान पसन्द आ गया । वे वहाँ रहने लगे । आवश्यक सामग्री गाँव से पहुँचा दी जाती थी । बाबा भी कभी-कभी गाँव में आते-जाते रहते थे ।

दो-तीन महीने बाद एक दिन 'मोहन दास बाबा' को मरम्दा गाँव के 'कैरीमील' नाम के स्थान से 'बालकनाथ बाबा' के कर्ण-छेदन कार्यक्रम का निमन्त्रण मिला । निर्धारित तिथि को दोपहर से पूर्व बाबा मोहन दास जी 'महेश्वरा बाबा' के स्थान से रवाना हो कर रायवेली में हमारे घर आ गये । दोपहर को घर पर विश्राम किया । दोपहर बाद बाबा अचानक उठे और पिताजी से कहा कि भैया! अब तो महेश्वरा से हमारे 'रामजी' का हुकुम आ गया है, इसलिए अब हम वापस महेश्वरा ही जा रहे हैं । यह कह कर वे चलने लगे, तब पिताजी उन्हें धवनिया की खरकाली तक छोड़ कर आये । आगे वे अकेले ही महेश्वरा को चल दिये । रास्ते में से बाबा, नीम के झौंरा (टहनियाँ) भी साथ ले गये थे ।

दूसरे दिन मरम्दा गाँव का एक बढ़ई, जो रोधई गाँव से अपनी बहिन के यहाँ से, राहर होता हुआ मरम्दा की तरफ आ रहा था । रास्ते में वह 'महेश्वरा बाबा' के स्थान पर दर्शनार्थ चला गया । वहाँ वह देखता है कि 'बाबा मोहन दास' नीचे खोह में एक पटिया पर नीम के झौंरा बिछा कर चादर ओढ़ कर सोये हुए हैं । बढ़ई ने उन्हें आवाज लगाई, पर किसी प्रकार की हलचल नहीं हुई । उसे संदेह हुआ, उसने चादर उठा कर देखा तो पता लगा कि वे देह छोड़ चुके हैं । बढ़ई तुरन्त रायवेली में हमारे घर आया । उसने हमारे पिताजी को सारा हाल बताया । पिताजी ने पूरे गाँव वालों को यह वाक़या बताया और चर्चा कर के इस घटना की जानकारी स्थानीय पुलिस थाने में दी । पुलिस ने शव की जाँच कर के अन्तिम संस्कार करने की स्वीकृति दे दी । श्रावण का महीना था, बरसात हो रही थी । आस-पास के गाँवों के उपस्थित सभी जनों ने बरसात का मौसम और बहते हुए नाले को देख कर अग्नि-दाह न देकर जल-दाह देने का विचार कर लिया । मृत देह को 'महेश्वरा नदी' में बहा दिया गया । इस प्रकार बाबा मोहन दास इस विख्यात धार्मिक स्थल पर स्वेच्छया समाधिस्थ हो गये ।

वीरमकी गाँव पानीदार हुआ

वीरमकी गाँव में वर्तमान में 20–25 घर काँवर गोत्र के गुर्जरों के हैं, एक घर दड़गस तथा एक घर खटाना गोत्र के गुर्जरों का भी है। बैरवा समाज के 14 घर हैं। ये टोंटा गोत्र के हैं। यहाँ स्कूल पाँचवीं तक है। लोग भैंस, गाय और बकरी रखते हैं।

वीरमकी गाँव में एक पुरानी हवेली है, जिसे यहाँ के लोग 'जाग' कहते हैं। किसी जमाने में इस जाग में आसपास के बीसियों गाँवों के लोग खरीद–फ़रोख्त के लिए आते थे। कर्णपुर कस्बा यहाँ से छः किलोमीटर दूर है। उस जमाने में करणपुर से लगभग डेढ़ सौ लोग (महिला–पुरुष) छाछ की तलाश में वीरमकी गाँव में आते थे। वे प्रति व्यक्ति 15 से 20 लीटर 'छाछ' (मठा) यहाँ से ले जाते थे। इसी बात से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि वीरमकी गाँव किसी जमाने में कितना समृद्ध था ?

आजादी के बाद गाँव के जंगलों का स्वामित्व गाँव के हाथ से छिन गया। जंगलात विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को गाँव का जंगल संरक्षित करने की नौकरी दी गई थी, पर वे अपने आप को नौकर की जगह जंगल का मालिक समझने लगे। गाँव समुदाय, जो जंगल का वास्तविक मालिक था, उसे पराया मान लिया गया। धीरे–धीरे गाँव भी अपने आप को पराया ही मान कर विभाग को ही मालिक मानने को विवश हो गया। फलतः जंगल नष्ट हुए और सरकार ने भी इसे बाकायदा नष्ट करने के लिए कोयला बनाने के ठेके भी दे दिये। परिणामस्वरूप गाँव की तो ज़िन्दगी ही, बस ! कोयला हो गई। जंगल गया तो पानी गया और पानी गया तो खेती भी गई और गया पशुधन भी। 80 के दशक में वही वीरमकी गाँव जो कभी दूसरों को भर–भर हथेली देता था, वह अब दूसरों के सामने हथेली फैलाने को मजबूर हो गया। गाँव एक अजीब स्थिति में आ कर खड़ा हो गया। किंकर्त्तव्यविमूढ़ ! कुछ समझ में नहीं आता था, कि क्या करें ? पर यहाँ भी प्रेरणा ने एक नई दिशा दी।

वीरमकी गाँव का अंगद गुर्जर अपने गाँव के ही कुछ लोगों के साथ अपनी खोयी हुई भैंसों को ढूँढ़ने पड़ौसी गाँव खिजूरा में गया था। संयोग से वहाँ की थाँईं (चौपाल) पर बैठ कर गाँव के लोग अपने गाँव के 'मोरे वाले ताल' के काम के बारे में चर्चा कर रहे थे। अंगद व उसके गाँव के लोगों ने वह सब सुना। बात समझ में आई। अंगद को अपनी खोयी हुई भैंसें मिलीं या नहीं मिलीं ? पर उनके गाँव को आशा की एक नयी किरण जरूर मिल गई। बाद में अंगद के आग्रह पर और खिजूरा के लोगों के कहने पर, तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं ने, वीरमकी गाँव में भी जाकर पानी के काम के लिये एक मीटिंग की। गाँव संकट में तो था ही, पानी के काम के लिये श्रमदान करने के लिये तुरन्त तैयार हो गया। अगली अमावस्या को फिर एक मीटिंग हुई, परिणामस्वरूप 'रिचूदा वाले ताल' का काम शुरू हो गया। शीघ्र ही गाँव वालों की मेहनत व लगन से 'रिचूदा वाला ताल' बन कर तैयार हो गया। इस ताल से 27 काश्तकारों की 81 बीघा ज़मीन सिंचित होती है। अब इसमें बाजरे की जगह धानी होने लगी है और गेहूँ, जो पहले बिल्कुल नहीं होता था, अब खूब पैदा होने लगा है।

यहाँ के मोहर सिंह, ब्रजवासी, रामजीलाल, भगवंत व बच्चू कहते हैं– ''गाँव में पानी हेतु ताल, पोखरे व पगारों के बन जाने से धानी की फ़सल अच्छी होने लगी है। पहले गेहूँ बिल्कुल भी पैदा नहीं होता था; अब तो गेहूँ खूब पैदा होने लगा है। पहले पानी होली से पूर्व ही खत्म हो जाता था, अब वर्ष भर पानी रहता है। रामजी की मौज़ है।''

मोनदारी की घेर में बना 'सिद्ध सरोवर ताल' यहाँ का सबसे उपयोगी ताल है। इस ताल का शुभ मुहूर्त राजस्थान के प्रख्यात सर्वोदयी नेता एवं प्रसिद्ध गाँधीवादी वयोवृद्ध श्री सिद्धराज ढड्ढा के कर कमलों द्वारा वर्ष 2002 में लगाया गया था। यह ताल 2006 में बन कर तैयार हुआ। सिद्धराज जी ने यहाँ पर गाँव के लोगों को पानी का संरक्षण करने तथा देशी खाद व देशी बीज काम में लेते हुए ग्राम स्वावलम्बन की ओर बढ़ने की प्रेरणा भी दी।

'सिद्ध सरोवर ताल' पर उपस्थित 'केवल बैरवा' बताते हैं– ''इस ताल के बन जाने से अब हमारे खेतों में धानी की फसल अच्छी होने लगी है। पहले गेहूँ की पैदावार बिल्कुल भी नहीं होती थी, अब गेहूँ भी अच्छा पैदा होने लगा है।''

सिद्ध सरोवर से मिली सिद्धि

समाज जब अपना काम खुद करने लग जाता है तो उनकी सराहना कर के उत्साह बढ़ाने के लिए तथा उनके अच्छे कामों की सुगन्ध को सर्वत्र फैलाने के लिए बाहर के भी पथ-प्रदर्शक व विचारक लोग उनके साथ जुड़ जाते हैं। ऐसे लोग अपने लिए नहीं जीते, बल्कि उनका जीवन ही दूसरों को प्रेरणा देने के लिए होता है। ऐसे ही थे महान् सर्वोदयी विचारक सुप्रसिद्ध गाँधीवादी नेता वयोवृद्ध स्व. श्री सिद्धराज ढड्ढा। जो सपोटरा की डाँग क्षेत्र में आये थे।

सिद्धराज जी हमारे साथी कन्हैया लाल गुर्जर जगदीश गुर्जर, कर्ण सिंह, नरेन्द्र एवं भागीरथी राठौर के साथ 21 नवम्बर 2002 को जयपुर से रवाना हो कर सीधे डाँग क्षेत्र के खिजूरा गाँव में पहुँचे थे। शाम को वहाँ पहुँच कर उन्होंने गाँव के लोगों की एक बैठक की। सिद्धराज जी ने ग्राम-स्वावलम्बन व ग्राम-स्वराज्य की अवधारणा को साकार रूप देते हुए ग्राम-संगठन और ग्राम-कोष पर विशेष बल देते हुए ग्रामवासियों से कहा कि आप लोगों को अपने-अपने गाँव में आपसी फूट और गाँव की लूट को रोकने के लिए तन-मन-धन से जुट जाना चाहिये। उन्होंने रासायनिक खाद व संकरीकृत बीजों के उपयोग से होने वाली घातक बीमारियों व हानियों का खुलासा करते हुए देशी खाद और देशी बीज के उपयोग पर विशेष ज़ोर दिया। दूसरे दिन उन्होंने खिजूरा गाँव के महिला, पुरुष, बच्चों व संस्था के कार्यकर्ताओं के साथ मिल कर सैन्द्रिय खाद (कम्पोस्ट) बनाने का प्रयोगात्मक कार्य भी किया। उन्होने वहाँ खाद का गड्ढा खुदवा कर उसमें पान-पत्ते, कचरा आदि डाल कर गोबर का घोल बना कर छिड़कने व उस पर हल्की मिट्टी फैलाने की प्रायोगिक विधि भी समझाई। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों-जल,जंगल व जमीन- के संरक्षण पर भी विशेष ज़ोर दिया।

सिद्धराज जी दूसरे दिन 22 नवम्बर 2002 को दोपहर बाद उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं के साथ रायबेली गाँव में गये थे। वहाँ पर भी उन्होंने ग्राम-संगठन ग्राम-सभा, ग्राम-कोष, देशी खाद, देशी बीज व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर विस्तार से अपने विचार रखे। अगले दिन 23 नवम्बर 2002 को वहाँ पर पूर्व में किये गये जल संरक्षण कार्यों का अवलोकन कर, गाँव वालों द्वारा उनके रख-रखाव की जिम्मेदारी लेने की बात भी की।

दोपहर बाद वे, सब कार्यकर्ताओं के साथ पहले खिजूरा में आये, जहाँ लोगों से पुनः चर्चा हुई; फिर शाम को सब वीरमकी गाँव में चले गये। वहाँ पर भी गाँव की बैठक में उन्होंने अपने वही सब विचार गम्भीरता से रखे। (फोटो देखें पेज 41 पर) बैठक में लोगों ने बैरवा समाज (अनूसूचित जाति) के खेतों के ऊपर एक बड़ा ताल बनाने की गुज़ारिश भी की ; जिसे सबके साथ अगले दिन देखने की बात तय हुई। निर्धारित कार्यक्रमानुसार अगले दिन 24 नवम्बर 2002 को प्रातः उपस्थित कार्यकर्ताओं व गाँव के लोगों के साथ श्री सिद्धराज जी ने बैरवा समाज के खेतों के ऊपर 'मोनदारी की घेर' में एक ताल की नींव स्वयं अपने हाथों से रखवाई; क्योंकि पानी के अभाव में वहाँ का बैरवा समाज भूमि होते हुए भी भूमिहीनों की-सी ज़िन्दगी बसर कर रहा था। इसी पीड़ा से द्रवित होकर सिद्धराज जी ने इस ताल की नींव लगाई थी। प्रारम्भ में लोगों की पूरी तैयारी नहीं होने के कारण इस ताल का काम नहीं हो पाया, पर 2006 में लोगों की मेहनत व संस्था के योगदान से यह ताल बनकर तैयार हो गया।

पहली ही बरसात में यह ताल जब पानी से भर गया तो बैरवा समाज खुशी व श्रद्धा से विनयावनत हो उठा । उन्होंने सिद्धराज जी की प्रेरणा व प्रयास से बने इस ताल का नाम उन्हीं के नाम पर 'सिद्ध सरोवर ताल' रख दिया । यहाँ के 'केवल बैरवा' कहते हैं कि इस ताल के नीचे बैरवा समाज की 20 बीघा जमीन में आज खेती के लिए पानी का कोई संकट नहीं हैं। काम से पूर्व इनके खेतों में कभी-कभार बाजरा के अलावा कुछ भी पैदा नहीं होता था, पर अब धान और गेहूँ की बहुत अच्छी फ़सल होती है । सिद्धराज जी ढड्ढा व गाँव वालों की सिद्धि से बने इस 'सिद्ध सरोवर ताल' से वीरमकी गाँव के अब सारे काम सिद्ध हो गये है ।

दयाराम पुरा

दयारामपुरा के 90 वर्षीय बाबा बिशन बैरवा पानी के काम की बात करने का जिक्र सुनते ही तुरन्त फुर्ती से उठ बैठते हैं । वह बताते हैं -''संस्था और गाँव के संयुक्त प्रयास से बने 'पीपरवारा ताल', बमूर वारी पोखर, नास वारी पोखर तथा अन्य पोखर, पोखरों व पगारों के बन जाने से हमारे गाँव के खेतों में धानी की फ़सल अच्छी होने लगी है और अब तो गेहूँ की फसल भी पैदा होने लगी है । 'पीपरवारे ताल' के बन जाने से तो खेती को होने वाले लाभ के अलावा पशुओं को पीने का पानी तथा लोगों को नहाने-धोने व पीने का पानी भी वर्ष भर उपलब्ध रहने लगा है ।''

'बाबा बिशन' की याददास्ती इस उम्र में भी बड़ी तेज़ है । वे बहुत दिनों पहले एक बार तरुण भारत संघ के मुख्य कार्यालय भीकमपुरा में गये थे । भीकमपुरा गाँव का नाम लेते हुए उन्होंने बताया–''भीकमपुरा में संस्था के कार्यालय में हमको बरसात के पानी को रोकने की बात बताई गई थी । जिस काम को हमने आजादी के बाद मिलजुल कर स्वयं अपने श्रम से करना छोड़ दिया था; उसी काम की याद वहाँ पचास वर्ष बाद पुनः सुन कर एक तरह का सुखद आश्चर्य हुआ था । सोच कर अच्छा लगा कि पुरानी पीढ़ी के जल–संरक्षण के लुप्त होते जा रहे परम्परागत तरीकों को प्राथमिकता देने वाले कुछ नौजवान, आज की नई पीढ़ी में भी मौजूद हैं । मैं बड़ा उत्साहित हुआ और अपने गाँव में वापस आ कर पानी के काम की चेतना में जुट गया । प्रयास सफल हुआ और नतीजा सामने है, आज हम पानीदार हैं । पानी और अन्न के मामले में हम पूरी तरह से स्वावलम्बी हैं ।''

इसी गाँव के पण्डित जी गिर्राज शर्मा भी गाँव में हुए पानी के काम से बहुत खुश हैं । वे कहते है 'पीपरवारा ताल' तथा अन्य पोखर–पोखरों के बन जाने से अब हमारा गाँव पानी वाला गाँव बन गया है । पैदावार अच्छी होने लगी है । मन को संतुष्टी मिलती है । यहाँ के रमेश गुर्जर ने अपने गाँव में पानी के काम को कार्य रूप में परिणत करने में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है । इन्होंने गाँव के बुजुर्गों के सहयोग से गाँव का संगठन बनाया और सम्बन्धित लाभार्थियों का निर्धारित अंशदान भी जुटाया है । इन्होंने सार्वजनिक, सामुदायिक व निजी कामों के साथ–साथ अपने खेतों में भी पानी को रोकने का व्यवस्थित काम किया है । पानी का काम हो जाने के बाद अब वह पूर्णतः संतुष्ट हैं और अब भी वह लोगों को पानी के काम के लिए प्रेरित करते रहते हैं । इनके साथ नवयुवक कमलेश गुर्जर भी पानी के काम को आगे बढ़ाने में इनकी मदद करता है ।

बन्धन का पुरा के बन्धों का कमाल

बन्धन का पुरा के रघुवीर और उसकी पत्नी को तो लगा जैसे उन्हें कोई अकूत खजाना ही मिल गया हो । लगता भी क्यों नहीं, आर्थिक रूप से तंगी झेलते हुए भी उन्होंने न जाने कैसे, जैसे-तैसे कर के अपने पगारे का काम करवाया था । इस काम में उसके पूरे परिवार ने बड़ी ही मेहनत व लगन से काम किया था । काम से पूर्व वह कई बार अपनी आर्थिक असमर्थता जाहिर करते हुए अपनी साइट बनाने की बात कर चुका था । एक बार जब वहाँ काम देखने गया तो अपनी साइट पर से गुजरते समय मुझे रोककर रघुवीर की पत्नी विमला (अन्दू) ने उन्हें बड़ी ही आज़िज़ी से हाथ जोड़कर कहा था "भाई साहब ! हम

ग़रीब लोग हैं, 6 बेटियाँ हैं, पैसा तो हमारे पास है नहीं, पर शरीर से हम पूरी मेहनत करेंगे"। मैंने कहा कि अगर आप में इतनी हिम्मत है तो आपका काम निश्चित ही हो जायेगा । मैंने शीघ्र ही छोटे लाल मीणा को मार्च तक काम करने का निर्देश दे दिया । दूसरे ही दिन छोटे लाल की देखरेख में रघुवीर और उसके पूरे परिवार ने नींव खुदाई का काम चालू कर दिया । नींव खुदाई के बाद काम तेजी से शुरू हो गया और सही तरीके से चलता रहा । उनके सभी घर वालों ने उस काम में जी-जान से मेहनत की । शीघ्र ही उनका पगारा तैयार हो गया । रघुवीर और उसकी पत्नी का सपना साकार हो गया । पहली ही बरसात में उस

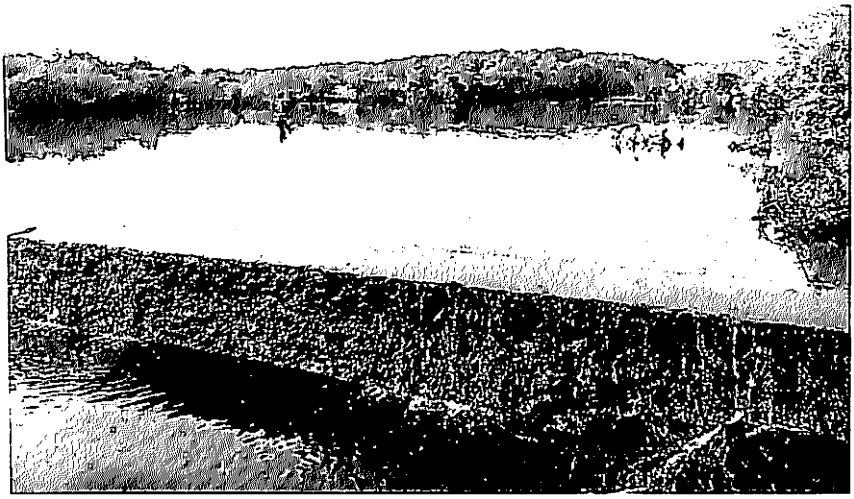

पगारे के कारण खेत में भरपूर पानी भर गया; जिससे पहली बार गेहूँ की फ़सल हुई। उनके चेहरों पर अब चमक है।

रघुवीर की ही तरह यहाँ के मूला, बीरबल, हरिसिंह, कमल, प्रीतम, रामावतार, प्रभु, ब्रजलाल, रामसिंह, रामजीलाल गोठिया व हजारी ने भी अपने-अपने खेतों में पगारे व पोखर, पोखरे बनाये हैं। यहाँ पानी रोके बिना न तो धान हो सकता है और न ही गेहूँ। पानी को रोक लेने से अब यहाँ पर दोनों फसलें अच्छी होने लगी हैं। अब वे सभी लोग अपनी-अपनी मेहनत के परिणाम देख कर अपने मन में बहुत खुश हैं।

कार्यकर्ताओं के अनुभव

जगदीश गुर्जर का अनुभव

जगदीश गुर्जर कहते हैं- ''सपोटरा की डाँग में तरुण भारत संघ द्वारा पानी का काम छोटे लाल गुर्जर के पूर्वानुभवों के आधार पर ही शुरू हुआ था। क्योंकि छोटेलाल गुर्जर ने वहाँ पर स्वतन्त्र रूप से कुछ समय शिक्षण कार्य किया था। उसको वहाँ पर पानी के अभाव से होने वाले संकट का अनुभव था। भाई साहब ने छोटे लाल से बात करके उन्हें गोवर्धन शर्मा और कर्णसिंह के साथ सपोटरा की डाँग में पानी के काम हेतु भेजा था। प्रारम्भ में उन्होंने कुर का मठ, मोरोची व हटियाकी आदि गाँवों में पानी के काम हेतु जन-जागृति की और कुछ काम भी शुरू करवाये। पर छोटेलाल व गोवर्धनजी किन्हीं कारणों से वहाँ ज्यादा समय नहीं रुक पाये। उनके वापस आने के बाद कर्णसिंह ने वहाँ के काम की कमान

सम्भाली। डाँग क्षेत्र के लोग कर्ण सिंह को प्यारा-दुलारा, सम्मानीय और विश्वसनीय जल-कार्यकर्ता मानते हैं। वे उसे 'कर्ण संस्थान' और 'दानवीर कर्ण' के नाम से भी याद करते हैं। कर्णसिंह के साथ पानी के काम में मैं, श्रवण शर्मा, चमनसिंह, रामभजन और माँगीलाल आदि कार्यकर्ता भी लगे रहे।

कर्णसिंह स्वाभाविक रूप से ही मिलनसार प्रवृत्ति का व्यक्ति है। इसीलिए इस क्षेत्र में उसकी पैठ जम गई। उसका नारा था- "आ जाओ गाँव वालो ! पानी के काम में जुट जाओ" धीर-धीरे उसका प्रभाव पूरे डाँग क्षेत्र में फैलता चला गया। वह आज भी सपोटरा के डाँग क्षेत्र में पानी के काम में जुटा हुआ है।

पानी के काम में डाँग के गाँवों के सभी लोगों का सहयोग रहा है, पर खिजूरा के देवनारायण बाबा, कल्याण बाबा, गिरधारी, जगदीश, रूपसिंह सरपंच और हरिचरण; रायबेली के कन्हैयालाल व हरिसिंह; वीरमकी के अंगद गुर्जर, मोहर सिंह व मूलचन्द तथा बन्धन का पुरा के रघुवीर, बीरबल व प्रीतम तथा दयारामपुरा के बिशन बाबा व रमेश गुर्जर आदि लोगों का विशेष योगदान रहा है। इन सब के अथक प्रयासों से आज महेश्वरा नदी बहने लगी है। यहाँ के खेत व कुँओं का जल-स्तर ऊपर आ गया है। यह एक प्रेरणादायी काम है। यहाँ पर कम वर्षा में भी पानी का संरक्षण कैसे करें? यह व्यावहारिक रूप में सीखा जा सकता है। इस सब का श्रेय यहाँ के सक्रिय लोगों को, जो गाँव के गौरव हैं, दिया जा सकता है।

चमन सिंह ने चमन किया डाँग को

संस्था के कार्यकर्ता चमन सिंह कहते हैं- "1997 से पूर्व मैं कोचर की डाँग में पानी का काम करता था। मेरे मन में विचार आया कि पानी का काम हमें ऐसे क्षेत्र में करना चाहिये, जहाँ अभी तक न तो सरकार पहुँची हो और न संस्थाएँ। विचार आया कि 'चम्बल का बीहड़' ऐसा क्षेत्र है, जहाँ अभी तक किसी प्रकार की सुविधा नहीं पहुँची है। 'चम्बल के बीहड़' का नाम सुनते ही हथियार-बन्द लोगों का चेहरा मानस-पटल पर आ जाता है। मैंने भी कभी 'फूलन दे' का नाम सुन रखा था। मन में एक अज्ञात भय तो था ही, पर वहाँ पर

काम करने का भी निश्चय पक्का था। मई 1997 में मैं भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी, और करौली के अरुण जिन्दल के साथ इस क्षेत्र में पहली बार पहुँचा। पहले दिन लखरूकी गाँव में गये; वहाँ की स्कूल में गाँव के ही शिक्षाकर्मी हुकम सिंह मीणा पढ़ाते थे। उन्होंने हमें सिंघाड़े वाले ताल को बनाने के लिए कहा। साइट देख कर भाई साहब ने बनाने का आश्वासन दे दिया। फिर उस दिन तो मैं भाई साहब के साथ अपने कार्य क्षेत्र अमावरा में आ गया, पर रात भर यही सोचता रहा कि वहाँ काम करूँ या नहीं करूँ ? एक तरफ हथियार बन्दों का अज्ञात भय तो दूसरी तरफ लोगों के दिल का दर्द मेरे मन में समाया हुआ था। मैं निर्णय नहीं कर पा रहा था।

कुछ समय बाद संस्था (तरुण भारत संघ) के मुख्य कार्यालय, तरुण आश्रम-भीकमपुरा में एक बड़ा सम्मेलन था। वहाँ पर वक्ताओं ने अपने-अपने विचार रखे थे। एक वक्ता ने बताया कि चाहे कितनी भी परेशानी आये, प्यासे को पानी और भूखे को अन्न उपलब्ध कराने वाला महान् होता है। बस! मेरे मन में यह बात बैठ गई। मैं पुनः सपोटरा की डाँग में पहुँच गया। मैंने लखरूकी गाँव के लोगों से श्रमदान की बात कर के उन्हे सिंघाड़े वाले ताल का काम शुरू करने को कह दिया। लोग भी खुश थे कि 'आम के आम और गुठलियों के दाम'। काम शुरू करवा कर मैं अपने पुराने कार्य-क्षेत्र में वापस चला गया।

पन्द्रह दिन बाद वापस आ कर मैंने देखा कि लोगों ने सिंघाड़े वाले ताल की पूरी मिट्टी निकाल कर पाल पर डाल दी थी। मैं उनका उत्साह देख कर आश्चर्य चकित था। मैंने गाँव के लोगों को काम की नाप कर के भुगतान करने का आश्वासन दे दिया। वहाँ पर उस गाँव का सरपंच भी मौजूद था। सरपंच ने कहा कि इस ताल के काम का भुगतान तो मैं अपनी ग्राम-पंचायत से करवा दूँगा। मैंने कहा कि जैसा आप लोगों को उचित लगे वही करो। बाद में मैंने भाई साहब को भी जब यह बात बताई तो उन्होंने भी यही कहा कि गाँव के लोग यदि सरपंच से अपने गाँव का काम करवा लेते हैं तो और भी अच्छी बात है। मैं वापस अपने पुराने क्षेत्र अमावरा में ही वापस आ गया।

फिर एक साल तक मैं उस क्षेत्र में नहीं गया । एक-दो वर्ष बाद हमने पुनः इस क्षेत्र में आना-जाना शुरू किया । सबसे पहले हमने वर्ष 2000 ई.में हटियाकी गाँव में एक सार्वजनिक तालाब बनाना शुरू किया । इसी के साथ वहाँ पर एक स्कूल के भवन का निर्माण कार्य भी शुरू किया । लोगों का सहयोग था । पर इस चलते हुए काम को एक हथियारबन्द ने गाँव में ही फूट (भेद) डाल कर बन्द करवा दिया । बाद में वहाँ के कमल भगत और रामचरण ने 15-20 दिन बाद प्रयास कर के पुनः किसी तरह से काम शुरू करवाया । स्कूल बन कर तैयार हो गया । इस स्कूल में गाँव के श्रमदान के अलावा संस्था की कुल 1,45,575 रुपये की लागत आई । स्कूल में संस्था की तरफ से ही एक शिक्षक नियुक्त कर दिया गया। गाँव के लड़के-लड़कियों को पढ़ने का अवसर मिला ।

डाँग क्षेत्र के अन्य गाँवों में भी बालक-बालिकाओं को पढ़ाने का काम शुरू किया गया । बाद में सब जगह सरकारी स्कूलों की व्यवस्था हो जाने पर शिक्षा की ज़िम्मेदारी उन्हें दे दी ।

इस क्षेत्र में काम शुरू करते समय प्रारम्भ में हमें कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ा, जिनमें से एक मुख्य परेशानी वहाँ पर 'बाग़ी' रूप में रहने वाले हथियार-बन्दों की थी । वे जब-तब हमारा काम बन्द करवा देते थे और हमें परेशान करते थे । पर वे गाँव वालों की बात बहुत मानते थे, इसलिए उनके कहने पर आख़िर हमें छोड़ दिया जाता था ।

एक बार मैं और कर्ण सिंह रावतपुरा गाँव में बैरवा समाज के तालाब पर ट्रैक्टरों से काम करवा रहे थे । अचानक वहाँ एक हथियारबन्द-दल आ गया । वे काम में लगे दोनों ट्रैक्टरों को लेकर जाने लगे, तब गाँव वालों के कहने पर उन्होंने एक ट्रैक्टर को तो 500 रुपये लेकर वहीं छोड़ दिया और दूसरा ट्रैक्टर ले जाकर एक जगह पर खड़ा कर दिया; जिसे बाद में 8000 रुपये लेकर छोड़ा ।

इसी प्रकार एक बार मैं और कर्ण सिंह नहनियाकी से रावतपुरा गाँव की ओर जा रहे थे; अचानक हमें वे लोग मिल गये । हम से पूछताछ करने लगे; कौन हो ? कहाँ से आये हो? क्या करते हो? आदि । हमने संस्था का परिचय

दिया और बताया कि हम, लोगों के सहयोग से पानी का काम करते हैं । हम ठेकेदार नहीं हैं, पैसे को ईमानदारी व पारदर्शिता से लगाते हैं । काफ़ी पूछताछ के बाद उन्होंने कहा कि चलो आप हमें अपनी मोटर साईकिल से अमुक जगह (मोरोची गाँव में) छोड़ दो । हमें मजबूरन उन्हें छोड़ना पड़ा । इस तरह से वे कभी भी, कहीं भी हमें मिल जाते थे ।

धीरे-धीरे उन लोगों की हमारे काम के बारे में समझ बनने लगी । उन्हें समझ आया कि ये लोग गाँव के लिए ही तो काम करते हैं और काम भी ईमानदारी से करते हैं, साथ ही पानी का काम तो सब के भले का ही काम है । यह सोच कर वे अप्रत्यक्ष रूप से हमारे काम में सहयोग भी करने लगे । वे गाँव के लोगों को भी कहते थे, कि आप संस्था का सहयोग लेकर पोखर व पगारों के काम ज्यादा से ज्यादा करवाओ । पानी के काम से स्वयं उनको भी तो सहूलियत होती थी । इनमें से कुछ लोगों ने तो पानी के काम से प्रेरित हो कर अपने हाथ की बन्दूकें ही छोड़ दी हैं और बन्दूक की जगह अपने हाथ में फावड़ा पकड़ लिया है ।अब ये सम्मान व स्वाभिमान से जीवन जीने लगे हैं ।

डाँग क्षेत्र के पानी के काम में स्वर्गीय जगदीश सिंह का भी बड़ा सहयोग रहा है ।

बाग़ी और पानी : श्रवण शर्मा

प्रारम्भिक दौर में पं. श्रवण शर्मा सपोटरा की डाँग के हटियाकी गाँव में किये गये पानी के काम का भुगतान करने गये थे। वहाँ से काम की चमक दूसरे

गाँवों तक भी पहुँचती और उसके नतीजे सामने आते; तभी एक नामी हथियार-बन्द बन्नू सैनी ने श्रवण शर्मा के नाम एक पर्ची लिख कर कहा-"आप जो भी भुगतान करते हो, उसमें हमारी चौथ दो; नहीं तो काम बन्द कर दो।" चौथ यानी चौथाई हिस्सा.....। तब यहाँ अपने को बाग़ी कहने वाले ये हथियार बन्द जंगल, खनन व दूसरे ठेकेदारों से चौथ वसूलते थे । श्रवण शर्मा के नाम भी फ़रमान जारी हुआ था । श्रवण ने राय की और जवाब में लिखा-"यह काम किसी व्यावसायिक ठेकेदार का नहीं है,

गाँव और संस्था का साझा काम है। इस काम से न तो संस्था कुछ कमा कर ले जायेगी और न ही संस्था के कार्यकर्त्ताओं के हिस्से में कुछ आयेगा; बल्कि इससे तो गाँव के कुँओं में पानी ही लौटेगा, खेती के साधन ही बनेंगे।'' गाँव के लोगों ने भी समझाया कि यह तो गाँव का ही काम है और संस्था के कार्यकर्ता भी बहुत छोटी तनख्वाह वाले हैं। ये लोग तो गाँव का भला करने ही आये हैं। श्रवण शर्मा बताते हैं- ''हमें ताज्जुब हुआ यह जान कर कि बन्नू सैनी ने न केवल अपना फ़रमान वापस लिया, बल्कि हमें मदद करने का वादा भी किया। उसके बाद तो आये दिन ऐसे लोगों से मुलाकात हो जाती थी। लेकिन वे फिर कभी हमारा नुकसान नहीं करते थे। बाद में पता चला कि हमें किसी तरह का नुकासान नहीं पहुँचाने का फ़रमान भी अपने साथियों को बन्नू सैनी द्वारा दिया हुआ ही था। इसीलिए जिन्हें दूसरे लोग असामाजिक तत्व कहते हैं, उन्होंने कभी भी हमारे काम में बाधा नहीं पहुँचाई। हाँ, नये-नये आने वाले हथियार-बन्द शुरू-शुरू में जरूर हमें दखल करते रहे हैं।

संस्था के कामों से प्रेरणा ले कर कई हथियार-बन्द तो सामाजिक कार्यकर्ता भी बन चुके हैं और कुछ अपने घर परिवार को लौट गये हैं। लौटकर अपने

समाज में जाने के बाद, अब इन्हें इनका समाज भी अपना हीरो मानता है।'' ऐसे लोगों को अपना वर्तमान ही प्यारा है; अपने अतीत को वे भूल जाना चाहते है। हमारे लिए इतना ही काफ़ी है।

कर्ण सिंह का करिश्मा

कर्ण सिंह सवाई माधोपुर जिले की बामनवास तहसील के गाँव अमावरा का रहने वाला है। कर्ण सिंह से तरुण भारत संघ का सम्पर्क तभी हो गया था, जब कोचर की डाँग के सरपंच रामचन्द्र पोसवाल के बुलावे पर संस्था के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रवण शर्मा कोचर की डाँग में गये थे। कर्ण सिंह तब किशोर अवस्था में ही था। श्रवण शर्मा का सम्पर्क सबसे पहले कर्ण सिंह के बाबा श्रवण गुर्जर व पिता मूल चन्द गुर्जर से हुआ था। मूलचन्द गुर्जर के साथ मिल कर क्षेत्र में पानी का काम करते-करते श्रवण शर्मा और चमन सिंह ने कर्ण सिंह को भी पानी के काम के लिए जोड़ लिया था।

प्रारम्भ में कर्ण सिंह ने श्रवण शर्मा और चमन सिंह के साथ कोचर की डाँग और अमावरा क्षेत्र में काम किया। धीरे-धीरे जब पानी का काम बढ़ता चला गया तो सवाई माधोपुर के अन्य गाँवों में भी काम किया। बाद में वर्ष 1999 में छोटे लाल गुर्जर, गोवर्धन शर्मा और कर्ण सिंह ने करौली की डाँग में भी प्रवेश किया तब कुछ ही समय बाद छोटेलाल और गोवर्धन शर्मा तो यहाँ से चले गये, पर कर्णसिंह व चमनसिंह ने यहाँ पर पानी के कामों को आगे बढ़ाया।

पूछने पर कर्ण सिंह अपने अतीत को याद करते हुए कहता है-''मैं 1999 में करौली की डाँग में आया था। वहाँ मैं छोटेलाल गुर्जर व गोवर्धन शर्मा के साथ सबसे पहले 'कुर का मठ' में गया। मठ में यहाँ के मठाधीश महाराज राधेपुरी जी से मिला। राधेपुरी जी ने हमारा परिचय लिया और संस्था के कार्य, उद्देश्य ,कार्य-पद्धति व गतिविधियों आदि के बारे में भी विस्तृत जानकारी ली। हमने रात को उनके पास ही रुककर उन्हें सारी जानकारी दी। पानी व जंगल

बचाने के हमारे काम को सुन कर उनको बहुत अच्छा लगा । उन्होंने इस क्षेत्र में पानी के काम की बहुत ज्यादा आवश्यकता न सम्भावनाएँ बताईं । बाद में उन्होंने भी मठ के पास कुछ काम करवाए ।

इस क्षेत्र में हमारी रिश्तेदारी भी थी । यहाँ के प्रभु गुर्जर को साथ ले कर हमने आसपास के गाँवों में भ्रमण किया । भ्रमण के दौरान हम हटियाकी गाँव के कमल भगत जी व कल्याण गुर्जर से भी मिले । उनको साथ ले कर चौड़क्या का सार्वजनिक ताल गाँव के श्रमदान से बनवाना शुरू किया । हटियाकी गाँव में शिक्षा की कमी को देखते हुए गाँव के सहयोग से एक विद्यालय-भवन भी बनाया । यहाँ पर हमारा सम्पर्क खिजूरा गाँव के कल्याण बाबा से भी हो गया । कल्याण बाबा के आग्रह पर हम खिजूरा में भी गये और वहाँ गाँव की मीटिंग की। ग्रामवासियों के कहने पर हमने गाँव के सहयोग से यहाँ के 'मोरे वाले ताल' का काम शुरू कर दिया । लोगों के आग्रह पर हमने खिजूरा में ही अपना कार्यालय भी बना लिया । कार्यालय के लिए गाँव वालों ने हमें एक सामुदायिक भवन दे दिया । वहाँ रहकर हम आसपास के गाँवों में पानी के काम को बढ़ाने का काम करते रहे । रायबेली के बाबा कन्हैया लाल, हरिसिंह तथा अन्य लोगों के सहयोग से उनके गाँव में भी पानी के काफ़ी सारे काम किये । वीरमकी में अंगद गुर्जर, मोहर सिंह आदि के सहयोग से काम किये । राहर, दयारामपुरा, बन्धनपुरा आदि गाँवो में भी काम किये ।

तरुण भारत संघ के सानिध्य में हमने डाँग क्षेत्र के लगभग सभी गाँवों में पानी का काम बेहतर ढंग से किया है । तरुण भारत संघ के माध्यम से राजीव गाँधी फाउण्डेशन में रह कर भी हमने पानी के उसी काम को आगे बढ़ाने का काम किया तथा अब 'ग्राम-गौरव' के माध्यम से भी हम तरुण भारत संघ के द्वारा शुरू किये गये जल, जंगल और जमीन के काम को ही प्रोत्साहन दे रहे हैं ।''

कर्णसिंह डाँग क्षेत्र के अपने अनुभव को पुन: कुछ इस तरह बयान करते हैं- ''इस क्षेत्र में मीणा और गुर्जर अधिक हैं । मीणा और गुर्जर यहाँ भाईचारे के भाव से रहते रहे हैं, इसके बारे में पुराने जमाने की कई मिसालें आज भी जन-

मानस में रची-बसी हैं। वैसे आज भी इस क्षेत्र में इन दोनों समुदायों में इतना अलगाव नहीं है।

इस क्षेत्र के लोगों के संस्कार आज भी वैसे ही हैं, जैसे 'ब्रज' क्षेत्र में कभी रहे थे। यहाँ आगन्तुक अतिथि का सत्कार, दोनों हाथ जोड़कर करते हैं। घर पर आये अतिथि को भोजन कराये बिना नहीं जाने देते। यहाँ हर जीव पर दया का भाव है। शराब और मांसाहार का यहाँ के लोग पुरजोर विरोध करते हैं। यहाँ के लोग ब्रजभाषा और संस्कृत-हिन्दी से मिलीजुली भाषा का प्रयोग करते हैं। यहाँ के लोगों में आज भी कृतज्ञता-बोध विद्यमान है।

करौली शहर में बैठे लोगों को लगता होगा कि 'डाँग क्षेत्र' ऊँचे-नीचे पहाड़ों वाला रूखे-सूखे वातावरण वाला क्षेत्र होगा। जहाँ बन्धुवा जैसा जीवन जी रहे मजदूर अपने हाथों अपना उजड़ा हुआ जंगल देखते हुए रींछों की मार व हथियारबन्द लोगों को जबरन शरण देने की विवशता में पत्थर की खदानों में काम कर रहे होंगे। पर, ऐसा नहीं है। मैं अपने अन्य साथियों के साथ कृतसंकल्प होकर पानी का काम करता रहा हूँ। बहुत बार 'हथियार-बन्द' लोगों ने हमारा पीछा भी किया, पर हमारे काम के नि:स्वार्थ प्रभाव ने, न केवल उनको प्रभावित किया, बल्कि उन्हें प्रेरणा भी दी। हमारे काम की पूरी प्रक्रिया को समझ लेने के बाद हमें पानी के काम में उनका सहयोग भी मिलता रहा है।

महेश्वरा नदी जलागम क्षेत्र में किये गये तालाबों के काम हेतु लोगों को जोड़ना मुश्किल तो रहा; पर पूर्व में किये गये कार्यों के अच्छे प्रभाव ने संगठन के आड़े आई जटिलताओं को सहज कर दिया।

मुझे गर्व है कि मैंने अपने जीवन को सार्थक कार्यों में लगाया। मेरी सारी जवानी डाँग क्षेत्र व चम्बल के बीहड़ों में ही लगी है। लोगों की सक्रिय सहभागिता से निर्मित तालाब, पोखर व पगारों के कारण अविरल बहती हुई 'महेश्वरा नदी' को देखकर मेरा मन प्रफुल्लित हो उठता है। मैं अभी भी डाँग क्षेत्र में पानी के काम में पूर्ण रूप से लगा हुआ हूँ। इस काम से मुझे आत्म संतुष्टी मिलती है।"

छोटे लाल मीणा : संघर्ष से समाधान

संस्था के कार्यकर्ता छोटे लाल मीणा डाँग क्षेत्र का अपना अनुभव कुछ इस प्रकार बताते हैं – ''करौली जिले की 'डाँग' का नाम मैं बहुत दिनों से सुन

रहा था; शायद 2001 से । पर मुझे कभी उसे देखने का मौक़ा नहीं मिला था । उन्हीं दिनों मेरा सम्पर्क डाँग क्षेत्र के ही एक गाँव निभैरा के जगदीश गुर्जर से हो गया था । मैं जब उससे डाँग क्षेत्र के बारे में पूछता था तो वह अपने अन्दर का दर्द अपनी आँखों में उतारते हुए कहता था कि डाँग के बारे में मत पूछो; वहाँ की परिस्थितियाँ बड़ी विकट हैं । उसका दर्द सुन कर मुझे भी इस क्षेत्र को देखने की इच्छा होती थी; पर मौक़ा ही नहीं मिल पा रहा था । काफ़ी लम्बी प्रतीक्षा के बाद 2009 में मुझे डाँग क्षेत्र के खिजूरा गाँव में तरुण भारत संघ द्वारा आयोजित जल-कुम्भ में जाने का मौक़ा मिल गया । वहाँ जाने पर चारों तरफ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और जंगल ही जगंल दिखाई दिया । कहीं-कहीं छोटे-छोटे गाँव और छोटे-छोटे खेत भी दिखाई दिये । मैं वहाँ तीन दिन तक जल-कुम्भ में रहा और इसी दौरान महेश्वरा नदी को भी जाकर देखा । रास्ते में जगह-जगह बहते हुए पानी को देखा तो मन प्रसन्न हो गया। उस पहाड़ी क्षेत्र में बहते पानी को देख कर आश्चर्य भी हुआ कि यहाँ पहाड़ के ऊपर पत्थरों में भी पानी कैसे बह रहा है ? जबकि नीचे के मैदानी इलाकों में 200-300 फुट की गहराई तक भी पानी नहीं मिल पाता । महेश्वरा नदी को देख कर जब में वापस कुम्भ-स्थल पर गया तो वहाँ पर तरुण भारत संघ के स्थानीय कार्यालय में संस्था के द्वारा गाँव की सहभागिता से बनी जल-संरचनाओं की एक लम्बी सूची दीवार पर लगी देखी । बात समझ में आ गई; कि इन्हीं कार्यो की बदौलत यहाँ पर पानी बहता दिखाई दे रहा है ।

इसके बाद 2011 की 17 अप्रेल को मैं और कन्हैया लाल जी एक बार फिर डाँग क्षेत्र में 'नदी कूच यात्रा' की शुरूआत करने की पूर्व तैयारी हेतु गये । खिजूरा गाँव के जगदीश गुर्जर को साथ ले कर हम करणपुर गये; वहाँ के सरपंच व गाँव के अन्य लोगों से नदी कूच यात्रा के बारे में बातचीत हुई । उनको यात्रा

का उद्देश्य समझा कर; यात्रा में शामिल रहने की बात बता कर तथा यात्रा शुरू करने की तारीख निर्धारित कर के हम चम्बल नदी के किनारे पर चले गये। वहाँ हमने चम्बल के बहते हुए पानी में स्नान किया और वीरमकी गाँव में आ गये। गाँव में लोगों से यात्रा के सम्बन्ध में बातचीत की तथा यहाँ के बैरवा समाज के श्रम से व संस्था के सहयोग से बने हुए ताल 'सिद्ध सरोवर' को भी देखा। फूसो का ताल भी देखा। दोनों ही ताल पानी के लबालब भरे हुए थे।

इन तालों को देखकर व लोगों से यात्रा की चर्चा करके जब हम तीनों मोटर साईकिल से वापस खिजूरा की तरफ आ रहे थे, तो फूसो की ढाणी के पास ही हमें अचानक चार हथियार-बन्द मिल गये। उन्होंने हमारी मोटर साईकिल को इशारे से रुकवा लिया। हमें, 'काटो तो खून नहीं'। जैसे तैसे मोटर साईकिल खड़ी कर के हम उनके पास चले गये। उन्होंने हमारे साथी खिजूरा के जगदीश गुर्जर से पूछा कि ये लोग कौन हैं ? हमें यह भी कहा कि शाम को सात बजे घूमने का यह कौन-सा समय हैं ? जगदीश ने हमारे बारे में बताया। मैं और कन्हैयालाल जी हक्के-बक्के खड़े थे। इतने में ही पीछे से यहाँ के हरीराम जी आ गये, उन्होंने हमें इशारे से अपने पीछे-पीछे आने को कहा। मैं और कन्हैया लाल जी उनके पीछे-पीछे चल दिये। उनका घर पास में ही था। आधा-पौन घन्टे बाद जगदीश गुर्जर भी हमारे पास आ गया। उसने कहा कि अब हम यहाँ नहीं रुकेंगे। तब हम तीनों रात को ही खिजूरा में आ गये।

रात भर एक अज्ञात भय से आशंकित होते रहे। मन में विचार आता कि यहाँ काम करने की तो जरूरत है, पर हथियार-बन्दों से कैसे निपटा जाय ? इसी तरह की उधेड़-बुन के बीच निभैरा, वीरमकी, खिजूरा, रायबेली, मरम्दा, लखरूकी, अलबतकी व चौबेकी आदि गाँवों का दौरा भी किया; पर हथियार-बन्दों का साया मन को भयभीत करता रहा।

6 मई 2011 को मैंने कन्हैया लाल जी के साथ डाँग क्षेत्र के गाँवों से नदी कूच यात्रा शुरू की। खजूरा गाँव में एक बड़ी मीटिंग की। लोगों को बादलों की बूँदों को पकड़ कर धरती के पेट में बैठाने की बात कही। नदियों के प्रदूषण को

रोक कर अपनी ही मेहनत से पानी का काम करने को कहा । वहाँ से गाँव के लोगों के साथ रायबेली, लखरूकी, अलबतकी होते हुए हम खीछी पहुँचे । हर गाँव में हमने लोगों को वर्षा–जल को बचाने व जंगल को बचाने की बात कही । क्योंकि चट्टानी धरती होने के कारण यहाँ का पानी जमीन में नहीं बैठता; इसलिए जमीन के ऊपर एकत्र किया गया पानी ही खेती के काम आता है । नदी कूच यात्रा करते हुए हमारा यह यात्रा दल विभिन्न जलागम क्षेत्रों तथा विभिन्न जिलों को पार करता हुआ अन्त में 11 जून 2011 को यमुना–साबी नदी संगम पर दिल्ली में पहुँच गया । इस प्रकार 'नदी कूच' यात्रा का पहला चरण सम्पन्न हुआ।

बाद में एक बार भाई साहब राजेन्द्र सिंह जी ने मुझे डाँग क्षेत्र में जा कर पानी का काम करने को कहा । तारीख भी तय कर दी कि देव उठनी ग्यारस से वहाँ काम शुरू करना है । डाँग क्षेत्र का नाम सुनते ही मेरा दिल दहल उठा । मुझे 17 अप्रेल 2011 को हुई घटना की याद ताजा हो आई । दिमाग़ में चार हथियार–बन्दों से उस दिन हुई भेंट का दृश्य घूमने लगा । पर चूँकि पूर्व में मैं वहाँ के लोगों से रूबरू हो चुका था और वहाँ के काम की जरूरत को भी महूसस कर चुका था; इसलिए न चाहते हुए भी जाने का मन बना लिया । वहाँ आर.जी.एफ. में कार्य कर रहे हमारे पुराने साथी भी काम कर रहे थे; इस लिए उनके होने से भी मुझे हिम्मत मिल रही थी ।

6 नवम्बर 2011 देव उठनी एकादशी को मैं डाँग क्षेत्र में काम करने के लिए यहाँ से रवाना हो गया । रात को कैला देवी में रुका । दूसरे दिन खिजूरा गया । वहाँ पूर्व सरपंच रूप सिंह व मोहन से भेंट हुई । दो दिन बाद आर.जी.एफ. में कार्यरत पं. श्रवण जी शर्मा वहाँ आ गये । उनके साथ गाँव में मीटिंग की और पानी के कामों के प्रस्ताव लिए । खिजूरा के जगदीश गुर्जर को कार्यकर्ता के रूप में जोड़ा । अगले दो–तीन दिनों में प्रस्तावित साइटों का मौक़ा मुआयना किया।

आसपास के गाँवों में कामों की तैयारी कर के श्रमदान का प्रतिशत तय किया । कच्चे काम में एक तिहाई गाँव का श्रमदान व दो–तिहाई योगदान संस्था

का तथा पक्के काम में संस्था की तरफ से सीमेन्ट, कारीगर व पानी तथा शेष काम गाँव अथवा लाभार्थी द्वारा करना तय हुआ । सबसे पहले बन्धन का पुरा में काम शुरू हुए । उसके बाद पाटोर, वीरमकी, भोपारा, खिजूरा, खोर'न का पुरा, निभैरा व मरम्दा में भी काम शुरू हुए । सभी जगह पर काम सुचारू रूप से चल रहे थे । बन्धन का पुरा में एक ही नाले पर 6-7 जगह काम चल रहे थे । गाँव के लेाग जोश-ओ-खरोश से काम कर रहे थे ।

इसी काम के दौरान 26 जनवरी 2011 को संस्था से गोपाल सिंह जी और कन्हैया लाल जी काम देखने व भुगतान करने के लिए डाँग में मेरे पास गये। उन्होंने पाटोर, भोपारा व खोर'न का पुरा के काम देखे, बाद में बन्धन का पुरा भी गये । वहाँ पर करियारा की घेर में मूला की पोखर का काम चल रहा था । काम जे.सी.बी व ट्रैक्टरों से हो रहा था । खिजूरा गाँव का जगदीश वहाँ काम करवा रहा था । जब मैं, गोपाल सिंह जी, कन्हैयालाल जी और श्रवण जी वहाँ का काम देखने गये तो हमें वहाँ रहने वाले तीन मशूहर हथियार-बन्द मिल गये। वे जे.सी.बी. वालों से अपने खर्चे के पैसे वसूल करना चाह रहे थे । जैसे ही हम वहाँ पहुँचे तो वे हम से भी पैसा वसूलने हेतु दबाव बनाने लगे । उन्होंने हमसे 5000 रुपये देने को कहा । खिजूरा का जगदीश गुर्जर उन्हें समझा रहा था । श्रवण जी भी उन्हें समझाने लगे, पर वे लोग और ज्यादा दबाव दे रहे थे । गोपाल सिंह जी और कन्हैयालाल जी पेाखर का काम देख रहे थे, पर वे भी सशंकित थे; क्योंकि भुगतान-राशि बैग में साथ ही थी ।

हथियार-बन्द पैसे लेने हेतु हम पर दबाव बढ़ा रहे थे । जगदीश, श्रवण जी और मैंने उनसे कहा कि अभी तो हमारे पास पैसा है नहीं । तब गुस्से में आ कर उनमें से एक ने मेरा हाथ पकड़ कर 100 मीटर दूर ले गया और बुरी तरह से धमकी देने लगा। फिर तीनों ने मुझे बीच में बैठा कर कहा कि मीणा होकर गूजरों के गाँवों में नेता हुआ फिरता है। अपने आप को बड़ा होशियार समझता है न। 'मुझे काटो तो खून नहीं' । मैं बुरी तरह से भयभीत हो गया था ।

धमकी देकर वे फिर हम से पैसा माँगने लगे । उनमें से एक ने श्रवण जी और मुझ से कहा कि अगर अभी आपके पास पैसे नहीं हैं तो फिलहाल मैं देता

हूँ, पर एक हफ़्ते से पहले-पहले हमारे पास पैसा पहुँच जाना चाहिए; नहीं तो खैर नहीं होगी । यह कहकर उसने अपनी जेब से दो हजार रुपये निकाल कर वहाँ उपस्थित गाँव के एक लड़के को दे कर कहा कि तुरन्त अभी जा कर बाजार से इस पर्ची में लिखा सामान ले कर आ जा । यह कहकर उसने पर्ची उस के हाथ में थमा दी । वह लड़का तुरन्त मोटर साईकिल लेकर पर्ची में लिखा सामान लेने चला गया । हम लोग डरते-डरते धीरे-धीरे वहाँ से निकल लिए ।

बन्धन का पुरा का भुगतान कर के हम 'कैला देवी' आये । वहाँ से गोपाल सिंह जी और कन्हैयालाल जी तो भीकमपुरा चले गये तथा मैं और श्रवण जी भुगतान हेतु वहीं रुक गये । दूसरे दिन खिजूरा पहुँच कर हमने बक़ाया भुगतान के लिए लोगों को खिजूरा में ही बुलाकर भुगतान किया ।

इस प्रकार महेश्वरा नदी जलागम क्षेत्र में पानी का काम करने के मार्ग में तरह-तरह की समस्याएँ आती रहीं, परन्तु संघर्ष से समाधान के रास्ते खुलते ही चले गये । पानी का काम तेजी से बढ़ता चला गया । वर्ष 2011-12 में इस क्षेत्र में लगभग 20-22 नई जल-संरचनाओं का निर्माण और हो गया। सबसे ज्यादा संरचनाएँ बन्धन का पुरा में 'ओंडा खार का नाला' में बनाई गईं । इस तीन-चार किलोमीटर लम्बे नाले में ही इस वर्ष लगभग 8-10 पगारे बनाये गये। इन पगारों के बन जाने से अब यहाँ हजारों मन गेहूँ की पैदावार होने लग गई है।

डाँग क्षेत्र में रींछों का भी बड़ा आतंक है । एक बार हमारे देखते-देखते रखवाली करने जा रहे एक नौजवान को रींछ ने पकड़ लिया था । रींछ ने उसको बुरी तरह से घायल कर दिया । वह बेहोश हो गया । रींछ ने उसको जगह-जगह से नोंच लिया था । उसकी तरफ देखा नहीं जा रहा था । हमने तुरन्त एक जीप से उसे सपोटरा के अस्पताल में पहुँचाया । उस दिन मैं रींछ द्वारा उस नौजवान की दयनीय हालत देख लेने के कारण पूरी रात भर सो नहीं सका । इस प्रकार यहाँ रींछ व हथियार-बन्द दोनों का खौफ़ तो है; पर ऐसी परिस्थितियों में भी पानी के काम करने की तो सख्त जरूरत है ही ।

यहाँ इतना सब कुछ होते हुए भी यह महसूस किया गया कि हथियार-

बन्द लोग यहाँ के ग्रामीणों को बिल्कुल परेशान नहीं करते, बल्कि गरीब लोगों का तो वे सहयोग ही करते हैं। ये लोग गाँव की बहू-बेटियों को भी बुरी नज़र से नहीं देखते , बल्कि उनकी मदद ही करते हैं। हथियार-बन्दों का एक उसूल पक्का है कि अपनी मुखबरी करने वाले को ये कतई नहीं बख्शते। पर कुछ भी कहो, ये लोग पानी के काम को तो बेहद प्यार करते हैं। ऐसे ही कुछ लोगों ने तो अब बन्दूक को छोड़ कर हाथ में फावड़ा पकड़ लिया है और अब हमारे साथ समाज का काम करने लगे हैं।''

महिलाएँ भी आगे आईं

वर्ष 2003 में तरुण भारत संघ के कार्यालय भीकमपुरा में एक महिला सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन में राजस्थान के लगभग हर जिले से महिला कार्यकर्ता आई थीं। ये अपने साथ ऐसी साथिनों को भी लाईं थीं; जिन्होंने अपने गाँव से बाहर की दुनिया को ठीक से कभी देखा भी नहीं था। इन्हें तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता चमन सिंह बड़ी कोशिश से सम्मेलन में ले आये थे। ये आपस में तो खूब बोलतीं थीं; लेकिन हजार महिलाओं की भीड़ के सामने मंच पर खड़े हो कर बोलने का नम्बर जब आया, तो चुप्पी साध ली। आँखों से झर-झर कर के जो आँसू बहे, उन्होंने ही डाँग की महिलाओं के दर्द को सबके सामने उँडेल दिया।

जब तक ये महिलाएँ डाँग में वापस नहीं लौटीं इनके घर वालों का जी, एक अज्ञात भय से ऊपर-नीचे होता रहा। आख़िरकार डाँग की कोई बेटी.....कोई बहू, पहली बार इतनी दूर..... वह भी गैर मर्दो के साथ गई थी। जब ये वापस लौटीं, तब ही घर वालों की साँस में साँस आई।

डाँग की महिलाएँ सम्मेलन से कुछ हासिल कर के लौटी थीं। उन्होंने सम्मेलन में कुछ गुर सीखे थे। 'महिला मण्डल' क्या होता है? छोटी-छोटी बचत कैसे तरक्की के रास्ते खोलती है? बालिका शिक्षा का क्या महत्त्व है? आदि। पानी के काम में तो महिलाओं की भागीदारी पहले से ही अग्रणी रही है। दरअसल डाँग तक पानी ले जाने का कष्ट तो औरत के सिर पर ही था। मवेशियों के चारे-पानी का इंतजाम भी इन्हें ही करना पड़ता है। अतः नजदीक से नजदीक पानी हासिल करने की ललक भी औरतों में ही मर्दों से ज्यादा होना स्वाभाविक है। महिला संगठन की ताकत सामने आई। पहली बार ग्राम-पंचायत के चुनावों में इनकी भी बात सुनी गई। इनकी माँग पर ही डाँग में पहली बार हैण्डपम्प लगे थे।

पानी का काम तो इनका सबसे प्यारा था ही, सो अपने-अपने गाँवों में भी इन्होंने पर्याप्त ताल, पोखरे, मेड़बन्दियाँ और पगारे बनाये। उन्हीं का नतीजा है कि खरीफ़ के मौसम में बाजरा की जगह अब धान की अच्छी फ़सल होती है और रबी की फ़सल में अब गेहूँ व सरसों भी पैदा होने लगे हैं। जबकि पहले पानी के अभाव में रबी के मौसम में कुछ भी पैदा नहीं होता था। अब तो ये फल व सब्जी की तीसरी फ़सल भी करने लगी हैं। डाँग की महिलाएँ अपने ही श्रम, शक्ति व समझ से अब अपने आपको भरपूर पाती हैं। अब ये बहुत खुश हैं।

सवाई माधोपुर व करौली के विस्तृत डाँग क्षेत्र में महिला-चेतना व महिला सशक्तिकरण के लिए तन-मन से काम करने वाली छोटी दरबी और नर्बदा का काम तो सर्व विदित है ही। इन तीनों बहिनों को विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है। दिल्ली की प्रसिद्ध लेखिका 'नीलम गुप्ता' ने 'छोटी, दरबी और नर्बदा' नामक पुस्तक में इनका सविस्तार वर्णन किया है।

डाँग का न्याय

डाँगवासी कहते हैं कि कोई कुछ भी कहे, डाँग कभी अन्याय नहीं करता। डाँग के जंगल, नदी और पहाड़ों ने इन्हें यही सिखाया है। लम्बे अरसे तक यहाँ सरकार नाम की कोई चीज नहीं थी। यहाँ का पंच ही यहाँ का परमेश्वर था सरकारी पंचायत वाला चुना हुआ पंच नहीं, बल्कि वह आदमी जिसकी बात गाँव के लिए सर्वमान्य होती थी।

तरुण भारत संघ के साथी जगदीश गुर्जर न्याय की एक छोटी-सी मिसाल पेश करते हैं। एक बार रायबेली (मथुरा की) नामक गाँव के दो भाईयों के बेटों में आपसी हिसाब-किताब को लेकर विवाद हो गया था, पर किसी तरह से शान्त होकर वे अपने-अपने घर चले गये। कुछ समय बाद उन दोनों बेटों की माँएँ आपस में झगड़ने लगीं। तब वे दोनों बेटे भी फिर से लड़ने लगे। लड़ाई के दौरान इनमें से एक मारा गया। फलस्वरूप न्याय के लिए पंचायत बैठी। 12 गाँवों के गुर्जर और मीणा इकट्ठे हुए। हत्या के दोषी को पेश किया गया। इसी बीच पुलिस आ पहुँची, लेकिन उस दोषी को पुलिस के हाथों तब तक नहीं सौंपा गया, जब तक पंचायत ने अपना फैसला नहीं सुना दिया। फैसला था- हत्या के दौषी को 12 गाँव निकाला। 12 गाँवों में उसके प्रवेश पर रोक लगाई गई, उसे निष्कासित कर दिया गया। साथ ही उन 12 गाँवों के बाशिदों को सख्त हिदायत दी गई कि इन गाँवों का कोई भी बाशिन्दा उसके साथ रिश्ता-नाता, बातचीत अथवा किसी भी प्रकार का व्यवहार क़ायम नहीं करेगा। आज भी वह इन 12 गाँवों से निष्कासित ही है। आज भी पुलिस प्रशासन की थोड़ी बहुत पैठ भले ही दिखाई देती हो, लेकिन डाँग में आपसी झगड़ों और शिकायतों का फैसला कारस देव के मेले में ही होता है। कारस देव का मेला डाँग के लिए न्याय का प्रतीक बन गया है। इसीलिए कारस देव के सामने कोई भी झूठ नहीं बोलता।

यद्यपि प्राचीन काल से ही हमारे देश में सभी जगह सामाजिक न्याय-प्रणाली व न्याय-पंचायतों को राजकीय न्याय-व्यवस्था से ऊँचा दर्जा दिया

गया है, लेकिन आदिवासी क्षेत्रों में तथा किसान व पशु-पालक वर्गों में ही इसका प्रचलन ज्यादा समय तक टिका रहा। डाँग क्षेत्र में तो इस प्राचीन व्यवस्था का स्वरूप आज भी देखा जा सकता है। डाँग क्षेत्र राजस्थान के बाहर भी स्थित हैं, जहाँ आज भी न्याय-व्यवस्था अपने परम्परागत रिवाजों के आधार पर ही चलती है। ऐसा ही एक उदाहरण है गुजरात के पंचमहाल जिले की डाँग का।

एक डाँग क्षेत्र ऐसा भी

गुजरात में सूरत से 125 किलोमीटर दूर पंचमहाल जिले के 22 गाँवों में सतिपति सम्प्रदाय के आदिवासी लोग बसे हुए हैं। यहाँ के मुखिया हैं कुँ. रवीन्द्र सिंह। 55 वर्षीय श्री रवीन्द्र सिंह ही आजादी के बाद इस इलाके की सरकार हैं। उनकी अपनी मुहर है, वह मुहर इनके इलाके के जिस भी कागज पर लग जाती है, वही कागज वहाँ के लिए सरकारी दस्तावेज हो जाता है।

कुँ. रवीन्द्र सिंह के पूर्वजों ने वहाँ पर राज किया था। उन्हीं का वंशज होने के कारण गाँव वाले अभी भी रवीन्द्र सिंह को ही अपना राजा मानते हैं। उन्होंने कुछ कानून-क़ायदे बना लिये हैं, जिनसे लोगों की सभी जरूरतें पूरी हो जाती हैं। बाहरी व्यवस्था की जरूरत नहीं पड़ती। गाँव वालों के मुताबिक अन्तिम निर्णय इनके मुखिया (कुँ. रवीन्द्र सिंह) का ही माना जाता है। समाज शास्त्री डा. किरण देशाई कहते हैं कि यह पूरा मामला लोगों की मान्यता से जुड़ा हुआ है। इनके खिलाफ कोई भी कानूनी कार्रवाई इसलिए नहीं हो पाती, क्योंकि ये कभी भी किसी भी प्रकार के अपराध में लिप्त ही नहीं होते।

सरकारी सुविधाओं और टैक्स के बारे में इनका कहना है कि सरकारी सुविधाओं का न तो लोगों को कोई फ़ायदा है और न ही वे उन पर आश्रित हैं। सरकार चाहे तो हमारे इलाके में दी गई सुविधाओं को हटा ले। सरकार ने कुछ पानी की टंकियाँ बनावाईं थीं, जो अब बेकार हो गई हैं। एक सामुदायिक केन्द्र है, जिसमें अस्पताल है; लेकिन डॉक्टर वहाँ कभी-कभार ही दिखाई देता है। सरकारी स्कूल में भी ताला ही लगा हुआ है, क्यों कि लोगों की रुचि पढ़ाई में है ही नहीं। वे अपनी खेती में ही खुश हैं। इसीलिए वे न तो किसी को वोट देना

चाहते हैं और न ही किसी को टैक्स । किसी व्यक्ति को यदि समुदाय से बाहर भी जाना हो, तो वह जा सकता है । उसे रोकने हेतु दबाव नहीं बनाते । कुँ रवीन्द्र सिंह के भतीजा राजेन्द्र सिंह कटचवाण गाँव से भाजपा के टिकट पर संरपच रह चुके हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें समाज (समुदाय) से बाहर होना पड़ा ।

गुजरात में पंचमहाल जिले के डाँग क्षेत्र के जिन 22 गाँवों के लोग इस व्यवस्था को मानते हैं; उनके नाम ये हैं-

धर्मपुर, वासंदा, कपराड़ा, पाहवा, सेलवास, दिव, दमण, वापी, उछल्ल, नीग्र, कालोड़, ब्यारा, माँडवी, बाड़ौली, कामरेग, फलसाणा, राजपीपला, छोटा उदेपुर, वारदा, धुलदा, सति और सोनगिर ।

***

हमारा संकल्प

पानी जहाँ दौड़ता है, वहाँ इसे चलना सिखाना है ।
जहाँ रेंगने लगे, वहाँ इसे ठहराना है ।
जहाँ ठहर जाये, वहाँ धरती पर बैठाना है ।
ताकि नज़र न लगे सूरज की
और जब कभी सूखा और अकाल आए
तो मर्यादित होकर इसी जल से, जीवन चलाना है ।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

नीमड़ीवारी पोखर (हरेता की पोखर) ग्राम – पाटोर

कारस का एनीकट (ब्रजलाल का) ग्राम – बन्धन का पुरा

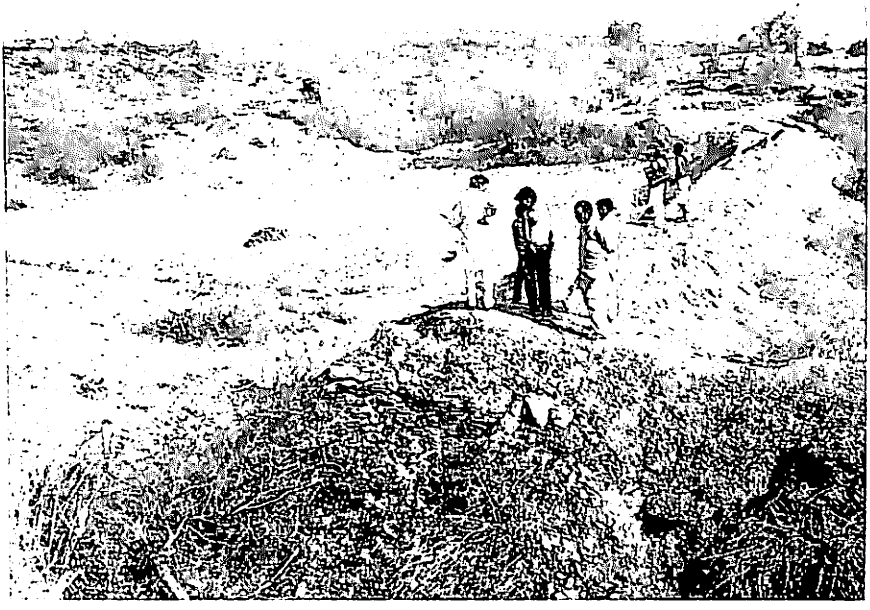

बरसात से पूर्व खेरेवारी पोखर (भरतू की पोखर) ग्राम – मरम्दा

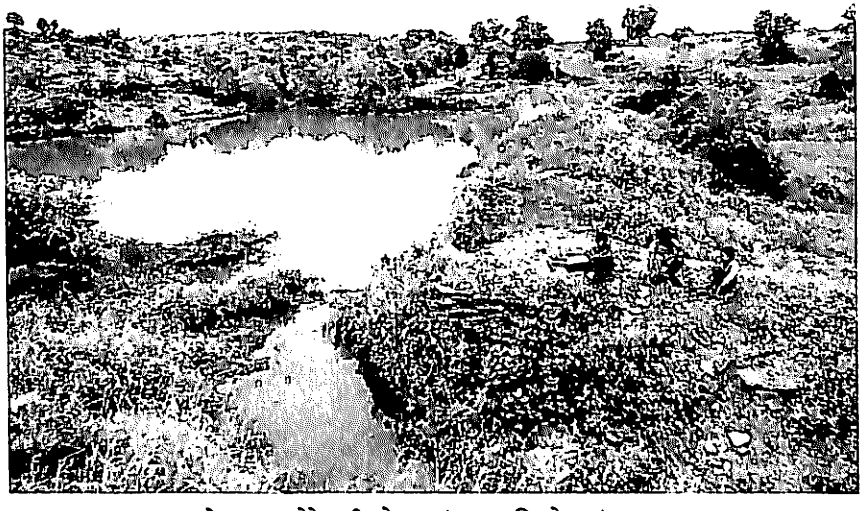

बरसात के बाद खेरेवारी पोखर (भरतू की पोखर) ग्राम – मरम्दा

महेश्वरा नदी जलागम क्षेत्र में निर्मित जल–संरक्षण–संरचनाएँ एवं उनकी भौगोलिक स्थिति (वर्ष 1985 से मार्च 2013 तक)

क्र. सं.	जोहड़/बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
1	दिनेश, बत्तीलाल व कमलेश की मेड़बन्दी	राहर	26	16	12.48	77	00	58.50
2	दिनेश, बत्तीलाल व कमलेश की पोखर (बाढ़ई वारी पोखर)	राहर	26	16	12.84	77	01	00.24
3	नई तुर वारी पोखर (गणपत मीणा की पोखर)	राहर	26	16	02.04	77	01	00.78
4	रामकेश/पुत्र/गणपत की मेड़बन्दी–1	राहर	26	16	02.82	77	00	58.62
5	रामकेश/पुत्र/गणपत की मेड़बन्दी–2	राहर	26	16	03.36	77	00	57.00
6	धुम्मी वारी पोखर (किरोड़ी की पोखर) पीपर वारी पोखर	राहर	26	15	41.76	77	01	04.56
7	खदना वारी पोखर (परम सुख की पोखर)	दयारामपुरा	26	13	33.78	77	01	11.64
8	पीपर वारी पोखर	दयारामपुरा	26	13	26.52	77	00	57.36
9	नास वारी पोखर (गोविन्द शर्मा की पोखर)	दयारामपुरा	26	13	28.86	77	00	43.08
10	रमेश व महेश का पोखरा (फूटेन का पोखर)	दयारामपुरा	26	13	19.68	77	00	49.68
11	बमूर वारी पोखर (विशन व कल्याण की पोखर)	दयारामपुरा	26	13	12.24	77	01	11.82
12	डंगारों का पोखरा (हरि चरण शर्मा का पोखरा)	दयारामपुरा	26	13	02.40	77	00	59.64
13	बड़ी घेर की पोखर (प्रकाश बैरवा की पोखर)	दयारामपुरा	26	12	58.08	77	00	55.98
14	डैंवरा'न वारी पोखर (छोटे लाल बैरवा की पोखर)	दयारामपुरा	26	12	57.24	77	00	48.00
15	इमाम वारी घेर का पोखरा–1 (रमेश व महेश का पोखरा)	दयारामपुरा	26	12	40.32	77	00	44.88
16	इमाम वारी घेर का पोखरा–2 (रमेश, महेश व कमलेश का पोखरा)	दयारामपुरा	26	12	35.94	77	00	42.24
17	लसारे वारी पोखर (रामदयाल, जगदीश, मोहर सिंह, पीतम व नवल की पोखर)	वीरम की	26	13	28.50	76	57	22.38
18	कंचन वारी घेर की पोखर (केदार की पोखर)	वीरम की	26	13	24.30	76	57	13.80
19	हजारी की मेड़बन्दी	वीरम की	26	13	30.30	76	57	03.12
20	सिद्ध सागर (ताल)	वीरम की	26	13	08.28	76	56	23.76
21	घेर की पोखर	वीरम की	26	13	27.78	76	56	35.58 फ
22	रामजीलाल की पोखर	वीरम की	26	13	38.64	76	56	42.18
23	रिच्दा वारा ताल	वीरम की	26	13	37.98	76	56	40.02
24	केशूला वारा पगारा (दीन गुर्जर का)	वीरम की	26	13	31.02	76	55	58.02
25	जूजवारी घेर की पोखर (हरि, रामप्रसाद, गिर्राज, धर्मसिंह व उम्मेद सिंह की पोखर	वीरम की	26	13	53.88	76	56	20.82
26	हरि सिंह की मेड़बन्दी (आम–महुआ की घेर में – लसारे वारी ढाव में)	रायवेली	26	15	25.86	76	56	29.28
27	अतरू का पगारा (आम–महुआ की घेर में)	रायवेली	26	15	26.10	76	56	22.50
28	भटेला की मेड़बन्दी (राम चरण का पगारा)	रायवेली	26	15	25.32	76	56	15.42
29	कैमला वारी पोखर (परसादी गोठिया की पोखर)	रायवेली	26	15	14.58	76	56	14.04
30	परा'न की पोखर	रायवेली	26	15	01.98	76	56	01.02
31	खार का पगारा (रामसिंह का पगारा)	रायवेली	26	15	06.42	76	55	54.60
32	हरि सिंह का पगारा (खार की घेर में)	रायवेली	26	15	08.46	76	55	56.70
33	मूसे वारी पोखर (कन्हैया लाल गुर्जर की पोखर)	रायवेली	26	15	17.22	76	55	47.58
34	बाढ़ई वारी पोखर (बगरूप, नरसी व जगदीश की पोखर)	रायवेली	26	15	21.30	76	55	47.34
35	नरसी व जगदीश की पोखर (पार्वती वारे घेर में)	रायवेली	26	15	28.80	76	55	59.76
36	जगरूप, नरसी व जगदीश की पोखर (पार्वती वारे घेर में)	रायवेली	26	15	31.32	76	55	59.34
37	छैंड वारा ताल (सार्वजनिक)	रायवेली	26	15	31.68	76	55	37.92
38	नीमड़ी वारी पोखर (हरेता की पोखर)	पाटोर	26	15	19.68	76	55	15.42

क्र. सं.	जोहड़/बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
39	साँख वारी पोखर (धर्म सिंह की पोखर)	रायवेली	26	15	16.80	76	55	30.78
40	गणपत की मेड़बन्दी	रायवेली	26	15	08.16	76	55	26.10
41	उड़न वारी पोखर (हरेत वगैरह की)	रायवेली	26	15	05.58	76	55	15.72
42	नवल की मेड़बन्दी	रायवेली	26	15	01.62	76	55	31.44
43	नवल की पोखर	रायवेली	26	14	58.92	76	55	32.04
44	जगदीश की मेड़बन्दी-1	रायवेली	26	14	53.82	76	55	22.32
45	जगदीश की मेड़बन्दी-2	रायवेली	26	14	53.04	76	55	22.26
46	जोत का ताल (गूजरा व अतरू का)	रायवेली	26	14	51.18	76	55	25.62
47	इनाम वारी पोखर-1 (प्रेम व लक्ष्मी की)	रायवेली	26	14	51.12	76	55	36.30
48	इनाम वारी पोखर-2 (प्रेम व लक्ष्मी की)	रायवेली	26	14	47.64	76	55	40.50
49	प्रभु, गिर्राज, धर्म सिंह, गिरधारी, हजारी, जगदीश व रघुवीर की पोखर (खेरे वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	43.02	76	55	47.46
50	गिरधारी, हजारी, जगदीश व रघुवीर की पोखर (खेरे वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	39.24	76	55	49.02
51	शिव चरण की पोखर (खेरे वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	39.24	76	55	56.76
52	राम चरण व प्रभु की मेड़बन्दी-1 (खेरे वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	44.64	76	55	57.84
53	राम चरण व प्रभु की मेड़बन्दी-2 (खेरे वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	45.42	76	55	58.74
54	कूरी का पगारा (गिरधारी, हजारी, जगदीश व रघुवीर का)	खिजूरा	26	14	44.40	76	56	10.86
55	गिरधारी, हजारी, जगदीश व रघुवीर की मेड़बन्दी (कूरी के घेर में)	खिजूरा	26	14	37.20	76	56	05.28
56	रामदयाल मेहता का पगारा (पेटू के घेर में)	खिजूरा	26	14	29.52	76	55	45.06
57	दिनेश की मेड़बन्दी-1(बर वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	23.94	76	55	48.78
58	दिनेश की मेड़बन्दी-2(बर वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	22.26	76	55	49.32
59	रमेश की मेड़बन्दी (बर वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	19.02	76	55	51.54
60	दतारी का पगारा (रूप सिंह सरपंच का)	खिजूरा	26	14	13.32	76	55	45.12
61	रैट का पगारा (परसादी का पगारा)	खिजूरा	26	14	08.88	76	55	39.96
62	गोरदी'न की पोखर (सार्वजनिक)	खिजूरा	26	14	02.64	76	55	24.54
63	गोरदी'न की पोखर (रामचरण व प्रभु की)	खिजूरा	26	14	06.00	76	55	13.32
64	झील'न का पोखरा (देवनारायण, परसादी व कल्याण का पोखरा)	खिजूरा	26	14	19.92	76	55	23.52
65	विश्वम्भर मास्टर की मेड़बन्दी (बाजरे की धड़ में)	खिजूरा	26	14	19.62	76	55	17.70
66	रामदयाल की मेड़बन्दी (बाजरे की धड़ में)	खिजूरा	26	14	18.30	76	55	16.14
67	रामसिंह व रूप सिंह की मेड़बन्दी (बाजरे की धड़ में)	खिजूरा	26	14	20.52	76	55	16.02
68	ढाब'न की पोखर (मंगल व हरिचरण की)	खिजूरा	26	14	22.80	76	55	13.62
69	रामस्वरूप की मेड़बन्दी (ढाब'न की किरया में)	खिजूरा	26	14	23.88	76	55	15.72
70	बद्धू का ताल (केदार, कर्ण, हरि व हरेत का)	खिजूरा	26	14	27.18	76	55	07.20
71	केदार का पगारा (बबूर वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	27.48	76	55	22.26
72	हरेत का पगारा (बबूर वारी घेर में)	खिजूरा	26	14	28.56	76	55	20.94
73	हरकेश का पगारा (गुर्जन की घेर में)	खिजूरा	26	14	32.52	76	55	31.44
74	हरि सिंह/पुत्र/रामजीलाल भोपा की पोखर (गुर्जन की घेर में)	खिजूरा	26	14	33.90	76	55	30.90
75	हरि सिंह/पुत्र/रामजीलाल भोपा की मेड़बन्दी (गुर्जन की घेर में)	खिजूरा	26	14	37.44	76	55	25.08
76	रामजीलाल भोपा की पोखर (गुर्जन की घेर में)	खिजूरा	26	14	39.12	76	55	26.70
77	हरिचरण, रामचरण व रामस्वरूप का पोखरा (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	43.98	76	55	22.02
78	रामचरण का पगारा (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	41.70	76	55	18.78
79	बाजरे के घेर की पोखर (मंगल की पोखर) ऑफिस के पीछे	खिजूरा	26	14	37.86	76	55	17.76
81	बाजरे के घेर की पोखर (देवनारायण, कल्याण व परसादी की)	खिजूरा	26	14	40.26	76	55	12.84
81	इमरती/पत्नी/द्वारका की मेड़बन्दी (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	43.92	76	55	15.90

क्र. सं.	जोहड़/बाँध का नाम	गाँव का नाम	उत्तरी अक्षांश			पूर्वी देशान्तर		
			डिग्री	मिनट	सैकण्ड	डिग्री	मिनट	सैकण्ड
82	हरि सिंह/पुत्र/मूला की मेड़बन्दी (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	44.34	76	55	17.16
83	हरेत की मेड़बन्दी-1 (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	44.10	76	55	18.24
84	हरेत की मेड़बन्दी-2 (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	45.18	76	55	18.96
85	हरेत की पोखर (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	46.74	76	55	19.32
86	कर्ण की पोखर (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	47.22	76	55	17.82
87	नारायण का पगारा (बाजरे की घेर में)	खिजूरा	26	14	45.96	76	55	16.20
88	चौक वारी पोखर (देवनारायण, कल्याण व परसादी की)	खिजूरा	26	14	49.56	76	55	11.88
89	रमेश व दिनेश की मेड़बन्दी (मोरे वारे ताल के नीचे)	खिजूरा	26	14	41.34	76	54	59.22
90	परसादी का पोखरा-1 (मोरे वारे ताल के नीचे)	खिजूरा	26	14	37.68	76	54	57.72
91	परसादी का पोखरा-2 (मोरे वारे ताल के नीचे)	खिजूरा	26	14	36.66	76	54	55.74
92	मोरे वारा ताल (सार्वजनिक)	खिजूरा	26	14	36.72	76	54	52.02
93	रामस्वरूप की मेड़बन्दी (चीमारे की घेर में)	खिजूरा	26	14	21.18	76	54	45.54
94	हरिचरण की मेडबन्दी (चीमारे की घेर में)	खिजूरा	26	14	20.34	76	54	43.26
95	सूअर-खोदा की पोखर (हरिचरण व रामस्वरूप की)	खिजूरा	26	14	17.76	76	54	45.12
96	रामकर्ण, गणपत, चिम्मन, चिरंजी व हरिगिलास की मेडबन्दी-1 (वाहरा में)	खिजूरा	26	14	03.72	76	54	27.60
97	रामकर्ण, गणपत, चिम्मन, चिरंजी व हरिगिलास की मेडबन्दी-2 (वाहरा में)	खिजूरा	26	14	02.88	76	54	27.78
98	शिव चरण रामकर्ण, गणपत, चिम्मन, चिरंजी व हरिगिलास की पोखर (वाहरा में)	खिजूरा	26	14	01.26	76	54	27.60
99	करियारा का पगारा (कमल गुर्जर का पगारा)	बन्धन का पुरा	26	13	54.12	76	55	13.74
100	करियारा की पोखर (मूला की पोखर)	बन्धन का पुरा	26	13	41.52	76	55	02.28
101	सुमेरा का पगारा (रघुवीर का पगारा)	बन्धन का पुरा	26	13	38.76	76	55	07.80
102	ऊँडा खार का पगारा (बीरबल का पगारा)	बन्धन का पुरा	26	13	29.76	76	55	00.42
103	खरणी वारा पगारा (प्रीतम का पगारा)	बन्धन का पुरा	26	13	24.90	76	54	55.50
104	सिरे का पगारा (रामावतार का पगारा)	बन्धन का पुरा	26	13	19.80	76	54	46.38
105	मैराज वारा पगारा (प्रभु का पगारा)	बन्धन का पुरा	26	12	22.02	76	55	09.00
106	कारस का एनीकट (ब्रजलाल का)	बन्धन का पुरा	26	12	36.72	76	54	28.56
107	बाजरे के घेर की पोखर (राम सिंह की पोखर)	बन्धन का पुरा	26	12	27.00	76	54	28.02
	जलागम क्षेत्र से बाहर के कार्य							
108	मोती/पुत्र/हजारी की पोखर	बन्धन पुरा	26	12	38.04	76	54	04.44
109	मोती/पुत्र/हजारी की मेड़बन्दी	बन्धन पुरा	26	12	36.18	76	54	04.14
110	पतारी का पगारा (रामजीलाल गोठिया का)	बन्धन पुरा	26	12	24.54	76	53	58.44
111	जोगारी की पोखर (शिम्भू गुर्जर की)	भट्टीन का पुरा	26	11	53.76	76	54	25.56
112	गुरया'न की पोखर-1 (प्रभु गुर्जर की)	निभेरा	26	11	51.18	76	53	08.76
113	गुरया'न की पोखर-2 (प्रभु गुर्जर की)	निभेरा	26	11	52.68	76	53	10.68
114	खारोर की पोखर (सरदारा गुर्जर की)	खोर'न का पुरा	26	15	07.50	76	54	10.02
115	पीपर वारा पगारा (भरतू गुर्जर का)	भोपारा	26	15	24.00	76	54	13.02
116	बाजरे की घेर का पगारा (राम सिंह का)	पाटोर	26	15	32.22	76	54	46.14
117	खेरे वारी पोखर (भरतू की पोखर)	मरमदा	26	16	13.08	76	53	54.7

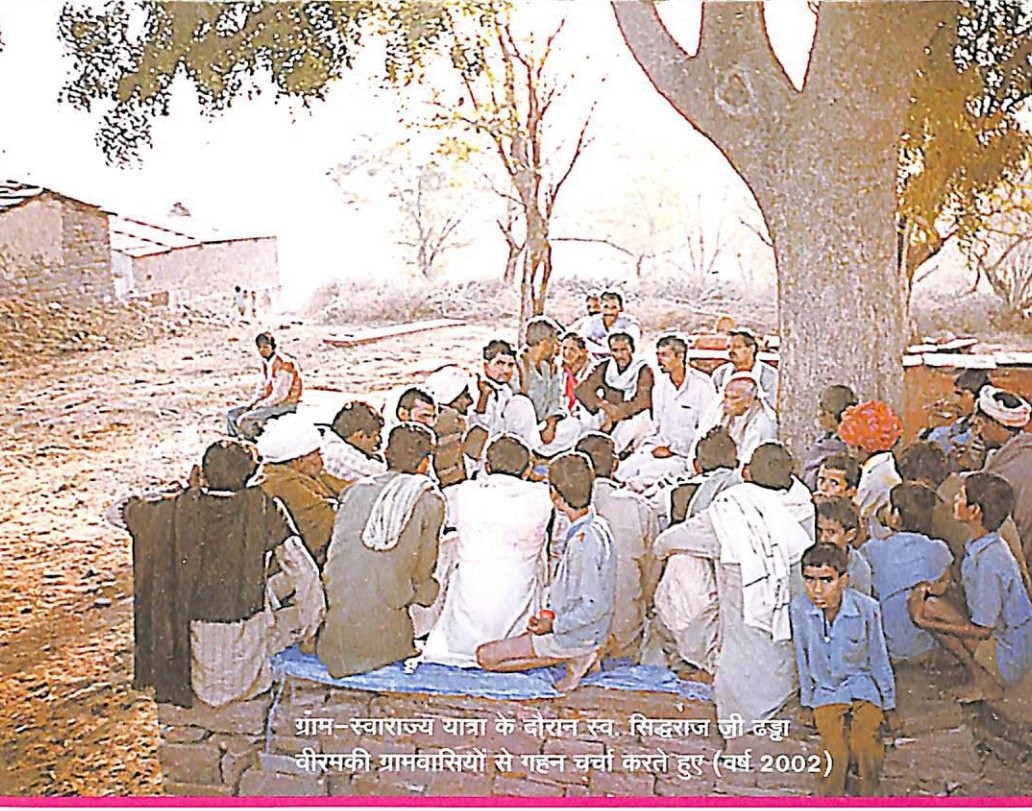

ग्राम-स्वाराज्य यात्रा के दौरान स्व. सिद्धराज जी ढड्ढा वीरमकी ग्रामवासियों से गहन चर्चा करते हुए (वर्ष 2002)

सिद्ध सरोवर (ग्राम-वीरमकी)

मोरे वाला ताल (ग्राम-खिजूरा)

मोरे वाला ताल की अपरा बहते हुए

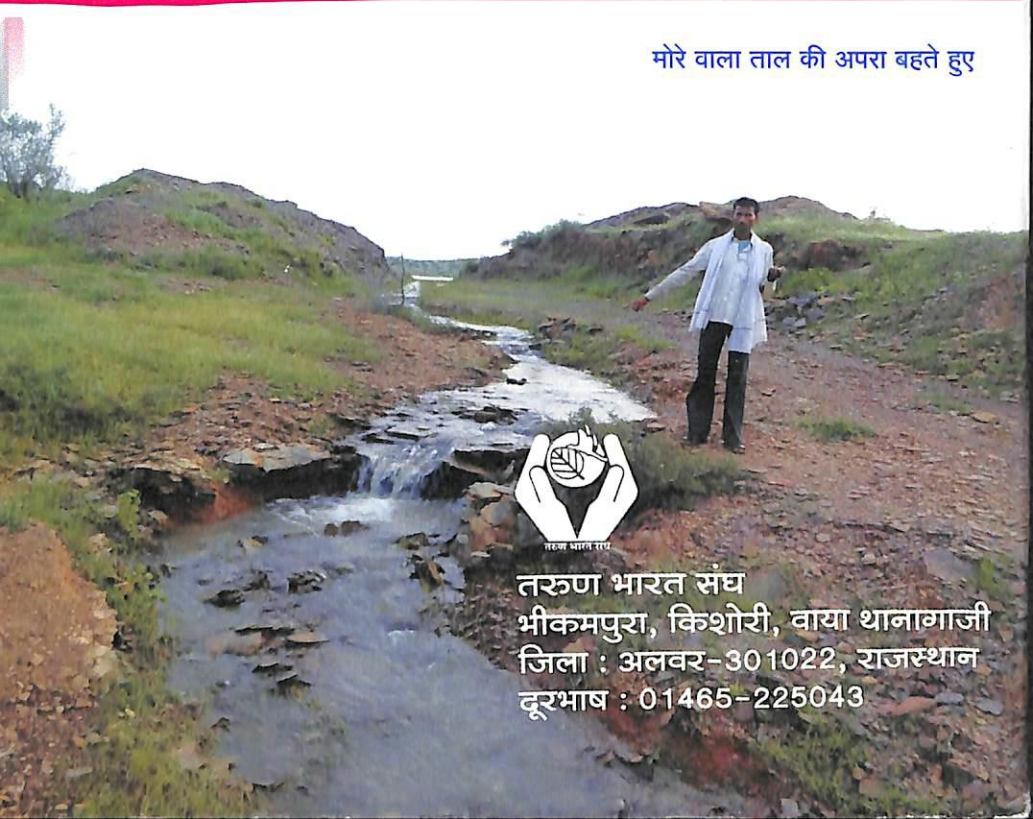

तरुण भारत संघ
भीकमपुरा, किशोरी, वाया थानागाजी
जिला : अलवर-301022, राजस्थान
दूरभाष : 01465-225043